श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर
की
स्थायी प्रवृत्तियाँ

1. श्री सुमति नाथ भगवान का मदिर, घी वालो का रास्ता, जयपुर
2. श्री सीमधर स्वामी का मदिर, पाँच भाइयो की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर
3. श्री ऋषभदेव स्वामी तीर्थ, ग्राम वरखेडा (जिला जयपुर)।
4. श्री शातिनाथ स्वामी का मदिर, ग्राम चन्दलाई (जिला जयपुर)
5. श्री जैन चित्रकला दीर्घा एव भगवान महावीर के जीवन चरित्र-भित्ति चित्रो मे (सुमतिनाथ भगवान का तपागच्छ मदिर, घी वालो का रास्ता, जयपुर)
6. श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर
7. श्री जैन श्वेताम्वर उपाश्रय, मारुजी का चौक, जयपुर
8. निर्माणाधीन विजयानन्द विहार, 1816-18, घी वालो का रास्ता, जयपुर
9. श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर
10. श्री जैन श्वे भोजनशाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर
11. श्री जैन श्वे मित्र मण्डल पुस्तकालय एव सुमति ज्ञान भण्डार
12. श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोप
13. महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण, शिविर (ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर)
14. जैन उपकरण भडार, घी वालो का रास्ता, जयपुर
15. माणिभद्र वार्षिक स्मारिका।

सम्पादकीय

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर की विविध गतिविधियों में से एक महत्वपूर्ण गतिविधि "मणिभद्र" स्मारिका का प्रतिवर्ष भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस के दिन प्रकाशन होना है। इस स्मारिका के [illegible] अंक को "श्री बरखेड़ा तीर्थ अंजनशलाका-प्रतिष्ठा विशेषांक" के रूप में सकल संघ की सेवा में समर्पित करते हुए हार्दिक सन्तोष एवं प्रसन्नता है।

जैसा कि आपको विदित ही है कि इस वर्ष इस संघ के लिए अत्यन्त गौरव का विषय रहा था जिसमें लगभग साढ़े चार वर्ष पूर्व प्रारम्भ बरखेड़ा तीर्थ जिनालय एवं परिसर का पुनर्निर्माण कराने का जो कार्य प्रारम्भ हुआ था वह लगभग पूर्णता की ओर अग्रसर होने पर गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. के शुभाशीर्वाद एवं शांतिदूत आचार्य श्रीमद्विजय नित्यानन्दसूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा एवं बरखेड़ा तीर्थ उद्धारिका महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में 24 फरवरी, 2000 को तीर्थाधिपति सहित नूतन एवं प्राचीन 21 जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। नौ दिवसीय महोत्सव के कार्यक्रम अविस्मरणीय बन गये। इसी को चिर-स्मरणीय यादगार बनाने की दृष्टि से अंजनशलाका के अन्तर्गत सम्पन्न हुए पंच कल्याणक विधान से सम्बन्धित विस्तृत विवरण एवं प्रसंगवश आए हुए चित्र भी इस अंक में प्रकाशित किए गए हैं। इसी तरह से संघ की दूसरी महत्वपूर्ण एवं महत्वाकांक्षी योजना जयपुर में "[illegible] विहार" का निर्माण होना है। इस भवन का औपचारिक उद्घाटन समारोह भी दि. 26 फरवरी, 2000 को शांतिदूत आचार्य भगवन्त सहित साधु-साध्वीवृन्द की निश्रा में सम्पन्न हुआ था।

बरखेड़ा तीर्थ : अद्भुत शांति स्थल

श्री गौरीशकर शर्मा, बरखेडा

कहा गया है कि—

तन-वल, धन-वल, वुद्धि-वल, विद्या वल है चार।
एक मनोवल के विना चारो ही वेकार ॥

अर्थात् इस ससार म तन, धन, वुद्धि तथा विद्या चार प्रकार के वल माने गए हे परन्तु एक मनोवल (मन क वल) क विना य चारा ही वल व्यर्थ है। मनोवल व्यक्ति मे तव तक नहीं आ सकता जव तक वह प्रसन्न नहीं हे और प्रसन्नता तव तक नही आ सकती जव तक कि मन शात नहीं है। और मन की शाति के लिए बरखेडा के आदिनाथ मदिर से वढकर कोई स्थान नहीं हो सकता।

यह मदिर सौम्य वातावरण व सुरम्य सरोवर के किनार स्थित ह। यहाँ की प्राकृतिक सुपमा निराली हे। वर्पा ऋतु के समय तो यह प्राकृतिक सुदरता अपनी चरम सीमा पर हाती हे। दूर-दूर तक तालाब का पानी हवा से अठखेलियाँ करती लहरे अपनी शाखाओ ओर टहनियो को हिलाकर हमे अपनी ओर बुलाते वृक्ष गॉव म प्रवश से पूर्व ही दूर से चमकता हुआ मदिर का कलश गगनचुवी शिखर दुग्ध-धवल जिनालय सभी कुछ मानो मन को अपने वश मे करने को आतुर प्रतीत होते है।

यह मेरा सौभाग्य है कि ऐसा अनोखा तीर्थ मेरी जन्मस्थली है। निवर्तमान निर्माणाधीन जिनालय का प्रत्येक अनमोल व दर्शनीय क्षण मेरी स्मृति मे अकित है। प्रतिष्ठा का प्रत्येक क्षण अविस्मरणीय है। प्रभु श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा इतनी मनोहारी है कि वस दखते ही रहे देखते ही रहे। ऐसा लगता है जैसे भगवान कभी गभीर मुद्रा मे, कभी प्रसन्न मुद्रा मे तो कभी ममतामयी मुद्रा म हे। ऐसा मन करता हे कि प्रभु की प्रतिमा ऑखो म समा जाए। हमारा मन कितना भी चितित उद्विग्न या क्रोधित है प्रभु दर्शन के वाद एक अद्भुत शाति अनुभव होती हे सारी मानसिक परेशानियाँ दूर हो जाती है मनोकामनाए पूर्ण होती हे। वात शाति की हा आध्यात्म की हा अथवा धर्मलाम की, सभी के लिए यह तीर्थ अद्भुत-अनुपम स्थल है।

अभी यहाँ जीर्णोद्धार प्रेरिका महत्तरा सा सुमगला श्री जी म, सा प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा सा कुसुम प्रभा श्री जी म सा आदि सा जी महाराज की चातुर्मास साधना चल रही ह। जप-तप भक्ति का अनूठा वातावरण ह आर सता क सग अर्थात् सत्सग का सुनहरा अवसर हे। सत्सग की महिमा निराली हे। कहा गया है-

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धारिय तुला एक अग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसग॥

अर्थात् तराजू के एक पलडे म सत्सग का सुख रखा जाए और दूसरे पलडे मे स्वर्ग-अपवग का सुख रखा जाए तो सत्सग सुख का पलडा ही भारी पडेगा। यह प्रभु आदिनाथ और सत्सग का ही प्रताप है जिसके कारण सम्पूर्ण भारतवर्प से धर्मप्रेमी दर्शनार्थ और स्थानीय लगभग सो नन्ह-मुन्ने बालक प्रभु की आरती-वदना और भजन सध्या की ओर खिचे चले आ रहे है।

इसलिए आइए और आदिनाथ भगवान के दर्शन करके मानव जीवन म एक अविस्मरणीय क्षण जोडकर अपनी आत्मा को असीम सुख मन को अद्भुत शाति व जीवन को सफलता के मार्ग पर आगे वढाइए।

श्री बरखेड़ा ऋषभदेव स्वामी प्राचीन तीर्थ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जगदगुरु जैनाचार्य अकबर प्रतिबोधक आचार्य विजय श्री हीरसूरीश्वरजी म सा स. 1640 मे सम्राट अकबर के निमत्रण पर इस क्षेत्र म विचरण करते हुए फतेहपुर सीकरी पधार थे । इसका उल्लेख बरखेडा ग्राम के निकट ही संघ के अन्तर्गत चन्दाई ग्राम म स्थित जिनालय म स्थापित चरण एव शिला लेख से मिलता है ।

किवदन्ती यह भी है कि बरखेडा ग्राम स अन्यत्र स्थान पर भूगर्भ से निकलने के पश्चात जब बैलगाडी म रखकर प्रतिमाजी को ले जा रहे थे तो इसी स्थान पर आकर गाडी रुक गई और किसी भी हालत म आगे नहीं बढ सकी । तब इसी स्थान पर मदिरजी का निर्माण कराकर प्रतिमाजी को प्रतिष्ठित किया गया था । इस तथ्य का प्रतिपादन इस तथ्य से भी होता है कि जब यहा पर आमूलचलूल नया जिनालय बनाने की योजना को मूर्त रुप देने हेतु तीर्थाधिपति का उत्थापन करन का जब-जब प्रयास किया गया प्रयत्न निष्फल रहा । आखिर गुरु भगवन्तों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ कि संघ के आगेवान ट्रस्टीगण श्रावक लेकर भगवान से विनती कर कि आपका नव-निर्माण के पश्चात इसी स्थान पर विराजमान करायेंगे । जब ऐसा ही

क श्रद्धालुओं से पूरित होता रहा और समय-समय पर जीर्णोद्धार भी होते रहे । अन्तिम जीर्णोद्धार वि.सं. 1984 व सन 1927 मे होना पाया जाता है । यहा पर फाल्गुन सुदी मे वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने के साथ-साथ यात्रियो का निरन्तर आवागमन बना रहता है ।

वर्तमान जीर्णोद्धार

जिनालय के बार-बार अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण हो रहने के कारण यहा पर तीर्थ के अनुरूप भव्य शिखरबद्ध जिनालय बनाने की योजनाए एव चिन्तन मनन तो कई वर्षो स चलते रहे लेकिन कार्य रुप मे परिणति नहीं हो रही थी । सौभाग्य से वर्ष 1995 मे महत्तरा साध्वी श्री सुमगला श्री जी म.सा आदि ठाणा का जयपुर मे चातुर्मास हुआ और आपने यह कार्य सम्पन्न कराने का बीडा उठाया । गच्छाधिपति आचार्य श्रीमदविजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म सा. के शुभाशीर्वाद, आपके ही आज्ञानुवर्ती [illegible] आचार्य श्रीमदविजय नित्यानन्द सूरीश्वरजी म.सा. [illegible] मार्गदर्शन एव आशीर्वाद [illegible] महत्तरा साध्वी सुमगला श्री जी म सा की सद्प्रेरणा से 28 11 95 को भूमि पूजन [illegible] दिसम्बर, 95 को शिला स्थापना [illegible] कार्य अबाध गति से चलते हुए लगभग सम्पूर्ण [illegible]

अनुक्रमणिका

विजयानंद विहार में भवन निर्माण सहयोगी बनने हेतु विनम्र निवेदन

शासनदेव की असीम कृपा से एव गुरु भगवन्तो के मगल आशीर्वाद से इस श्रीसघ द्वारा घी वालो के रास्ते मे नया क्रय किया गया भवन सख्या 1816-18 के आमूलचूल निर्माण की योजना सन् 1998 के पर्यूषण पर्व पर श्रीसघ के समक्ष प्रस्तुत की गई थी। सघ ने इसको हाथो-हाथ लेकर जो अदम्य उत्साह एव साहस का सवल प्रदान किया उसके लिए श्रीसघ को हार्दिक धन्यवाद एव वधाई।

आचार्य प्रवर श्रीमद्विजय नित्यानद सूरीश्वर जी म सा की पावन निश्रा मे दि 2 एव 4 दिसम्वर, 1998 की मगल वेला मे भूमि पूजन एव शिलान्यास सम्पन्न होकर निर्माण कार्य का श्री गणेश हुआ था और अव तव चार मजिल का निर्माण कार्य पूरा होकर आगे का निर्माण कार्य भी तीव्र गति से जारी है। इस भवन का नाम आचार्य श्री के श्रीमुख से "विजयानद विहार" घोपित किया गया है।

जैसा कि आपको विदित है कि इस भवन योजना मे वडा प्रवचन हाल मय मेजनाइन, चार छोटे हॉल, 21 कमरे, वोरिग इत्यादि लिफ्ट सुविधा के साथ वनाये जायेगे। विभिन्न नकरे पूर्ण होने पर भी वालकनी, प्रवेश द्वार, जीने इत्यादि विभिन्न कार्यो के लिये आवश्यक धन की पूर्ति हेतु महासमिति के निर्णयानुसार जो भी भाग्यवान इस महत्ती व्यय साध्य योजना मे अपना योगदान 21,000/- रु या इससे अधिक प्रदान करेगे उनके नाम "भवन निर्माण सहयोगी" के रूप मे शिलापट्ट पर वडे हॉल मे अकित किये जायेगे। अत आप सभी उदारमना दानदाताओ से विनम्र विनती है कि इस महत्त्वाकाक्षी योजना मे भरपूर सहयोग प्रदान करने की कृपा करे ताकि यह कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूरा किया जा सके।

हीराभाई चोधरी	नरेन्द्र कुमार लुनावत	मोतीलाल भडकतिया
अध्यक्ष	सयोजक, भवन निर्माण समिति	सघ मत्री

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जोहरी वाजार, जयपुर-302 003

बरखेड़ा तीर्थ के तीर्थाधिपति

भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी

तीर्थ संचालन : श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

नव निर्वाचित महासमिति वर्ष 2000-2002 के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

श्री नवीनचद शाह
उपाध्यक्ष

श्री हीराभाई चौधरी
अध्यक्ष

श्री मोतीलाल भडकतिया
सघ मत्री

श्री राकेश कुमार मोहणोत
सयुक्त सघ मत्री
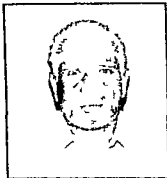
श्री दानसिह करनावट
कोषाध्यक्ष
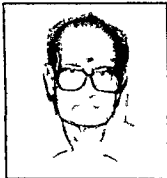
श्री जीतमल शाह
भडाराध्यक्ष

श्री नरेन्द्र कुमार कोचर
मदिर मत्री

श्री अभय कुमार चौरडिया
उपाश्रय मत्री

श्री राजेन्द्र कुमार लुणावत
आयबिलशाला-भोजनशाला मत्री

श्री गुणवतमल साड
शिक्षा मत्री

श्री उमरावमल पालेचा
सयोजक वरखडा तीर्थ

श्री कुशलराज सिघवी
सयोजक जनता कॉलोनी मदिर

श्री महेन्द्र कुमार दोसी
सयोजक चदलाई मदिर

श्री नरेन्द्र कुमार लुणावत
सयोजक विजयानद विहार
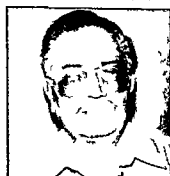
श्री माणकचद वैद
सयोजक उपकरण भडार
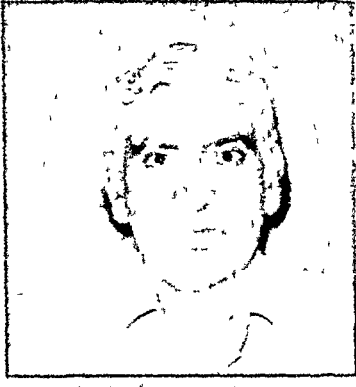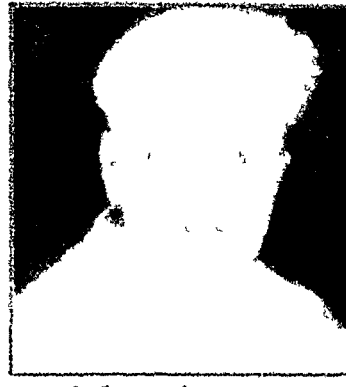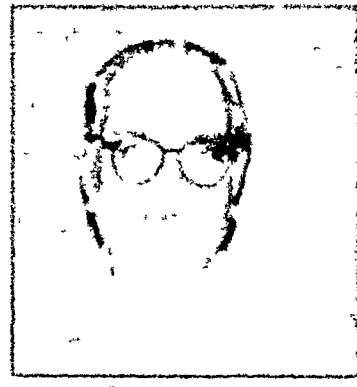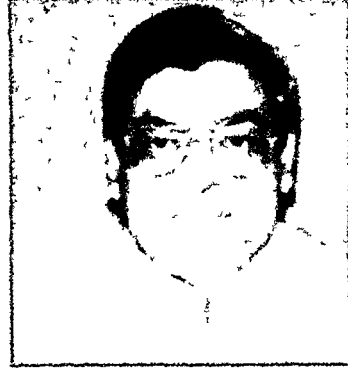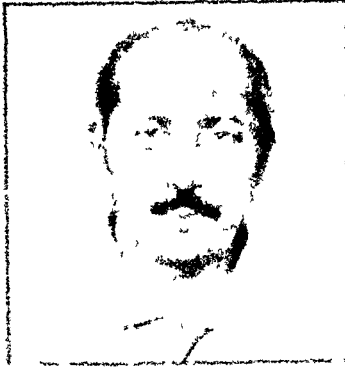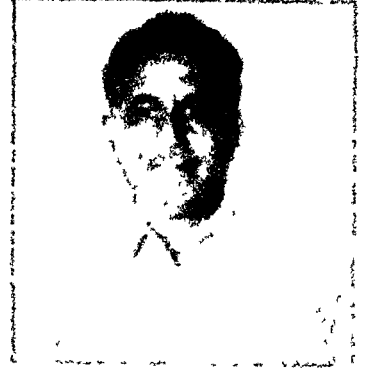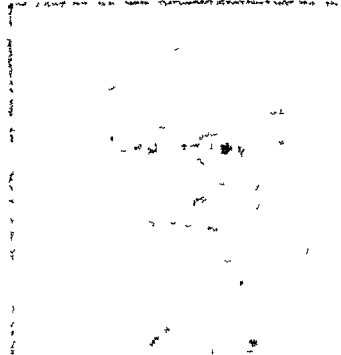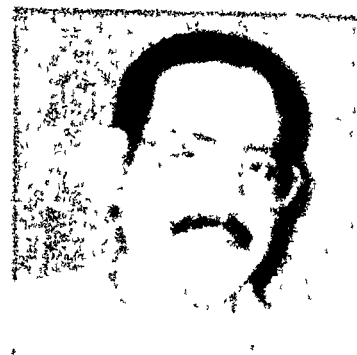
मुनि श्री विचक्षण विजय जी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मासिक प्रवेश (2 जुलाई, 2000)

मुनिवर्य जुलूस के साथ पधारते हुए।

जुलूस का विहगम दृश्य।
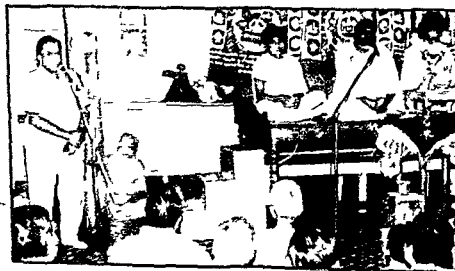
धर्मसभा मे मुनिवर्यो का अभिनदन करते हुए सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी

विविध आयोजन

बरखेड़ा तीर्थ पर चातुर्मासिक प्रवेश करते हुए महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म., सा. प्रफुल्लप्रभा श्री जी म. आदि ठाणा-7

महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर-2000 के समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री आर.सी. शाह पुरस्कार वितरित करते हुए

शिविर संचालिका सुश्री सरोज कोचर का अभिनंदन करते हुए संघ के अध्यक्ष, संघमंत्री एवं शिक्षामंत्री

बरखेड़ा तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव की झलकियाँ

पचकल्याणक महोत्सव का शुभारंभ करते हुए आचार्य श्रीमद्‌विजय-नित्यानदसूरीश्वर जी म सा एव क्रियाकारक श्री भीखूभाई कटारिया

प्रभूजी के माता-पिता, इन्द्र-इन्द्राणि आदि

भगवान की माता को चौदह स्वप्न (माता श्रीमती प्रभाबेन शाह)

उद्घाटन समारोह

बरखेडा तीर्थ की
पेढी का उद्घाटन
करते हुए
श्री तरसेम कुमारजी
सुभाषचंदजी पारख

कंपिल नगरी का
उद्घाटन करते हुए
श्री तरसेम कुमार जी
एवं
श्रीमती पद्मादेवी पारख

द्वारोद्घाटन के लिए
प्रस्थान करते हुए
भाग्यशाली कूपन
विजेता
श्रीमती [illegible] शाह
चतुर्विध संघ के साथ

अभिनंदन समारोह

आ भगवन्त को
अजन वस्त्र वोहगने
के लाभार्थी
श्री तरसेम कुमार जी
सुभापचद जी पारख
परिवार सहित गुरुदेव को
वस्त्र वोहराते हुए
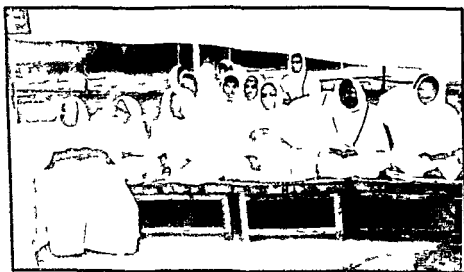
अभिनदन समारोह मे
उपस्थित
महत्तरा साध्वी श्री
सुमगला श्री जी म सा
अपनी शिष्या-प्रशिष्या
परिवार सहित विराजित

समारोह
का
विहंगम दृश्य

अभिनंदन समारोह
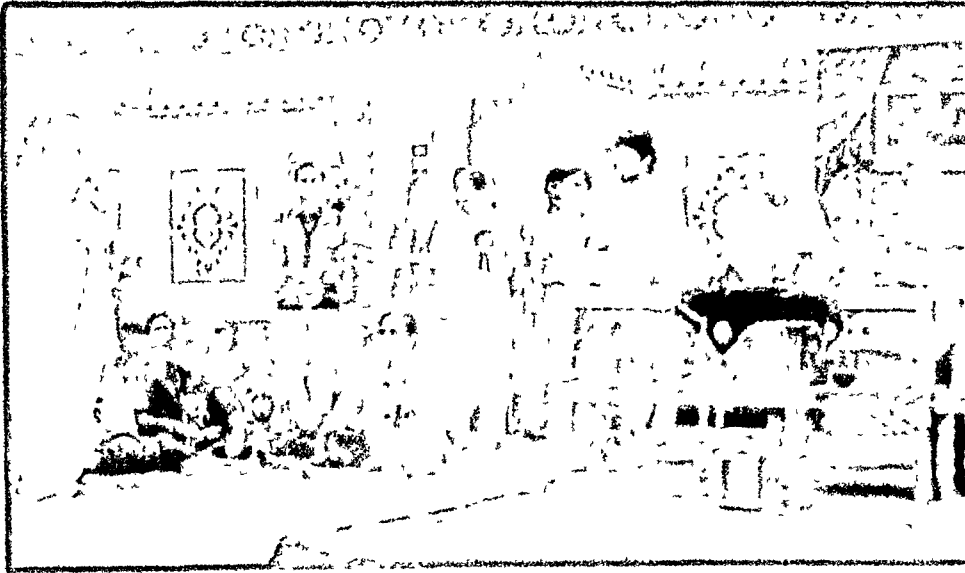
अतिथियों का
स्वागत करते हुए
श्री संघ के
अध्यक्ष
श्री हीराभाई चौधरी

श्री संघ की ओर से
आचार्य भगवन्त को
कामली वोहराकर
अभिनंदन करते हुए
श्री तरसेम कुमार जी
पारख

श्री हीराभाई चौधरी
को
"संघ-रत्न"
की उपाधि से
अलंकृत करते हुए
श्री श्रेणिक भाई सहित
विशिष्ट अतिथिगण

अभिनंदन समारोह

सा श्री सुमगला श्री जी म सा को "वरखेडा तीर्थोद्धारिका" की पदवी से विभूपित करने हेतु सघ की ओर से कामली बोहराकर अभिनंदन करती हुई श्राविकाएं एवं वरखेडा ग्राम की महिलाए

सेठ श्री श्रेणिक भाई, अध्यक्ष श्री आनदजी-कल्याणजी का अभिनंदन करते हुए संघ के अध्यक्ष

अभिनंदन समारोह

श्री पारसमलजी भंसाली
अध्यक्ष, नाकोडा तीर्थ
ट्रस्ट का अभिनंदन

श्री राजकुमार जी जैन
मंत्री, श्री हस्तिनापुर
ट्रस्ट का अभिनंदन

श्री वीरचंद जी भाबु
अध्यक्ष, उत्तरी भारत
आत्मानंद जैन सभा
का अभिनंदन

विजयानंद विहार का उद्घाटन समारोह
दिनांक 26 फरवरी, 2000

समारोह मे निश्रा
प्रदान करते हुए
आ भगवन्त एव
मुनि मडल तथा
अध्यक्ष
श्री हीराभाई चौधरी
स्वागत करते हुए

उद्घाटन से पूर्व
श्री अनूपचदजी वच्छावत
का स्वागत
करते हुए
सघ के अध्यक्ष

श्री अनूपचदजी वच्छावत
नागौर, हाल-दिल्ली
परिवार सहित
भवन का उद्घाटन
करते हुए। दाहिनी ओर
निर्माण सयोजक
श्री नरेन्द्रकुमारजी लुणावत

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

श्री ऋषभदेव भगवान का प्राचीन तीर्थ ग्राम बरखेड़ा (जिला जयपुर-राजस्थान) की यात्रार्थ पधारिये।

इस श्रीसंघ द्वारा संचालित श्री ऋषभदेव भगवान का प्राचीन तीर्थ जयपुर से 30 कि.मी. दूर टोंक रोड पर (श्री पद्मप्रभुजी से 7 कि मी एवं शिवदासपुरा से 2 किमी) स्थित है। भूगर्भ से निकली हुई लगभग सात सौ वर्षीय मूलनायक भगवान की भव्य मनोरम प्राचीन प्रतिमाजी विराजित हैं। किवदन्ती के अनुसार लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व जिनालय का निर्माण हुआ था।

सुरम्य सरोवर के किनारे स्थित जिनालय का पुनः आमूलचूल निर्माण कराकर विशाल शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण कार्य दिसम्बर 1995 में प्रारम्भ हुआ और लगभग कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर होने पर इस वर्ष 24 फरवरी, 2000 को मूलनायक भगवान सहित 21 प्राचीन एवं नवीन प्रतिमाओं की अंजनशलाका प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई है।

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म सा के आज्ञानुवर्ती परम पूज्य प्रवचनकार मुनिवर्य श्री विचक्षण विजयजी म.सा. ठाणा-3 से जयपुर के आत्मानन्द जैन सभा भवन में चातुर्मासार्थ विराजित हैं।

इसी प्रकार गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी बरखेड़ा तीर्थ उद्धारिका, शासनदीपिका महत्तरा साध्वी सुमंगलाश्रीजी म.सा., साध्वी [illegible]श्री जी म.सा. आदि ठाणा-7 बरखेड़ा तीर्थ पर चातुर्मास कर रही हैं। दि. 13 जुलाई, 2000 को बरखेड़ा तीर्थ पर चातुर्मासिक प्रवेश होने के पश्चात यात्रियों का निरन्तर तांता लगा हुआ है।

यहां पर आवास, भोजनशाला आदि सभी प्रकार की उत्तम सुविधाएं [illegible] निःशुल्क उपलब्ध है।

अतः सभी धर्मप्रेमी एवं गुरुभक्त बन्धुओं से सादर निवेदन है कि [illegible] प्राचीन तीर्थ की यात्रा में अवश्य पधारिये।

सम्पर्क सूत्र

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन
घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार,
जयपुर-302 003
फोन: 563260, 564[illegible]

ग्राम बरखेड़ा-303 903
पो. शिवदासपुरा, जयपुर
फोन: 919-7407
01429-7407

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के पदाधिकारी एवं सदस्य
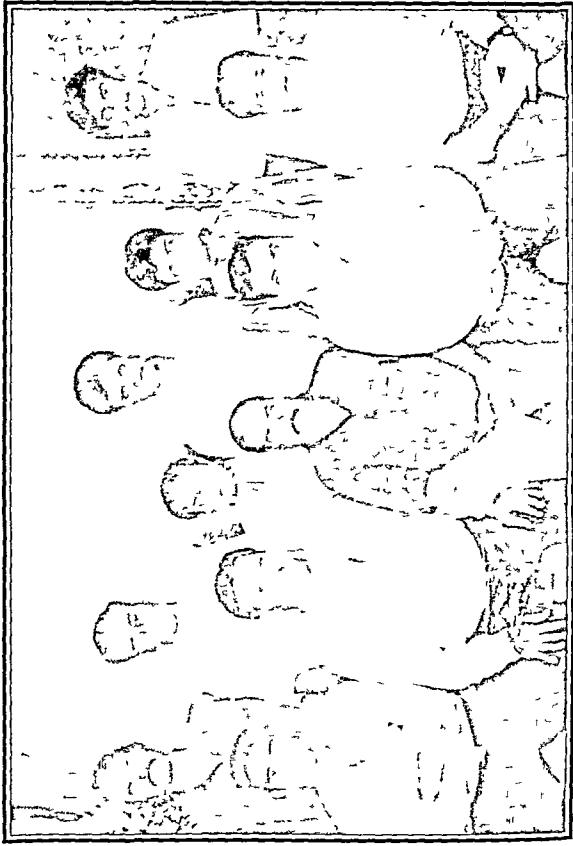
बैठे हुए (दाये से) श्री पीतेश शाह-कोषाध्यक्ष, श्री नरेश मेहता-उपाध्यक्ष, श्री प्रकाश मुणोत-अध्यक्ष, ललित दुगड़-मन्त्री श्री रविप्रकाश चोरड़िया-सास्कृतिक मन्त्री।
खड़े हुए (दाये से) श्री राकेश छजलानी-सदस्य श्री विजय सेठिया-सदस्य श्री सुरेश जैन-सगठन मन्त्री, श्री भरत शाह-शिक्षामन्त्री श्री दिनेश कुमार लूणावत-सूचना एव प्रसारण मन्त्री एव श्री मोहित मेहता-सदस्य।
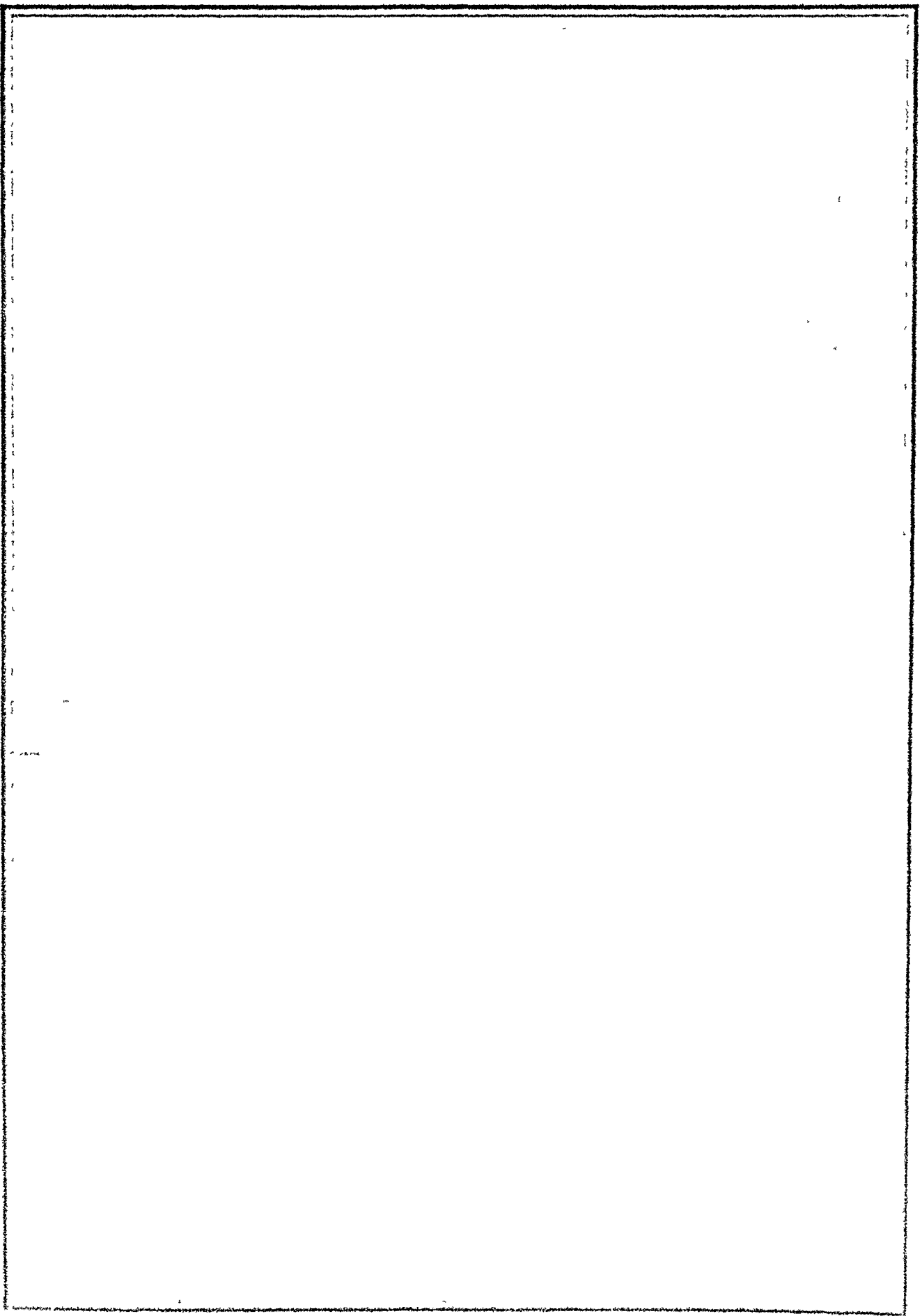
श्री सुमति जिन श्राविका संघ की पदाधिकारी एवं सदस्याएं

सम्मिलन नयना नहि किंवदन्ति
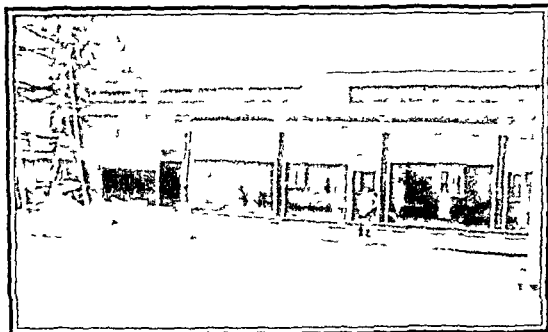
गच्छाधिपति आ. श्रीमद्विजय-इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म.सा., बीकानेर

कुसग्गे जह ओस विन्दुए थोवं चिट्ठई लंवमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम मा पमाणए॥

अर्थात : मति, श्रुत, अवधि और मनापर्यव ज्ञान ऐसे चार-चार ज्ञान के मालिक अनंतलब्धि के धारक श्री गुरु गौतम स्वामी को अप्रमत्तता की ओर अग्रसर करते हुए विश्व वंदनीय विश्व ज्योत पुञ्ज शासनपति भगवान महावीर स्वामी अपनी अंतिम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र में फरमा रहे हैं-हे गौतम! जिस प्रकार प्रातःकाल में जव आसमान से ओस की वूंद कुशा के अग्रभाग पर गिरती है तो कितनी सुहावनी व सुंदर लगती है वह मोती की भांति चमकने लगती है। लेकिन उसका अस्तित्व कितना? हवा का थोडा सा झोंका आया नही कि वह पानी की वूंद नीचे गिरी नही कि उसका नामोनिशान मिट जाता है एवं मणुयाण जीवियं ठीक उसी प्रकार मानव का जीवन भी क्षणिक ह। वह कव समाप्त हो जायेगा इसका कोई पता नहीं। अतएव हे गौतम! क्षणमात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। थोडी सी भी लापरवाही जीवन को खतरे में डाल सकती है।

जीवन की क्षणभंगुरता को जानते हुए भी संसार की मोहमाया में फंसा हुआ मानव धर्म कार्य को आज नहीं कल पर छोड देता है और काल-[illegible] हमारे समक्ष [illegible] [illegible] और वह हमारी जीवन [illegible] [illegible] पंक्तियों में भी ठीक ही कहा है-

> रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
> भाष्वानुदेष्यति हसिष्यसि पंकज श्री
> इत्थं विचीन्त्य कोशंगते द्विरेक
> हा हा नलिनी गज उज्जहार॥

कमल की वंद पंखुडियों में रहा हुआ भ्रमर सोचता है कि रात्रि वीतेगी और सुनहरा सुप्रभात होगा सूर्योदय होगा कमल खिलेगा। इस पर तो मैं वाहर निकल जाऊंगा इस प्रकार वह मन की मुरादें अपने मन में संजोये रहता है किन्तु कुछ ही क्षणों के पश्चात् एक मदोन्मत्त हाथी आता है और उस कमल की नाल को ही अपनी सूंड से उखाड फेंकता है। बेचारे भौंरे की जीवनलीला ही समाप्त हो जाती है।

भ्रमर की तरह हम भी सोचते रहते हैं कि समय आयेगा तो धर्माराधना करूंगा लेकिन इस प्रकार विचारते-विचारते हम यहां से प्रयाण कर देते हैं। हमारी भावनाएं मन में ही [illegible] जाती है। हमारा जो शरीर है वह भी नित्य नहीं है [illegible]

[illegible]

अधिकतया स्पष्ट करने के लिए कवि माघ का प्रसग मुझे याद आता है-

कवि माघ के बारे मे कहा जाता है कि वह एक बहुत बडे धनाढ्य व्यक्ति थे और उन्होने अपनी सारी सपत्ति गरीबो को बाट दी थी। एक यहा तक कि उन्होने अपने पास कुछ भी नहीं रखा। वो एकदम साधारण गरीब हो गये। उन्हे अपने परिवार का गुजारा करना भी मुश्किल हो गया। आखिर वे ब्राह्मण थे गलत काम तो कर नहीं सकते। लेकिन सूक्तिनुसार-' बुभुक्षित कि न करोति पापम्'' अर्थात् भूखा व्यक्ति क्या नहीं करता वह अपने पेट के लिए सब कुछ करने के लिए तेयार हो जाता हे। अन्त मे उन्होने सोचा कि हमारे इस नगर के जो राजा ह वे वडे वेभवशाली ह और वहॉ से मै थोडी बहुत स्वर्ण अशर्फियॉ ले आऊगा तो राजा को कोई फर्क पडने वाला नहीं है।

अब वह अपने प्लान के अनुसार मध्यरात्रि मे राज दरबार की ओर निकल पडा। चारो ओर अमावस्या की रात्रि की भाति गहन अधकार छाया हुआ था। थोडे ही समय मे राजमहल के समीप पहुँच गया। राज दरबार मे पहरेदारो के अलावा सभी जन प्रगाढ निद्राधीन थे। वह चारो ओर देखता है और अवसर पाते ही राजदरबार मे प्रवेश कर जाता है। रत्नो की गड्डी बाधकर जब तक बाहर निकलने लगा उस समय तक पहरेदारो को पता लग गया और उसे पकडने के लिए दौड पडे। भागते-भागते उसे कहीं पर छिपने की जगह नहीं मिली तो वह राजा के पलग के नीचे चुपचाप बैठ गया।

कुछ समय के पश्चात् राजा की नींद खुल जाती है। वह अपनी शैय्या पर बैठ जाता है और कुछ पक्तियॉ गुनगुनाने लगता है। राजा अपने वैभव के काव्य की पक्तियॉ गुनगुनाने लगता हे। राजा अपने वैभव के काव्य की पक्तियॉ गूथने म लगा। उनके मुखारविद से सहजतया पक्तिया फूट निकलती ह-

चेतोहरा युवतय स्वजनोऽनुकूला
सद्बान्धवा प्रणयगर्मीगरज्य भृत्या
गर्जीन्त दन्तिनिवहास्तरलास्तुरगा ॥

इस प्रकार तीन पक्तियो की रचना तो अनायास ही हो गई। अब छन्दशास्त्र का नियम हे कि जब तक चार पक्तियॉ न हो तव तक वह पूरा छन्द नहीं माना जाता। एक छन्द मे भी ज्यादा मात्राए हो जाय कम हो जाय तो वह छन्द नहीं माना जाता। राज भोज वसततिलका नामक छन्द मे अपने वैभव का गर्व कर रहे थे। वह चोथी पक्ति को बनाने के लिए बहुत प्रयत्न करता हे ओर बार-बार दोहराता है। कई बार क्या होता हे कि बडे-बडे लेखको की कलमे भी रुक जाती हैं उसकी खोपडी जवाब दे देती है।

इधर पलग के नीचे छिपकर बेठे हुए कवि माघ बडे ध्यान से ये पक्तियॉ सुन रहे थे। वे विचारने लगे कि यदि म पक्ति बनाने के लिए बोलूगा तो पकडा जाऊगा ओर बोले बिना रहा भी नहीं जा सकता था। आखिर उन्होने सोचा कि जो होने वाला होगा वह आगे देखा जाएगा। राजा की इन पक्तियो मे अपने राजवैभव का अहकार झलक रहा था इसलिए कवि माघ राजा के सामने सत्य प्रकट कर देना चाहते थे ओर उसके अभिमान को भी चकनाचूर कर देना चाहते थे। अन्त मे उन्होने पक्ति की पूर्ति कर दी ' सम्मीलने

नयनानीहि किञ्चिदास्ति।" अर्थात् आँखें बंद हो जाने के बाद कुछ नहीं है। हे राजन! आपका विशाल राज्य, चित्त को चुराने वाली ऐसी खूबसूरत अन्तःपुर में रानियाँ है, अनुकूल स्वजन है, अच्छे भाई, नौकर-चाकर, हाथी-घोडे इत्यादि संसार का वैभव-सुख आँखें मूंद जाने के पश्चात अपने पास कुछ भी नहीं रहेगा। मृत्यु के बाद संसार की कोई भी चीज हमें साथ नही देती। कवि माघ की इन पंक्तियों ने कमाल कर दिया। राजा को जो अपने धन-वैभव का अहंकार था वह इस पंक्ति ने उतार दिया। राजा बडा आश्चर्यचकित हो जाता है वह सदा-सदा के लिए जागृत हो जाता है।

संसार का सुख-वैभव एक स्वप्न के समान है। सावन के महीने के बादलों के तुल्य है। कहा भी है-

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्म संग्रहः॥

शरीर भी अनित्य है और वैभव भी शाश्वत नहीं है तथा मृत्यु निरंतर निकट आ रही है अतएव बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि वह धर्म का संग्रह कर ले। जैसे पानी के बिना सरोवर की शोभा नहीं होती, छाया के बिना वृक्ष की शोभा नहीं होती और चाहे कितना ही अतिसुंदर मंदिर क्यों न हो, पर उसमें देवाधिदेव जिनेश्वर परमात्मा की प्रतिमा न हो तो उस मंदिर की कोई शोभा नहीं। ठीक इसी प्रकार धर्म के बिना मनुष्य की भी कोई शोभा नहीं।

इसलिए भाग्यवानों! हम सभी को [illegible]

हैं कि-"मणुआ तुमेव सच्चं" अर्थात हे मनुष्य तू ही सत्य है, तू ही महान है। इस प्रकार मानव की प्रशंसा सुनकर क्या देवराज इन्द्र को ईर्ष्या नहीं होती होगी? क्या वे परमात्मा महावीर पर नाराज नही होंगे? क्योंकि देवता भी समझते हैं भले ही हम लोग भौतिक सुखों में मानव से आगे हैं मगर धर्माराधना में तो मानव से पीछे ही है। देवताओं का उत्कृष्ट आयुष्य 33 सागरोपम माना जाता है। अगर वो देव 33 सागरोपम तक रजोहरण प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें तो उन्हें नहीं मिल सकता और जबकि मानव को बडी आसानी से मिल सकता है।

मनुष्य भव में धर्माराधना का अवसर प्राप्त होता है। यहां पर ऐसा कुछ कहा जा सकता है जो अन्यत्र नही। मनुष्यगति कर्मभूमि है और शेष योनियाँ भोग-भूमियां है जहाँ पर प्राप्त किया हुआ भोग जा सकता है। मनुष्य भव में उच्चतम कक्षा की आराधना हो सकती है अतएव हमारे पुनित संतों ने मनुष्य भव को चोराहा माना है चोराहा यानि कि जिस स्थान से चारों ओर रास्ते निकलते है। मनुष्य भव से आत्मा नरक तिर्यंच मनुष्य और देवगति इन चारों गतियों में जा सकता है, इतना ही नहीं पंचमगति अर्थात् मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। बुद्धिमान वही कहलाता है जो प्राप्त अवसर का सदुपयोग कर ले। हमारे पुण्योदय से हमें धर्म सामग्री प्राप्त हुई है। राग-द्वेष को जीतने वाले एवं वीतराग देव मिले और कंचन-कामिनी के त्यागी ऐसे साधु-भगवंत प्राप्त हुए। [illegible] ❖

समस्याओं की जड़ पर प्रहार कीजिए

आ. श्रीमद्-विजय नित्यानद सूरीश्वरजी म सा , सादडी

अक्सर परिवारो मे अनेक प्रकार की समस्याए उठती रहती हे । भाई-भाई मे, सास-बहू मे, पिता-पुत्र मे, देवरानी-जेठानी मे छोटी-छोटी बातो को लेकर झगडा/मनमुटाव होते रहते हे । सदा सावधान रहकर उनके कारणो पर विचार करना चाहिए । झगड़ा क्यो हुआ, किस कारण हुआ, कारण की गहराई मे जाकर उसका निवारण करने का प्रयास करने पर झगडो की आग विशाल रूप धारण नहीं करती ओर परिवार की सुख-शान्ति को खतरा नहीं होता ।

यदि आप चाहते ह कि परिवार मे ऐसी विखराव ओर मनमुटाव की समस्याए उठे ही नहीं और उठे तो तत्काल उनका शमन हो जाए तो समझदारी इसमे ह कि आप समस्या की जड़ को समझे और उसी पर प्रहार करे ।

परिवार मे सुख-शाति सोमनस्य, परस्पर विश्वास बनाए रखने के लिए सूत्र रूप मे इन बिन्दुओ पर ध्यान देना चाहिये ।

परस्पर आदर भाव रखे—

प्रत्येक मनुष्य सम्मान चाहता है । छोटा बच्चा भी अनादर ओर तिरस्कार देखकर दु खी होता है, रोने लग जाता हे । प्यार की मनुहार और मीठी बोली सुनकर आपके पास आने को ललक उठता है । मीठी बोली से आपका मन मुग्ध कर लेता है । घर का कुत्ता भी आपकी दुत्कार सुनकर गुस्से से गुर्राने लग जाता हे । आदर और प्रेम का यह नियम सभी के लिए हे । परिवार मे छोटे-वडे सभी के लिए आदर का भाव रखे । किसी का तिरस्कार न करे किसी को शब्दो के चाबुक नहीं मारे ओर न ही किसी को गलत बताकर डाटे । जो भी कहो आदर ओर प्रेमपूर्वक कहो । मुस्कराहट के साथ कहो ।

अपनी भूल स्वीकार करने से नहीं चूके

भूल हर किसी से हो सकती हे । मतभेद भी सभी मे हो सकते ह । जरूरी नहीं सभी एक ही प्रकार से सोचे या एक ही तरह की बाते पसन्द करे । यदि आपसे कोई भूल हो जाए तो तुरन्त सरल मन से उसे स्वीकार कर ले इसमे आपका बडप्पन ही झलकेगा । परिवार के किसी भी सदस्य से भूल हो जाए तो उसका उपहास न करे । परस्पर विचारो का विरोध हो जाए तो उसे भी बातचीत करके सुलझाने का प्रयास करे । कभी गलतफहमी के शिकार न हो ।

किसी के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप न करे

परिवार मे सभी को विचारो की उदारता और व्यवहार की स्वतत्रता प्रिय होती है । इसलिए यदि किसी की रुचि आपसे भिन्न ह, उसकी विचारधारा आपसे अलग है, उसके लिए झगडा नहीं कर । विवाद या बहस नहीं करे, विचारो की उदारता का नाम ही विचार-सहिष्णुता है ।

व्यवहार में भेदभाव न बरतें

भेदभाव कलह का मुख्य कारण बनता है। परिवार के सभी सदस्य आपके शरीर के अवयव की तरह समान हैं। उनको समानता की दृष्टि से देखें। पुत्र-पुत्री में किसी प्रकार का भेदभाव रखना उनके दिल को दुःखी कर देता है, उन्हें हीनता अनुभव कराता है। कम या अधिक कमाऊ बेटे के प्रति भी भोजन, वस्त्र आदि की सुविधाओं में किसी प्रकार का भेदभाव रखना मन का ओछापन है। छोटी-बडी बहु में देन-लेन में भी किसी प्रकार का दुराव-छुपाव या भेद नहीं रखना चाहिए। सबको समानता का हक है। सभी आपके स्नेह और प्यार का अनुदान बराबर चाहते हैं, इसलिए आप भी उदार हृदय से उनके प्रति समानता का व्यवहार रखें। इससे परिवार मे बहुत से झगडे तो जडमूल से नष्ट हो जाएंगे।

निष्पक्ष रहें

परिवार के झगडों को कभी युद्ध की चुनौती के रूप में मत मानिए। किसी को दोषी और किसी को निर्दोष घोषित करने की जल्दबाजी नहीं करें। समस्या को समझें, हो सके तो बिना किसी को दोषी सिद्ध किये उसकी कमजोरी या भूल का सुधार कर दें। त्याग, [illegible] और निष्पक्षता से गृह-कलह को समाप्त करने का प्रयास करें।

मितव्ययिता का आदर्श रखें

[illegible]

अपने रहन-सहन में, खर्चो में, अनावश्यक जेवर या सुख सुविधाओं के सामान आदि में धन का पानी की तरह बहाना कोई समझदारी नहीं है। बडे से बडे धनी घराने फिजूलखर्ची से बर्बाद हो गए हैं। आय का विचार करके व्यय करना और अनावश्यक खर्चो पर नियंत्रण रखना कुशल गृहपति की पहचान है। कंजूसी एक अलग बात है, किन्तु सादगी और मितव्ययिता से जीवन गुजारना एक समझदारी है। प्रदर्शन आडम्बर कभी-कभी 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत चर डालते हैं। धन का अनावश्यक प्रदर्शन करने वाले कभी-कभी घर बैठे आफत बुला लेते हैं। धन का अधिक प्रदर्शन पडोसियों में ईर्ष्या पैदा करता है। सरकारी अधिकारियों की नजरों में चढता है। चोर-लुटेरे बदमाश उसको अपना शिकार बनाने को ताकते हैं। फिजूलखर्ची से बच्चों की आदतें बिगड जाती हैं। परिवार की महिलाए भी अपनी मर्यादा से बाहर चली जाती हैं। युवक अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों के शिकार हो जाते हैं। इसलिए आपके पास कुबेर का खजाना ही क्यों न हो परन्तु अपने व्यवहार में संयम-सादगी और मितव्ययिता रखेंगे तो आप सभी के लिए आदर्श बने रहेंगे। परिवार को भी सादगी की शिक्षा दीजिए और [illegible]

[illegible]

बढिया स्वाद भी लिया होगा?

यह लिप्टन कौन था?

पूरा नाम था टामस लिप्टन। चाय का महान विशेषज्ञ।

लिप्टन ने चाय चखने और उनका मिश्रण करने मे विशेष योग्यता प्राप्त की और व्यापार मे लाखो कमाए। उसका व्यापार बढा और आज 6000 से भी अधिक उसकी कम्पनी के एजेन्ट ससार भर मे फैले हुए है। उसके व्यापार की ख्याति दूर-दूर तक फैली है। उसके कर्मचारी सदा उससे सतुष्ट रहे, क्योकि उसने सबको भरपूर वेतन दिया। लिप्टन की उन्नति का क्रम कैसे चला? इस सम्बन्ध मे वे स्वय कहते है-

''मै प्रारम्भ मे एक स्टेशनरी की दुकान पर दस शिलिग प्रतिमाह पर नौकर था। जिन्दगी मे मै केवल किफायतशारी के नियमो पर चलकर ही अपने व्यापार को बढा सका हूँ। जो काम मै स्वय कर सकता हूँ, उसे दूसरे पर नहीं छोडता, जो काम दो डॉलर मे हो सकता है, उस पर सवा दो डॉलर भी खर्च नहीं करता। मैने किसी भी व्यर्थ की जरूरत को अपने पीछे नहीं लगाया है। हाथ रोक करके खर्च करना ही मेरी सफलता का रहस्य है।'' लोग लिप्टन को कजूस कहकर चिढाते रहे। इसकी उसने कभी परवाह नहीं की। आज उसे चिढाने वाले मर चुके है। पर लिप्टन का नाम आज अमर हो गया। उसका कारण उनकी मितव्ययिता ही थी। उनका नाम आज भी लोगो की जिह्वा पर है।

श्रम को महत्त्व

परिवार के सभी सदस्यो को श्रमशीलता की शिक्षा दीजिए। आलस्य दरिद्रता की माँ है और रोगो का पिता है। श्रम मनुष्य को स्वाभिमानी रखता है। स्वस्थ रखता है। चाहे आप कितने ही नौकर रखने मे समर्थ हे, फिर भी अपना काम अपने हाथ से करने की आदत रखे। आपका आदर्श परिवार मे भी उतरेगा और परिवार के सभी सदस्य श्रम से प्राप्त सुख का अनूठा आनन्द ले सकेगे।

सेवा का अवसर मत चूकिए

सेवा सबका दिल जीत लेती है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को यह सस्कार दीजिए कि वह छोटे-बडे के भेद के बिना जिसको भी ज्यादा जरूरत हो उसकी सेवा करे। मदद करे। खासकर वृद्धो, रोगियो और बच्चो की सेवा के अवसर पर कभी पीछे नहीं देखना चाहिए। परिवार मे कोई भी बीमार पडे, चाहे आपका नौकर ही क्यो न हो, उसकी सेवा और देखभाल करने से उसके मन मे आपके प्रति गहरी आत्मीयता और सम्मान बढता है। सेवा करने वाला सबका स्नेह पात्र होता है। इसलिए जिस परिवार मे सेवा के सस्कार होते है वह परिवार सभी के लिए आदर्श होता है।

और उपसहार मे अतिम यह बात हे कि अपने परिवार को आत्मिक दृष्टि से समुन्नत, सद्गुणी, चारित्रसम्पन्न बनाने के लिए उसे धार्मिकता, स्वाध्यायशीलता और परोपकार की भावना से ओत-प्रोत बनाने का प्रयास कीजिए।❖

आत्मा का आलोक

आ. श्रीमद्विजय वीरेन्द्र सूरिश्वरजी म., बीकानेर

प्रभुता और पशुता, मृत्यु एवं अमरता दोनों ही मानव जीवन में निहित हैं। प्रसुप्त है। पशुता में मृत्यु है। प्रभुता में अमरता है। पशुता में विवेकहीनता है। मूढता है। क्रूरता एवं कठोरता पशुता की स्थिति है। कोमलता, दयालुता, मानवता एवं मैत्री के दिव्य गुणों से ओतप्रोत जीवन प्रभुतामय है। मानव जीवन में गुणों को पाने के लिए, मुक्ति मंजिल की प्राप्ति के लिये जीवन में साधना की नितांत आवश्यकता है। विज्ञान युग में भौतिक साधनों ने मानव को अशांत एवं बेचैन कर दिया है। धन की दौड में मानव अंधा हो गया है। उसकी मानसिक शांति भंग हो गई है। आत्मिक एवं मानसिक शांति अध्यात्म साधना द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। अध्यात्म साधना के बिना शांति भी असंभव है। परम शांति के द्वार को खोलने की चाबी अध्यात्म साधना में है। मन की चंचलता अशांति का कारण है। चंचलता का कारण रागद्वेष की वृत्ति है। मन की गति विद्युत एवं प्रकाश से भी अधिक है। दिन-रात वह परिभ्रमण करता रहता है। व्याकरण एवं न्यायशास्त्र का अभ्यास सरल है। [illegible] में समुद्र को लांघना सरल है। पृथ्वी को तौलना सरल है। [illegible] भाषण देना सरल है [illegible]

आत्मध्यान एवं अरिहंत भगवान के आलंबन से मन शांत होता है। मन की शांति में आत्मशांति निहित है। मन की स्थिरता से आत्मशांति उपलब्ध होती है। मन की स्थिरता के लिए प्रारंभिक भूमिका में साधक के लिये शुद्ध आलंबन जरूरी है। अरिहंत भगवान का, पंच परमेष्ठी का आलंबन सर्वोत्तम आलंबन है। पंच परमेष्ठीरूप नमस्कार महामंत्र का आलंबन परम मंगलकारी है। इसके निमित्त से असंख्य साधकों ने आत्म-स्वरूप को प्राप्त किया है। आत्म कल्याण को पाया है। मन को स्थिर करने के अनेक रास्ते हैं। जिसमें एक पदस्थ ध्यान भी है। नमो अरिहंताणं या अर्हं नमः पद को श्वासोश्वास के साथ जोडकर ध्यान करने से भी मन केन्द्रित होता है। पदस्थ ध्यान जो आलंबन स्वरूप है वह भी कर्म निर्जरा का कारण है। कहा भी है-

त्वमात्मान शिवं ध्यात्वा स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तव ।

प्रभु पार्श्वनाथ जी के इस स्तोत्र में कहा है कि परमात्मा का ध्यान करने वाला स्वयं परमात्मा स्वरूप बन जाता है। परम पद की प्राप्ति के लिये ध्यान यह परम साधन है। ध्यान [illegible] में कहा गया है-

मोक्षोऽति कर्मक्षयतः प्रदीत.,
कर्मक्षयो ज्ञान चारित्र्यतश्च ।
ज्ञानं स्फुरद्ध्यानत एवं शास्ति,
ध्यानं हितं तेन शिवार्थिनाम् ॥

सर्वथा कर्मक्षय होने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। ज्ञान एव चरित्र से कर्म क्षय होते हैं। निर्मल ज्ञान की प्राप्ति भी ध्यान से है। परम पद के यात्री के लिये ध्यान यह परम पथ है।

एक बार कुछ डाकुओ ने अपने सरदार के सथ नगर मे प्रवेश किया। राजा के 3 वर्ष के लडके को उठाकर ले गये उसे अपने पास रखा, और अपनी विद्या सिखाई। मनुष्य को जेसी सगति मिलती है वैसा ही वह बन जाता है। कहावत है-''कालिए के साथ गोरा रहे, तो रग तो नहीं आवे लखण तो आवे।'' बुरे सग से अच्छा लडका बिगड जाता है।

हीनतणो जे सग न तजे, तेहमा गुणनव रहे ज्यु जलाधि जलमा पडयु, गगानीर नणपणु लहे।

गगा का निर्मल और मीठा पानी भी सागर मे मिलता है तो क्या होता है? खारा बन जाता है। वेसे ही अच्छा मानव भी (गुणहीन) बुरे की सगति से बिगड जाता है। 100 (केरी) आम के बीच एक सडी हुई आम रखो तो क्या होता है? वह दूसरे आमो को बिगाड देता है। बेकार घास जब गाय के पेट मे जाती है तो दूध बन जाता है। पवित्र दृध सॉप के पेट मे जाता हे तो क्या बन जाता है? जहर बन जाता है। राजकुमार डाकू की औरत को ही अपनी मॉ समझने लगता है ओर डाकू को पिता। लूटना, चोरी करना, मारना वह भी करने लगता है। शरीर मे शक्ति है तो अच्छे काम करने चाहिये। राजकुमार डाकू हो गया। वह कौन है? राजकुमार राजा का लडका है। वह कौन? राजकुमार राजा का लडका है पर इसका उसे भान नहीं है। वह तो अपने को भी डाकू का लडका समझता है। आज हम भी अपने आपको भूल गये कि मै कौन हूँ? हमने शरीर को ही अपना मान लिया हे। शरीर बीमार होने पर घबरा जाते हो।

आण्यो पण ओलखो नहीं मनुष्य जन्मनो मर्म।
बटुक रोटला माटे जीव क्रोडगणा बाधे छे कर्म॥

मानव बनकर भी मानव जन्म का मर्म नहीं समझा। पर की चिता मे उलझ गया है। मानव की तृष्णा कभी मिटने वाली नहीं है। कपिल केवली ने कहा-

कसिण पि जो इम लोय पडिपूकदलेज्ज इक्करसा।
तेवाविसे न सवुस्से, इइ दूप्पूरखु इमे आया॥

सोने और चॉदी के सिक्को से सपूर्ण लोक को भर दो ओर वह किसी आदमी को दे दो फिर भी वह सतुष्ट नहीं होगा। ऐसी विशाल तृष्णा है। मन पर घोडे की लगाम जरूरी है। हर साझ वेदना, एक नई, हर भोर सवाल नया देखा। दो घडी नहीं आराम कहीं, मैने घर-घर जाकर देखा। राजकुमार अपने को डाकू का लडका समझता है। एक बार वह शिकार करने निकलता है। बीस वर्ष का जवान लडका है। शरीर म स्फूर्ति है। गौरवर्ण होने से देखने मे भी अच्छा लगता है। उधर राजा भी शिकार करने निकलता है। दोनो की जगल मे भेट हो जाती हे। राजा उस राजकुमार को देखता है। उसके हृदय मे (वात्सल्य) प्रेम पैदा हो जाता है। उसे देखते ही वह प्रसन्न हो गया।

वह बोला-''तू कौन है?, कहॉ से आया

है?''

राजकुमार ने कहा-''मैं डाकू के सरदार का लडका हूँ, और शिकार करने जा रहा हूँ।

राजा-''तेरा पिता कहां है? लडका वह बिमार है।''

सगा बाप सामने खडा है पर राजकुमार उसे जानता नही है।

राजा ने कहा-''चल मैं तेरे बाप को देखना चाहता हूँ। तू मुझे ले चल।''

राजकुमार उसे ले जाता है। डाकू का सरदार बिस्तर पर पडा है।

राजा पूछता है-''सच बताओ यह लडका किसका है।''

सरदार-''मेरा है।''

राजा-''राचमुच तेरा है?''

रारदार ने पूछा-''आप कौन हैं? ओर गह क्यों पूछ रहे हैं।''

राजा ने कहा-''मैं वैशाली का राजा हूं। बहुत समय पहले मेरा एक लडका खो गया था।''

सरदार ने कहा-''अब मैं मरने के किनारे हूं और तुम्हे सच-सच बता देता हूं।

मौत को आज तक कोई रोक न सका। शब्द को टेप में कैद किया जा सकता है। चित्र को कैमरे में कैद किया जा सकता है। स्वाद को फ्रिज में रखा जा सकता है। सुगंध को बोतल में रखा जा सकता है। किन्तु मौत को कोई कैद करने की मशीन है क्या?''

एक बार मै वैशाली लूटने गया था, वहीं से इस राजकुमार को ले आया हूं। मेरे संतान नहीं थी। अतः मैंने इसे पाला-पोसा, बडा किया।''

राजा ने कहा-''यह तो मेरा लडका है। मेरे भी संतान नही है। इसे मुझे दे दो। मै तुम्हारा उपकार मानूंगा।''

सरदार ने कहा-''आप ले जा सकते हैं। लडका आपका ही है। मुझे देने में दुःख नहीं है। पर इसे मैंने अपनी विद्या सिखाई है। इसका जरा ध्यान रखना।

राजकुमार अब अपने को वैशाली का राजकुमार समझता है (डाकू का नहीं) मुझे तो यह उठाकर ले आया है। मैं लुटेरा नहीं हूं। वह सत्य समझ लेता है।

राजा उसे वैशाली ले जाता है। उसका राज्याभिषेक कर देता है। लडके ने अपना स्वरूप पा लिया।

हमें भी अपनी आत्मा के स्वरूप को प्राप्त करना है। यह आत्मा ज्ञानमय, दर्शनमय एवं चारित्रमय है। अनंतज्ञान का मालिक है सुख का स्वामी है। गुणों का भंडार है। संसार में भटकी हुई आत्मा भी परमात्मा का स्वरूप पाने से वंचित है। ❖

धर्म और जीवन व्यवहार

मुनि श्री विचक्षणविजय जी म सा , जयपुर

सत्य विराट है । जिसने सत्य विराट का साक्षात्कार नहीं किया, जिसने अपने भीतर घुसे हुए सत्य को नहीं देखा उसे पता नहीं होता कि दुनिया क्या हे? हम जिस विश्व से परिचित ह उसम लगभग 6 अरब आदमी रहते ह । आबादी वढ रही है, निकट भविष्य म सात अरब आदमी हो जायेगे । इस दुनिया मे करोडो पदार्थ है, हजारो नगर ओर लाखा करोडो गॉव ह । लगता हे दुनिया वहुत बडी है किन्तु जो व्यक्ति आत्मा को ही नहीं केवल इस स्थूल शरीर को ही भलिभाति जान लेता हे तो उस ज्ञात हा जाता है कि इस शरीर की दुनिया के समक्ष यह विश्व छोटा सा हे, नगण्य है । एक मस्तिष्क भी इतना विशाल हे कि उसकी तुलना हृदय जगत की कोई भी वस्तु नहीं कर सकती । धर्म की सबसे बडी विशेषता है अपने आपको जानना ।

ससार मे आस्तिक भी है और नास्तिक भी है । एक नास्तिक अपने आपको नहीं जानता इसमे कोई आश्चर्य नहीं होता किन्तु एक आस्तिक कहलाने वाला व्यक्ति जव अपने आपको नहीं जानता तो यह सबसे वडा आश्चर्य हे । कौन आस्तिक है यह बहुत जटिल प्रश्न है ।

सामान्यत नास्तिक वह है जो आत्मा और परमात्मा को नहीं मानता, पूर्व जन्म आर पुनर्जन्म को नहीं मानता, कर्म और कर्म के फल को नहीं मानता । कर्म को भोगे बिना छुटकारा नहीं मिलता, इस बात को भी नहीं मानता । अच्छे काय का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा इसे भी नहीं मानता ।

आस्तिक वह होता है जो आत्मा आ परमात्मा को मानता है । धर्म ओर कर्म को मानत है, पूर्व जन्म ओर पुनर्जन्म मे विश्वास करता है किन्तु जीवन के व्यवहार क्षेत्र म जहाँ आस्तिक आर नास्तिक का भेद मालूम न पडे ता कहना चाहिए कि नास्तिक खुला हे ओर आस्तिक प्रच्छ नास्तिक हे । मानो कि खुले कुए पर चादर बिछ दी गई है, किसी को पता भी नहीं चलता कि यह कुआ हे । अत उस चादर पर बैठने वाला सीध कुए मे जा गिरता है । अत खुले कुए मे इतना खतरा नहीं होता जितना ढके कुए से होता है। खुला नास्तिक इतना बुरा नहीं होता जितना ढका आस्तिक हाता है दुनिया को खतरा उन्हीं आस्तिको से है जो सिर्फ वाणी से आस्तिक हैं और व्यवहारत नास्तिक से भी दो कदम आगे हे । वह एक ऐसा कुआ हे जो जमीन के बराबर ह और जिसके ऊपर एक कपड़ा ढका हुआ ह । लोग पूजा उपासना करते है, भजन कीर्तन करते ह, सकल्प लेते ह, जाप भी करते हे फिर भी उनका

मन विषय पर एकाग्र नहीं होता। एकाग्रता के बिना सारी उपासना व्यर्थ है। उपासना में चित्त संलग्न नहीं है, चित्त कहीं अन्यत्र घूम रहा है शरीर कहीं अन्य स्थान पर स्थित है तो फिर उस साधना से लाभ ही क्या? बिना चित्त की एकाग्रता के कोई साधना होती है ? हमारा समूचा धर्म मन की एकाग्रता होने पर ही होता है, मन की एकाग्रता के बिना धर्म का कोई अर्थ नहीं होता। जब हम मन की एकाग्रता नहीं साध पाते तब धर्म कैसे करेंगे? धर्म के लिए अनिवार्य है मन की एकाग्रता। मन बंदर की तरह चंचल है बन्दर स्वभावतः चंचल होता है। यदि उसने मदिरा पी ली तो चंचलता और बढ गई। इतने मे बिच्छु ने डंक मार दिया तो चंचलता और बढ गई। कहीं से भूत उसके शरीर में प्रविष्ठ हो गया। अब तो उसकी चंचलता का कहना ही क्या, मन भी ऐसा ही चंचल है। यदि मन शांत होता है तो दुनिया दूसरी होती है। मन चंचल हो जाता है तो दुनिया दूसरी होती है। विश्व की समस्याओं का मूल है मन की चंचलता। भारतीय दर्शन का सबसे बडा अनुदान है मन की चंचलता को समाप्त करना।

आज प्रत्येक आदमी चंचलता से पीडित है। एक अर्थ में कहा जा सकता है कि प्रत्येक आदमी चंचलता से संचालित हो रहा है। धर्म रूपांतरण की प्रक्रिया है। यदि रूपांतरण घटित नहीं होता है तो मानना चाहिए कि उसकी उपासना गलत तरीके से हो रही है। आज धर्म [illegible] रहा है, आदमी में कोई रूपांतरण नहीं हो रहा [illegible] [illegible] [illegible]

रहा ? क्या आज का धार्मिक एक कोलहू के बैल जैसा नहीं है? जो दिन भर चक्कर लगाता है पर पहुंचता कहीं नहीं है।

आज का धार्मिक व्यक्ति उपासना किये जा रहा है पर कहीं पहुंच नहीं पा रहा है, जहां था वहीं का वहीं है। मार्कस ने लिखा था-भारतीय दर्शन और दार्शनिक सिद्धांत की बातें बहुत करते हैं किन्तु समाज को बदलना नहीं जानते। मैं उनके विचारों से पूर्णतः सहमत नहीं हूँ। भारतीय दर्शन ने बदलने की बात को प्राथमिकता दी थी किन्तु आज का धर्म हमारे लिए तृप्ति का साधन बन गया, बदलने का साधन नहीं रहा। इस अर्थ में मार्कस का कथन एकदम असत्य भी नहीं है।

धर्म और बुराइयां दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। दोनों साथ साथ चलते हैं तो मानना चाहिए कि धर्म का अवतरण नहीं हुआ है। दुकान खुली थी पिता ने पुत्र से पूछा- आटे मे मिलावट कर दी?, हां! मिलावट कर दी। मिर्ची में मिलावट कर दी? हां ! पिताजी सारा काम सम्पन्न हो गया। हां पिताजी !

अच्छा बेटे चलो अब महाराज का व्याख्यान सुनने चलें। कैसी विडम्बना है कि मिलावट करने में भी आगे और व्याख्यान सुनने में भी आगे। ऐसे व्यक्ति सभी जगह मिलते हैं जो मिलावट करेंगे। धर्म सुनेंगे तो उसमें भी मिलावट ही करेंगे। ऐसी स्थिति [illegible] [illegible] बिना नहीं रहते।

[illegible]

पूछा-सेठजी आपने कथा का साराश क्या समझा?

सेठ ने कहा- इस कथानक मे मुझे दुर्योधन के चरित्र ने बहुत पभावित किया। कृष्ण के कहने पर भी दुर्योधन न दृढता के साथ कहा- केशव! आप पाडवो को पाच गाव देने के लिए कह रहे है पर मै युद्ध किये बिना उनको सुई की नोक पर टिके उतनी जमीन भी नहीं दूगा।

सेठ ने कहा-पडित जी मने भी यह निश्चय कर लिया है कि जीवन मे कभी भी किसी को कुछ नही दूगा।

सचमुच जिनके जीवन मे किसी तरह का परिवर्तन नहीं आता व धर्म क्षेत्र मे मिलावट ही करते हे ओर उसी बात को पकडते है जो उनके स्वार्थ की पूर्ति करने वाली हो। वो कहीं भी अच्छाई को नही पकडते हे। बुराई को ही पकडते है। वास्तव म वो धर्म गुरुओ को ही नहीं भगवान को भी धोखा देते हे। अपने आपको भी धोखा देते है।

साधक वह होता है जो अपने आप को जीत लेता है। प्राय हर आदमी मन के इशारे पर चलता है। साधक वह होता है जो मन को अपनी इच्छा के अनुसार चलाता है। हर आदमी वोलकर अपनी बात को प्रकट करना चाहता है किन्तु साधक वह है जो बिना बोले ही अपन भावो को बिखेर देता हे। गुरु का मौन व्याख्यान होता हे और शिष्यो के सशय दूर हो जाते ह। हर आदमी हलचल करके दुनिया मे अपना पुरुषार्थ दिखाना चाहता हे। साधक वही है जो शात रहकर सारी वृत्तियो का सचालन करता ह। आज लोग ऐसे साधको की पूजा-अर्चना करते है किन्तु उनक जीवन मे परिवर्तन नहीं आता। वे समझते ह वि पूजा का काम सम्पन्न हो गया। सारे के सारे पा धुल गये। पूजा भी तन्मय होकर करते है। हान तो यह चाहिये कि महापुरुषो ने जो साधना क उसको जीवन मे उतारने का प्रयत्न करे। किन् मनुष्य साधना नहीं चाहते, तपना नहीं चाहत खपना नहीं चाहते, उस मार्ग पर चलना न चाहते। वे चाहते है बडे साधको का आशीर्वा मिल जाये, उनकी छत्रछाया मिल जाये, उनव वरदहस्त मिल जाये बस फिर हम चाहे जो क हमारा काम सफल होगा।

मैने एक धार्मिक व्यक्ति से पूछा-तुम द नम्बर का खाता क्यो रखते हो?

उत्तर था-महाराज हम गृहस्थ ह, हमे सब कुछ करना पडता हे।

यह आरोप है धार्मिक होना ओर झूठा व्यवहार होना दोनो मे तालमल नही हे जो दवाइयो मे आर खाद्य पदार्थो मे मिलावट करते ह क्या वे दूसरा के प्राणो के साथ खिलवाड नहीं करते? क्या दूसरो के प्राणो के साथ खेलना हिंसा नहीं है? क्या यह क्रूर कर्म नहीं ह?वस्तुत धार्मिक वह है जिसके मन मे दया हे, अनुकम्पा हे, करुणा है। जिसके मन मे करुणा नहीं होती, दया नहीं होती, अनुकम्पा नहीं होती वह किसी भी अर्थ मे धार्मिक नहीं हो सकता। आज व्यवहार ओर धर्म के बीच इतनी वडी दरार पड गई है कि जिससे धार्मिक क्षेत्र बहुत ही बदनाम हो रहा हे धर्म के प्रति लोगो मे आस्था नहीं हे। श्रद्धा नहीं है। धार्मिको के व्यवहार के प्रति अनास्था।

आज का धार्मिक धर्म की क्रियाएं करता जाता है और अधर्मयुक्त व्यवहार भी करता रहता है। आज आत्मलोचन की आवश्यकता है। अपने अंदर हमें झांककर देखना चाहिए कि जीवन में धर्म से कोई रूपान्तरण आ रहा है या नही?

यदि परिवर्तन आता है तो उसका प्रतिबिंब व्यवहार में अवश्य आयेगा। उसका व्यवहार धीरे-धीरे बदल जाएगा। आज धार्मिक व्यक्ति इस विश्वास पर चलता है कि धर्म करो परलोक सुधर जाएगा। इस सूत्र को बदल देने की जरूरत है। अब आज का सूत्र यह होना चाहिए कि धर्म करो वर्तमान जीवन सुधर जाएगा जीवन का प्रत्येक क्षण सुधरेगा। जिस क्षण में धर्म किया उस क्षण में यदि आनन्द नहीं मिला, चेतना नही जगी, शक्ति का जागरण नही हुआ तो समझना चाहिए कि धर्म नही किया, धर्म के नाम पर कुछ और ही कर लिया है। धर्म का साक्षात लाभ है चेतना का जागरण, धर्म का लाभ है शक्ति का जागरण, धर्म का लाभ है आनन्द की परम शांति की उपलब्धि। आज विपरीत क्रियाएं चल रही है। जब तक वह विपर्यय नहीं हटेगा तब तक धर्म तेजस्वी नहीं बन सकेगा।

धर्म है त्याग। त्याग की शक्ति असीम है। वह लोटे को सोना बनाने वाले पारस को भी ठुकरा सकती है। त्याग के बिना दुनिया में कोई शक्ति ऐसी नहीं है जो धन के भौतिक पदार्थों के व्यामोह को छुडा सके। बडे-बडे अरबपति और धन कुबेर धन के पीछे दौड रहे है बड़े बड़े सम्राट धन के पीछे पागल होकर भटक रहे है। अरबपति और सम्राट जितने बडे भिखारी होते है उतना भिखारी कोई नही होता। यह लालच की आग बड़े लोगों में जितनी अधिक प्रज्जवलित होती है उतनी छोटे लोगों में नहीं होती। धन के आग में वह शक्ति नहीं है जो धन को ठुकरा सके। धनवान धन को नहीं छोड सकता, वह बांधता है। त्याग ही धन को धूल समझकर छोड सकता है।

धर्म स्थान पर जाने का एकमात्र उद्देश्य है जीवन मे त्याग की शक्ति का संवर्द्धन हो। पर आज होता कुछ और ही है। लोग धर्म स्थानों पर आशाओं की पूर्ति की भावना लेकर जाते हैं। इस स्थिति में हम कैसे आशा करें कि धर्मस्थान में जाने से जीवन व्यवहार सुधरेगा।

अतः धर्म को जीवन के व्यवहार में उतारकर आत्मा का कल्याण करें।

इसी शुभ भावना के साथ। ❖

श्री जिनेन्द्र देव की वाणी रूप अमृत जिनागम शाश्वत [illegible] पद को देता है, और [illegible] [illegible]

सन्तोषी नर सदा सुखी

आ श्री दर्शनरत्नसूरिश्वरजी म , दिल्ली

जैसे मेरू पर्वत के नन्दन वन का आनद देव एव विद्याधर देव एव विद्याधर ही ले सकते है, वैसे सन्तोष का आनन्द साधु ही प्राप्त कर सकता है । साधु बनने के अभिलाषी को भी आशिक सतोष हो सकता है । परन्तु पुरुषार्थ सिर्फ मोक्ष के लिये करने जैसा है ऐसा माने तो सतोष का आनद साधु ही ले सकते है । यह कहने का हेतु एक ही है कि सब अशुभ पापो का त्याग साधु ही कर सकते हे । जिसका पुरुषार्थ सिर्फ मोक्ष के लिये हो उसी को ही सतोष होता है । मोक्ष सिवाय का पुरुषार्थ (प्रयत्न) तो धर्म क्रिया मे भी क्षुद्रता लाता है ।

सतोष वाला नया पैसा भी न हो तो भी सुखी है ओर सतोष बिना का अरबोपति भी दु खी है । पुणिया श्रावक के चौबीस घटे समाधि (शाति) मे बीतते थे और अढलक सपत्ति वाले मम्मण शेठ के चोबीस घटे उपाधि मे बीतते थे । भगवान महावीर देव ने मम्मण शेठ की प्रशसा नहीं की क्योकि उसका उद्यम तो मारने वाला था । उसके उद्यम से ही प्राप्त लक्ष्मी ने उसको सातवीं नरक मे भेज दिया । बहुत से श्रीमत ऐसे है कि लक्ष्मी आते ही उसके शरीर के रोग भी साथ मे आते है । इसको इतना-मुझे क्यो नहीं यह असन्तोष है । मुझे इसके बिना कहा रुकता है ऐसा सोचना सतोष है । मेरा कार्य चल ही रहा है । असन्तोष पतन की सीढि है । योगशास्त्र मे लिखा है कि-

-जिसके पास सतोष हे उसके चरणो म लक्ष्मी आ लौटती है, कामधेनु उसका अनुसरण करती है एव देव उसकी सेवा करते ह ।

-धन, धान्य, सोना, चादी, आभूषण, खेत, मकान, नोकर (चाकर), गाय (चार पैर वाले) आदि बाह्य परिग्रह नव है ।

-राग, द्वेष, कषाय, शोक, हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, वेद, मिथ्यात्व ये 14 आन्तर (अन्दर के) परिग्रह हे ।

-बाह्य (बाहर के) परिग्रह से प्राय आन्तर परिग्रह का उपद्रव बढता है जेसे वर्षा से कुत्ते का हडकायापन, सर्प के उपद्रव बढते हे वैसे ।

-वैराग्य आदि महावृक्षो को असन्तोष जड़ से उखेड देती है ।

-असन्तोषी यदि मोक्ष की इच्छा करता हे तो वह लोहे की नाव से समुद्र तेरने की इच्छा करने जैसा मूर्ख है ।

-असन्तोष धर्मनाश करने वाला हे एव क्रोध रूपी आग मे घासलेट डालने के समान है ।

-जो असन्तोषी हे वह बिचारा आन्तर परिग्रह कैसे जीतेगा ?

-असन्तोष अज्ञान का बगीचा हे, विपत्ति रूपी जलजन्तुओ के लिये समुद्र के समान हे । तृष्णा रूपी वडी लता का अकुरा हे ।

वडा आश्चर्य है असन्तोषी त्यागी संतों पर भी परिग्रह की शंका करते हैं।

-असन्तोषी को राजा, चोर, आग, पानी एवं पार्टी डूब जायेगी तो इस भय से रात्रि में नींद भी नहीं आती।

-असन्तोषी सुकाल, दुष्काल, नगर या जंगल सर्वत्र शंका से व्याकुल होने से दुःखी होते हैं।

-असन्तोषी धनोपार्जन में, व्यय में, रक्षण में, नाश में सर्वत्र कान में रखे भाले के समान दुःखी है। लाख रुपये वढें तव दुःख बढा या सुख वढा, फिर भी दुःख लगता नही क्योंकि आसक्ति है। दुःख में भी सुख की कल्पना है। क्लोरोक्वीन के इन्जेक्शन वाले को काटने पर भी नहीं लगता। घर में चाय में शक्कर डालना भूल जाने पर असन्तोषी कप फेंक देते हैं तो उनकी घर वाली भी मजाक करती है कि क्या हो गया क्या तुम्हारी भूल नही होती। यदि संतोष रखकर चाय पी जाय और शाम को कहे कि देखो मेरे तो चाय में शक्कर नहीं हो तो भी चलता है परन्तु मेहमान आवे तो कैसा हो? तो उसकी असर जरूर होगी। बाजार में नई सब्जी आई, नहीं खरीद सका तो घर आकर रोज टेस्ट (मजे) से खाता था वह सब्जी भी नहीं रुचती। क्योंकि असन्तोष याद दिलाता है कि वह सब्जी नहीं आई। और यदि सन्तोष रखे कि कोई नहीं पर [illegible]

[illegible]

आये तव चिढता है जैसे कुत्तों से कुत्ते।

-यमराज की दाढ में रहा हुआ आयुष्य होने पर भी असन्तोषी धनार्जन, धन को बचाना, बढाने की इच्छा नहीं छोडता।

-असन्तोषी को डाकण जैसी धन की इच्छा उच्छृंखल हो जाती है तब खूब विडम्बना का भागी बनता है।

-असन्तोषी को यदि धर्म एवं मुक्ति रूपी साम्राज्य पाने की इच्छा हो तो संतोष धारण करे।

-स्वर्ण एवं मोक्ष रूप नगर के प्रवेश को रोकने वाली अर्गला के समान असन्तोष है।

-धन की इच्छा डाकण है, विष की लता है, भयंकर शराब है। ऐसे सभी दोषों को पैदा करने वाले असन्तोष को धिक्कार हो।

-जिन्होंने सन्तोष धारण कर लिया वे धन्य है, वे पुण्यशाली है और वे दुःख रूपी सागर को तैर गये।

-दुःख की खान समान, गुण की आग एवं दोषों की माला समान एवं पाप की लता ऐसा असन्तोष को जो जीत लेता है वह सुख [illegible] है।

-असन्तोष धर्म और समाधि [illegible] नष्ट कर देता है। असन्तोषी [illegible]

[illegible]

हे एव सन्तोषी तीन जगत को दास बनाता हे ।

-जिसने बुढापे मे भी सन्तोष धारण नहीं किया उसे सुख कहाँ से हो?

जिसके बाल भी सफेद हो गये अब भी असन्तोष है, क्या फायदा होगा?

-असन्तोष से मिलने वाली वस्तु भी चली जाती है असन्तोषी की इच्छा तो पूरी दुनिया का धन अपना बनाने की होती है। इच्छा से मिल जाय यह स्वप्न मे भी दुर्लभ है।

-जो वस्तु खूब प्रयत्न से नहीं मिलती वे सन्तोषी को क्षणमात्र मे मिल जाती है।

-यदि पुण्योदय हे तो असन्तोष व्यर्थ है, यदि पुण्योदय नहीं है तो भी असन्तोष व्यर्थ हे।

-जो सन्तोषी है वह ही विद्वान हे, पण्डित है, बुद्धिशाली पापभीरु एव तपस्वी हे।

-सन्तोष मे क्या सुख है वह असन्तोषी को कैसे ज्ञात हो? उपवास मे क्या आनन्द है वह रोज खाने वाले होटलो मे भटकने वाले को कैसे ज्ञान हो?

-जिसने सतोष रूपी बख्तर पहन रखा है उसे इच्छा रूपी बाण कैसे मार सकते है।

-सन्तोषी के एक वाक्य से जो असर होता है वह असन्तोषी के करोडो वाक्यो से भी नहीं हो सकती। सन्तोषी ही मोक्ष पा सकता है।

-परिग्रह के प्रमाण को करके साधु धर्म म अनुरक्त बुद्धि वाले आप साधुवेश को स्वीकार करो।

-अन्य दर्शनीयो से समकिती वढकर ह उससे भी देशविरत (श्रावक) बढकर है।

-असन्तोषी महीने महीने उपवास करके भी जो प्राप्त नहीं करता वह सन्तापी घडी के छठे भाग मे प्राप्त कर सकता है।

साराश—असन्तोष रूपी राक्षस क वश मन को मत करो, सन्तोष धारण करो, साधु धर्म मे श्रद्धा करो जिससे आठवे भव मे माक्ष पाओगे। ❖

अमृत बिन्दु

सग्रहकर्ता श्री दर्शन छजलानी, जयपुर

सचा गृहस्थ जीवन
आतिथ्य ही घर का वैभव है।
प्रेम ए घर का सुख हे।
सदाचार ए घर का सुवास है।
ऐसे घर मे सदा प्रभु का निवास होता है।
देना हो वैसा खर्चा मत करो।
पाप हो वैसा काम मत करो।
क्लेश हो वैसा मत बोलो।
चिन्ता हो वैसा मत विचारो।
रोग हो वैसा मत खाओ।
सचा, मीठा बोलो ओर शान्ति धारण करो।
हक का आहार करो ओर प्रभु का भजन करो।

संवत्सरी का गुंजन - अहंकार का विसर्जन
संवत्सरी का संदेश - क्षमापना

आचार्य श्री जिनोत्तम सूरीश्वरजी म., जोधपुर

क्षमा की पूर्ण प्रतिष्ठा हमारे अन्तस के तमस को दूर कर देती है, आत्म प्रकाश फैला देती है। आज का दिन वर्ष में एक बार आने के कारण संवत्सरी या सांवत्सरिक के नाम से प्रचलित है।

क्षमा शब्द का अर्थ है जाने-अनजाने यदि मन, वचन, काया से किसी प्रकार की कोई त्रुटि हुई हो तो उसके विषय में त्रिकरण से माफी मांगना। क्षमापना का संदेश देता हुआ यह पर्व 'अहंकार विसर्जन' को संवल देता है। क्षमा कहने से या क्षमापर्व मनाने से हमारा जीवन क्षमाशील नहीं बन सकता। क्षमा वह कर सकता है जो शक्ति रहते हुए भी अहंकार के आवरण से आवृत न हो। क्षमा, वह कर सकता है जो अहिंसा को आत्मसात कर चुका हो, अहिंसा को अपने जीवन एवं दर्शन का व्यवहार बना चुका हो। क्षमा वीरों का भूषण है, कायरों का नहीं। कहा भी है-

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

भगवान महावीर स्वामी के जीवन-चरित्र में सर्वत्र क्षमाशीलता के [illegible] है।

धर्म, तप, संयम आदि आराधना के लिए [illegible]

व्यावहारिक जगत में भी यह अनिवार्य तत्त्व है।

वास्तव मे, अहंकार वह विनाशक तत्त्व है, जिससे मानवीय ज्ञान के उत्कृष्ट तत्त्व निर्मूल हो जाते हैं। अहंकार अन्धकार है, विनय प्रकाश। अहंकार क्रोध को जन्म देता है। क्रोध की कराल अग्नि सर्वस्व स्वाहा कर देती है। क्रोध का आवेश अज्ञानता, छिछोरपन तथा असन्तुलित मन एवं मस्तिष्क का परिचायक है।

क्रोध मानवीय जीवन में शैतान का प्रतीक है। शांति, क्षमा, प्रेम, मैत्री आदि दैवी प्रतीक हैं। कहा भी है-

क्रोध तो इन्सान को शैतान बना देता है
अच्छे-अच्छों को हैवान बना देता है।
हमने देखे हैं, जमाने में बोलते पत्थर,
प्रेम तो पत्थर को भी भगवान बना देता है॥

मनुष्य गलतियों का पुतला है। बहुत सावधानी रखने पर भी कोई भूल या त्रुटि हो ही जाती है। त्रुटि या पापकृत्य होने पर हमें अपनी अज्ञानता या मोह आदि का समालोचन करना चाहिए तथा भूल का पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त करना चाहिए।

[illegible]

दुष्कृत्यो का प्रायश्चित ही हे। सनातन धर्म मे सन्ध्या प्रायश्चित का निदर्शन हे। सावत्सरिक प्रतिक्रमण विशिष्ट रूप मे आत्मनिरीक्षण करने का सदेश देता है।

भगवान महावीर का कथन है कि जीवन मे विवेक की कमी होने पर ही दुर्घटना घटती है, अपराध होता हे, त्रुटि होती है। उन्होने पाप के बन्धन से रहित होने के लिए हमे सदेश दिया हे-

जय चरे, जय चिट्ठे, जय आसे, जय सये।
जय भुजन्तो भासतो, पावकम्म न बन्धई ॥

अर्थात् हमारी सारी क्रियाए विवेकपूर्वक होनी चाहिए। प्रमाद का जीवन मे नामोनिशान भी नहीं होना चाहिए। प्रमाद अविवेक की निशानी है। प्रमाद का परित्याग करने वाला सतत साधनाशील व्यक्ति ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता हे।

प्रमाद, कपायो का उद्गम स्थल हे। कषाय हमे जीवनलक्ष्य से भटका देते हे क्योकि प्रमाद की अवस्था मे विवेक-जागृति नहीं रहती। विवेक-जागृति के अभाव मे अनेक भूले होती है, अपराध होते ह। उनका मूल्याकन करने हेतु आज का क्षमापना पर्व हमे सचेत करता है।

क्षमापर्व सवत्सरी का महनीय सदेश हमे सचेत करता हुआ यह भी स्पष्ट करता हे कि ससार के मुख्य शत्रु हे-राग-द्वेप। इनके कारण ही वैमनस्य की भीषण ज्वालाये धधकती है। क्रोध का कालुष्य कटुता फेलाता है, वाणी के सादर्य को नष्ट कर देता हे। वाणी का सौंदर्य सत्य मधुर एव प्रिय बोलने मे हे। वाणी मनुष्य के चरित्र एव सस्कारो को उजागर करती है। सयमित भाषा का सार्थक प्रयोग भी एक प्रकार का तप है। महात्मा कवीर ने ठीक ही कहा है-

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
ओरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥

मन मे प्राणी मात्र के प्रति प्रेम, वाणी म सत्य का सचार, क्रिया मे उदात्त एव उदार भावनाए यदि समाहित हो जाये तो जीवन ज्योतिर्मय हो जाता ह, सुख-चैन की वशी बजने लगती ह, प्रीति का मधुरिम सगीत गूजने लगत है, सद्गुणो की सारभ महकने लगती हे ओर तब जीवन सार्थक हो जाता हे।

धर्मप्रियो! सदा ध्यान रखना कि अहकार मन को छूने न पाये। अहकार की आग से समस्त सत्क्रियाए झुलस जाती हे। नम्रता, सोहार्द्र, क्षमाशीलता ही सफलता का मूलमत्र ह। मूल मत्र पर ध्यान दो। अपने जीवन के प्रत्येक व्यवहार मे इसे क्रियान्वित करो। त्रुटि होने पर तुरन्त क्षमायाचना करो। किसी दूसरे की गलती को भी शीघ्र क्षमा करो। कटुता की गाठ मत बाधो।

आज हम क्षमापर्व सवत्सरी के पावन अवसर पर आत्मशुद्धि के लिए ज्ञात, अज्ञात त्रुटियो की समस्त जीवलोक से क्षमायाचना करत हे तथा कामना करते ह कि सकल जीवलोक हम क्षमा प्रदान करेगा। हम सकल्प लेते ह कि अपने जीवन मे अहिसा की पूर्ण प्रतिष्ठा, विवेक जागृति तथा विश्वमैत्री के लिए सतत प्रयत्नशील रहग। आज का अन्तर्नाद हे-

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेर मज्झ न केणइ॥ ❖

समाधि प्राप्ति के उपाय

गणिवर्य श्री रत्नसेन विजय जी म., पूना

प्रिय संदीप,

हार्दिक धर्मलाभ ।

परम कृपालु परमात्मा एवं सदगुरुदेव की असीम कृपा से आनंद है । आराधना धाम से मुंबई तक लगभग 1000 कि.मी. की हमारी पद यात्रा निर्विघ्नतया चल रही है । प्राकृतिक संपदा से भरपूर दक्षिण गुजरात की सीमा को पार कर कल ही हमारा महाराष्ट्र की धरती पर आगमन हुआ है । संयम जीवन में आज तक मेरा विहार क्षेत्र राजस्थान-गुजरात और मध्यप्रदेश ही रहा था अब एक नए प्रदेश में मेरा प्रवेश हो रहा है ।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला ।

तुम्हारे पत्र को पढने से यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि अब तक तुम काया के रोग से ही ग्रस्त थे...जब कि अब वह रोग तुम्हारे मन के भीतर भी प्रवेश करता जा रहा है और इस कारण शारीरिक अस्वस्थता में आज तक तुम जिस समाधि-भाव को टिकाए रखे थे, वह समाधि भाव धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है और तुम असमाधिग्रस्त बनते जा रहे हो । उस असमाधि के बीच भी समाधि भाव प्राप्त करने की तुम्हारी तीव्र अभिलाषा है ।

संदीप !

शारीरिक अस्वस्थता में समाधि भाव [illegible] [illegible] [illegible] यथाशक्य मार्गदर्शन का प्रयत्न करूंगा ।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यह बात है कि अपनी आत्मा में आत्म स्वरूप की अज्ञानता और मोह के कारण भौतिक सुख और भौतिक सुख की सामग्रियों पर तीव्र राग भाव रहा हुआ है । जिस भव मे जो सामग्री मिली, उस पर तो राग किया ही है परन्तु जो सामग्री नहीं मिली, उन पर भी राग भाव तो रहा हुआ ही है ।

इस जीवात्मा को राग की सामग्री रूप धन, संपत्ति, पुत्र, परिवार, रूपवान और अनुकूल पत्नी, सत्ता आदि की प्राप्ति तो यदा-कदा ही हुई है, जबकि शरीर की प्राप्ति तो प्रत्येक भव में हुई है । धन आदि तो जिस भव में मिले, उसी भव में उन्हें पाने का और उनके रक्षण आदि का प्रयत्न किया है, जबकि शरीर तो हर भव में मिला होने के कारण उसके प्रति तो सबसे अधिक राग सबसे अधिक लगाव रहा हुआ है और इसी कारण धन-पुत्र-पत्नी आदि के वियोग में जितने दुःखी नहीं हुए हैं, उतने दुःखी इस शरीर की अस्वस्थता-पीड़ा आदि में हुए हैं ।

शरीर के प्रति रहे तीव्र राग के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

आदि तली हुई वस्तुएं भी छोड देगा। भोजन के प्रति तीव्र राग भाव होने पर भी शरीर की अस्वस्थता-प्रतिकूलताओ के निवारण के लिए वह कडवी गोली भी ले लेगा, रुखा-सूखा भोजन भी बडे प्रेम से ले लेगा। यह सब शरीर के प्रति रहे राग-भाव का ही तो परिणाम है।

शरीर के प्रति रहे तीव्र राग भाव के कारण ही तो शारीरिक स्वस्थता पाने के लिए और शारीरक रोगो को मिटाने के लिए अपने पसीने की कमाई को भी पानी की तरह बहाने के लिए तैयार हो जाता है। धन और धन के सग्रह मे तीव्र मूर्च्छा-आसक्ति-ममता होने पर भी शरीर के रक्षण के लिए वह धन को छोडने के लिए तत्काल तैयार हो जाता हे। 50-100 रुपये का भी अपनी जिदगी मे कभी दान नहीं करने वाला व्यक्ति हार्ट की बीमारी बॉय पास सर्जरी, केसर की बीमारी व अन्य किसी ऑपरेशन के पीछे एक ही साथ हजारो रुपये खर्च करने के लिए तैयार हो जाता है। इसके पीछे एक मात्र कारण है- धन से भी अधिक शरीर के प्रति तीव्र राग भाव रहा हुआ है। तीव्र काम की आसक्ति के कारण वेश्यागमन आदि के भयकर कुकर्म करने वाला व्यक्ति भी एड्स आदि रोग उत्पन्न हो जाने पर अथवा एड्स आदि की सभावना होने पर, पर-स्त्री आदि के भोग का भी त्याग करने के लिए तैयार हो जाता है। इसके पीछे एक मात्र कारण है- पर-स्त्री के रूप आदि से भी शरीर के प्रति तीव्र राग भाव रहा हुआ है।

शरीर को टिकाए रखने के लिए अथवा शारीरिक अस्वस्थता को मिटाने के लिए हम सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाते है।

आत्म स्वरूप की अज्ञानता के कारण शरीर मे ही आत्मबुद्धि होने से उस शरीर के रक्षण, पालन, पोषण व सवर्द्धन के लिए इस जीवात्मा ने सभी प्रकार के पापाचरण किए हैं।

अन्य सभी वस्तुओ का त्याग करना तो भी सरल है, परन्तु देह की ममता का त्याग करना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य हे।

देहराग व दैहिक सुख के लिए कडरीक मुनि 1000 वर्ष के सयम जीवन को भी छोडने के लिए तयार हो गए थे। सभुति मुनि, रथनेमि आदि के मानसिक पतन का कारण भी यह देह राग था।

असाढा भूति-नदिषेण-आर्द्रमुनि आदि भी दैहिक सुख के राग के कारण ही सयम जीवन से पथ भ्रष्ट बने थे।

एक बात स्पष्ट है कि जिस वस्तु पर हमे तीव्र राग भाव या ममत्व होता हे, उसी वस्तु के वियोग व नाश मे हमे दु खानुभूति होती हे और जिस वस्तु पर हमे कोई ममत्व नहीं हो, उस वस्तु के नाश की न तो हमे कोई चिता होती हे और न ही उसके वियोग मे हमे पीडा का अनुभव होता है।

अखबार के मुखपृष्ठ पर, अमेरिका मे आग लग जाने से किसी व्यक्ति की मृत्यु के समाचार पढते हुए भी आराम से चाय पी लेता है, मृत्यु के समाचार पढने पर भी उसे लेश भी दु खानुभूति नहीं होती है, जबकि अपने घर पर अपने बच्चे को थोडा सा बुखार भी आ जाय तो वही व्यक्ति अत्यत परेशान हो जाता हे। इसके पीछे एक ही कारण है, उस अमेरिकन व्यक्ति के प्रति कोई ममत्व नहीं है, जबकि स्वय की सतान

के प्रति तीव्र ममत्व भाव है।

शरीर के प्रति तीव्र राग भाव है, इसी कारण शरीर की पीडा हमें अधिक सताती है।

सर्वज्ञ-सर्वदर्शी-वीतराग परमात्मा ने देह आदि के राग भाव को तोडने के लिए सर्वविरति धर्म का मुख्यतया उपदेश दिया है। सर्वविरति के स्वीकार द्वारा मात्र बाह्य वस्तुओं का परित्याग करना ही नहीं है बल्कि उन वस्तुओं के प्रति रही हुई तीव्र ममता को तोड डालने का है।

संयम जीवन को स्वीकार करने के साथ ही व्यक्ति संसार के बाह्य पदार्थो का संपूर्ण त्याग कर देता है, परन्तु उस समय भी शरीर तो साथ ही रहता हे, इसी कारण उस शरीर के ममत्व को तोडने के लिए विहार, केश-लोच, गोचरी, स्वाध्याय, आवश्यक क्रियाएं आदि-आदि अनेक कष्ट साध्य अनुष्ठान बतलाए गए है।

संयम जीवन में उन अनुष्ठानों का विधिवत पालन करने से देह पर रहा तीव राग भाव धीरे-धीरे नष्ट होता है।

ज्यों-ज्यों देह का राग भाव कम होता जाएगा, त्यों-त्यों शारीरिक-पीडा आदि मे भी दुर्ध्यान कम होता जाएगा और शारीरिक भयंकर वेदना में भी व्यक्ति संपूर्ण मानसिक समाधि का अनुभव कर सकेगा।

धन, पुत्र, पत्नी व परिवार आदि आत्मा से भिन्न है, इस बात को हर कोई स्वीकार कर लेगा, परन्तु आत्मा शरीर में रही हुई है और शरीर से सर्वथा भिन्न है, इस सत्य को स्वीकार करना, [illegible]

[illegible]

आत्म-बुद्धि होने से मैं शरीर से सर्वथा भिन्न हूं और शरीर के नाश में मेरा कुछ भी नष्ट होने वाला नहीं है, इस सत्य को स्वीकार करना, अत्यंत ही कठिन कार्य है।

शरीर में ही आत्म बुद्धि होने के कारण मिथ्यात्वग्रस्त आत्माएं शरीर के ही रक्षण-पालन और संवर्द्धन में सतत प्रयत्नशील रहती है। शरीर के सुख-दुःख को ही वास्तविक सुख-दुःख समझती है।

आशाता वेदनीय कर्म के उदय के कारण काया रोगग्रस्त बनी है, परन्तु मन को रोग-ग्रस्त बनाना या नही बनाना, यह अपने वश की बात है। मोहनीय कर्म के उदय से ही मन रोगग्रस्त बनता है।

जिनेश्वर भगवंत द्वारा निर्दिष्ट कर्म विज्ञान को अपनी नजर समक्ष रखा जाए तो हम अपने मन को हताशा व निराशा के [illegible] से सर्वथा मुक्त कर सकेंगे।

मैं देह से भिन्न शुद्ध, बुद्ध, निरंजन, निराकार, निर्विकार चैतन्य हूं, ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र आदि मेरी निज-संपदा है, -इस प्रकार का स्पष्ट बोध और प्रतीति [illegible] रखी जाए तो शारीरिक [illegible] भी समाधि को [illegible] रखा जा सकता है।

[illegible]

[illegible]

रात्रि भोजन-जमीकंद त्याग क्युं? एक वैज्ञानिक विश्लेषण

मुनि श्री कमलप्रभसागर जी म , वालवाडा

मेकोले शिक्षण के प्रभाव के साथ पाश्चिमाल्य सस्करण का एक पवन चला । हर चीज मे हर व्यवहार मे परिवर्तन की माग पैदा हो गई । यत्र युग ने फिर एक नया आकर्षण पैदा किया शीघ्रता का एव बाह्य सादर्य का । फिर वहा वस्तु की शुद्धि एव श्रेष्ठता की बात गौण बन गई । जीवन व्यवहार की प्राचीन पद्धतियो के पीछे छिपी हुई पूर्वीय बुजर्गो की दूरगामीद्रष्टि को पहचाने विना उसका विरोध एव त्याग किया गया फलस्वरूप अनेक प्रकार की बीमारियॉ एव कठिनाइया हमने सामने से मोल ले ली है ।

समाज मे ऐसी ही एक दुर्घटना सामूहिक रूप मे दुर्घटित हुई हे रात्रि भोजन एव जमीकद भक्षण की बहुमूल्यवान प्राचीन परपराओ को स्वीकार करने मे रूढिचूस्तता या अधश्रद्धा महसूस होती है तो फायदे नुकसानो को जाने समझे विना विज्ञान की बातो को स्वीकारना फिर अधश्रद्धा नहीं तो ओर क्या कहलायेगी, वो भी पढे लिखो की अधश्रद्धा ! है न कैसी अजीबोगरीव बात !

आज रात्रि भोजन त्याग का उपदेश किसी को दे तो प्रश्न उठेगा कि हम रात्रि भोजन क्यो न करे? यदि 100 वर्ष पूर्व रात्रि भोजन करना चाहता तो पूरा गाव उसकी पूछताछ कर बैठता कि रात्रि भोजन क्यु करना है? क्या तुझे दिन मे पकाने का या खाने का समय नहीं मिलता? क्या तुझे तेरे स्वास्थ्य की कुछ परवाह नहीं है? क्या तुझे रात्रिभोजी बनकर के बिल्ली-उल्लुक-राक्षस आदि निशाचर प्राणी जगत की योनि रुप दुर्गति मे जाना है?

चलो परलोक की पारदर्शी बाते डेरी क दूध व डाल्डा घी से बने हमारे दिल-दिमाग म नहीं बेठेगी, अत इसी प्रश्न को वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे ही सोचे समझे ।

आज का भोतिकवादी भोगप्रचार जीवन केवल लक्ष्मीलक्षी जीवन बन गया ह आर हजारा लक्ष्मीपतियो के स्वमुख से सुनी निजानुभव वाणी से यह स्पष्टतया निश्चित हो गया है कि केवल धन को केन्द्र मे रखकर जीवन जीने मे न तन का स्वास्थ्य सुरक्षित रहता हे और न ही मन का शाति सप्राप्त होती है । यदि ऐसा हो तो वह सपत्तिसुख फिर किस काम का?

मुवई आदि कई शहरो मे धनार्जन हेतु जाने वाले, रहने वालो ने रात्रि भोजन को ऊपरकथित कारण से ही आवश्यक मान लिया कि जो समय सध्याकालीन भोजन का रहता है वही समय ग्राहकागमन का या अधिक धर्नाजन का रहता हे । प्रारभिक काल मे केवल पुरुपवर्ग का शहरो मे जाने का हुआ था फिर तो समूचे परिवार एव गावो के गाव शहरो मे बसने लग गये जीवन

व्यवहार का सारा ढांचा ही बदल गया। फिर जिसको दुकान पर नहीं बैठना था, वैसी महिलाएं एवं बालकों का भी रात्रिभोजन एक दैनिक घटना बन गई। फिर वह बदी गांवों में भी फैली। इस प्रकार एक असामान्य एवं अपवादिक बात आम तौर पर एक सामान्य जनजीवन प्रणाली बन गई। फलस्वरूप हम आर्थिक-शारीरिक-मानसिक सामाजिक आदि अनेक नुकसानों के भागी बनें। हम नुकसानों की चर्चा के पूर्व लाभों की पृष्ठ भूमिका को भी देखें।

हम सभी हिन्दुस्तानवासी सूर्यसंस्कृति के पूजक हैं। प्राचीन से अर्वाचीन काल तक अर्थात् आज तक हम महसूस करते आये हैं कि सूर्योदय के साथ ही समस्त जीवसृष्टि में एक नई रोशनी, एक नई चेतना का संचार होता है मानव गात्र एक अद्‌भुत मनः प्रसन्नता का अनुभव करता है। सभी का दिमाग एक बुद्धिवर्द्धक ताजगी महसूस करता है। प्रायः करके प्रभुदर्शन-पूजन-गुरुवंदन, मातापिता को प्रणाम, प्रतिष्ठा-प्रस्थान, प्रवेश-धनार्जन प्रतिष्ठानों का प्रारंभ, प्रवज्या (दीक्षा) आदि सभी मांगलिक कार्य प्रातःकाल या उसके तुरंत पश्चात् किये जाते हैं। गृहशुद्धि, पटशुद्धि, शरीरशुद्धि, मुखशुद्धि आदि भी सुबह में ही किये जाते हैं। कहें कि सूर्य का उदय पुण्य का उदय है, सूर्य का पदार्पण प्रवृत्तियों की प्रारम्भ बिन्दु है।

परन्तु बात यहीं पर रुकती नहीं है। सूर्य [illegible] पुण्य [illegible] है। सूर्य का गमन [illegible] [illegible] बन जाता है। [illegible]
[illegible]

प्रकाश में प्रकाशमान होते हैं, वैसे दुनियाभर की पापप्रवृत्तियाँ सूर्य के गमन के पश्चात् पनपती है। जैसे कि सूर्य का प्रस्थान जगत को पापस्थान बना देता है। जुआ खेलना, होटल का खाना, क्लब, सट्टेबाजी.. चोरी.. लूटपाट... बलात्कार वेश्यागमन, अनैतिकयुद्ध, दुश्मन के व्यापारिक प्रतिष्ठानों में आग लगाना आदि घातक-हिंसक व क्रूर प्रवृत्तियां रात्रि को सूर्य प्रकाश के अभाव में अर्थात् अंधकार में की जाती हैं। इससे स्वतः सिद्ध होता है कि प्रकाश पुण्य कार्य का प्रेरक है, प्रस्फुटक है, प्रद्योतक है, जबकि अंधकार पाप की प्रेरणा देता है। पापकर्ता को अपने आंचल में छिपाकर के पुनः उसे पनपाता भी है।

आज के विज्ञान ने कहा कि Where there darkness there are germs जहां-जहां भी अंधेरा है वहा-वहां किटाणु है। हिन्दु संस्कृति ने कहा कि सूर्य देवता सभी ग्रहों का राजा है-[illegible] की प्रकाश किरणें-हमारे जीवन का शरीर को काफी हद तक प्रभावित करती है। विशेषतः सूर्य का प्रकाश-मनः प्रेरक व [illegible] है [illegible] उसकी अनुपस्थिति में अनेक [illegible] [illegible] निषेध है वैसे ही भोजन भी नहीं करना चाहिए। जैन धर्म ने और गहराई में जाकर कहा है, [illegible] [illegible]
[illegible]

कहा है कि जीव मा की कुक्षि मे आकर प्रथम आहार ग्रहण करता है उसके बाद क्रमश शरीर इन्द्रिय की रचना होती है तत्पश्चात श्वासोच्छावास-भाषा (सूक्ष्म) एव अत मे मन की सरचना होती है। यद्यपि यह सब प्रक्रिया अत्यल्प समय मे होने से स्थूलदृष्टि से देखने पर एकसाथ घटित होने जैसी ही लगती है।

"आहार सरीरिदिय-पज्जत्ति आण-पाण-भास मणे"

गीता मे तीन प्रकार के आहार की चर्चा की हे सात्त्विक राजसिक एव तामसिक। सादा अहिसक व पोषक आहार सात्त्विक है। मिठाई आदि गुरु पदार्थ राजसिक हे तथा तमस् अर्थात् अधकार मे अर्थात् सूर्य प्रकाश के अभाव मे पकाये गये या खाये गये अन्नादि तामसिक आहार है। जैसे रात्रिभोजन तामसिक आहार है वैसे जमीकद भी सूर्यप्रकाश के अभाव मे जमीन मे उत्पन्न होने से तामसिक आहार है। पुन यह बताया गया कि तीनो प्रकार के आहार से मानव प्रकृति भी क्रमश सात्त्विक, राजसिक या तामसिक बनती हे, इससे सिद्ध होता है कि आहार एव मन पर अधकार का कितना गहरा व बुरा असर है।

अब हम प्रकाश एव अधकार के इस पृथककरण का वैज्ञानिक कारण खोजे। विज्ञान कोई परमेश्वर नहीं हे हर वेज्ञानिक भी सत्य का दावा किये बिना सरलता से यह स्वीकार करता है कि मै ट्राई कर रहा हूँ। सत्य का अन्वेषण कर रहा हूँ। वैज्ञानिक लोग अन्वेषण करते करते, जो आविष्कार हमारे सामने प्रस्तुत करते है, ऑखे मूद करके हम उसे परमात्मवाणी का प्राकट्य समझ करके मान लेत ह। उदाहरण के तोर पर हमारे पूर्वज दुग्ध आदि किसी भी उष्ण पेय पदार्थो को फूक मारकर पीने की मनाई करते थे। आज भी मलाई आदि दूर करन हेतु फूक मारकर बहोराया हुआ दूध आदि जेन साधु साध्वीजी ग्रहण नहीं करते ह।

हमारे पूर्वज पूर्णत वैज्ञानिक थे। सार एव उच्छवास की वायु प्राणपूरक एव प्राणनिरोधक होती है वे जानते थे। वे तो नीम और इमली की रात्रि उच्छ्वास की भिन्नता भी जानते थे। उस भिन्नता का औषधीय उपयोग भी वे जानते थे कि इमली के नीचे निरतर सोनेवाले का भयकर वायुप्रकोप पुन उतने लम्बे समय तक निरतर नीम के पेड के नीचे सोने से मिट जाता है। जानत हुए भी पूर्वजो को कार्बनडायोक्साईड के जहर से जीव दया का अधिक महत्त्व था जहर से हम खत्म होगे, जीव हिसा से अन्य। अत उन्हाने उष्ण पेयपदार्थो को फूक लगाकर पीने की मनाई फरमाई। परन्तु हम रहे वेज्ञानिकता के अधचाहक अत यही बात हम वेज्ञानिक या डाक्टर से सुनेगे कि उष्ण पेय पदार्थो को फूक मारने से हमारे उच्छ्वास मे रही कार्बन डायोक्साईड नामक विषेली वायु पेय पदार्थ मे घुल-मिल जाती है।

आमतौर पर फैली इस वेज्ञानिक चाहना की वजह से ही म वेज्ञानिक दृष्टिकोण की बात कर रहा हूँ। जेन धर्म मे वर्णित पाच पकार के शरीर मे एक तेजस शरीर जो हमारे शरीर मे उष्णता के रूप मे ह (हिन्दू धर्म मे प्रचलित वेश्वानल शायद

जठर की अग्नि से संबंधित है) इस तेजस शरीर से हमारा शरीर एक प्रकार का ''सोलार इलेक्ट्रीसीटी सेन्टर'' सौर्यिक उर्जा केन्द्र है, जो सूर्य के उदय के साथ सक्रिय होता है। हालांकि सूर्योदय के प्रारंभिक काल में वातावरण में रात्रि की शीत का तथा ओस आदि का प्रभाव रहने से इस सक्रियता की गति मंद होती है तथा वातावरण में ओक्सिजन की अल्पता रहती है इसलिए ही जैनो में रात्रि भोजन त्यागियों के लिए सूर्योदय के तुरंत पश्चात दो घडी-48 मिनट तक (जिसे नवकारशी पच्चक्खाण कहते हैं) भोजन पानी वर्ज्य कहा है।

दो घडी के बाद जैसे जैसे दिन चढता है...सूर्य के तापमान के बढने के साथ हमारे शरीर की आंतरिक ऊर्जा भी अधिकाधिक सक्रिय व सक्षम बनती है जिससे हमारा रक्तसंचार व्यवस्थित बनता है। रोग प्रतिकारक शक्ति बढती है शरीर में नई ताजगी व स्फूर्ति आती है। यही तेजस शरीर ग्रहण किये हुए आहार को पचाता है। सूर्य के प्रकाश में एक विशेष शक्ति है कि उसके रहते वृक्ष वातावरण के विषल कार्बनडायोक्साईड को ग्रहण करते हैं और प्राणवायु को छोडते है। सूर्य प्रकाश की दूसरी विशेषता यह है कि वह सूक्ष्म जीवों को, विषैले जीवों को पैदा होने नही देता। रात्रि में पैदा हुए जीवों को पनपने नहीं देता..। [illegible] यह सब के अनुभव की बात है कि दिन में हुए घाव की पीडा लगे हुए कांटे का [illegible] या सांस-दम वायु की शिकायत रात्रि में [illegible] करती है। रात्रि की गहरी नींद में पता न [illegible] परन्तु सुबह उठते हम यह बात [illegible] महसूस करते हैं कि सूर्यप्रकाश के अभाव में पीडा बढ गई है।

इस तरह हर प्रकार से रात्रि का वातावरण भोजन के लिए प्रतिकूल है। सूर्य प्रकाश की उष्णता से अपनी जीवरक्षा हेतु अंधकारमग्न स्थानों में या वृक्ष आदि पर छिपे हुए अनेक सूक्ष्मजीव सूर्य अस्त होते ही बाहर आते हैं। जिसमें से कई सूक्ष्म जीव तो ऐसे होते हैं कि उन्हें प्रकाश में ही देखा या परखा जा सकता है। रात्रि को उनके अस्तित्व का भोजन आदि मे मिलने का पता भी नहीं लगता है। यहां पर हम कहेंगे कि पूर्वकाल में तो बिजली नहीं होने से पर्याप्त मात्रा में प्रकाश नहीं होने से जीवजंतु नजर नही आते थे...आज तो ट्यूबलाईटों की उज्जवल रोशनी में रात्रि भोजन करने में क्या हर्ज है? पुनः मुझे स्पष्टता करनी पडेगी कि-वैज्ञानिकों ने बताया हुआ Where there is darkness there are germs जहां अंधेरे की बात कही है वह सूर्यप्रकाश के अभाव की है क्योंकि सूर्यप्रकाश सूक्ष्मजीवों के लिए अवरोधक है जबकि बिजली प्रकाश सूक्ष्मजीवो के लिए आकर्षक आमंत्रण है अतः स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से उजाला होते भी वह अंधेरा ही है। इसलिए बिजली के प्रकाश के आविष्कार की चरमसीमा के इस युग में आज भी डाक्टर अकस्मात आदि की [illegible] घटनाओं को छोडकर शरीर की [illegible] ([illegible]) करना [illegible] समझते हैं।

[illegible]

करीवन घटे डेढ घटे मे सो जाते है जिसकी वजह से सोने के पूर्व न पचा हुआ भोजन आमाशय मे रह जाता हे । सुवह वेसी ही स्थिति मे वेड-टी बिस्तर की चाय से लेकर भोजन की भर्ती पेट मे शुरू हो जाती है जिससे पूर्वर्षि कथित अजीर्णे भोजन विषम् पूर्व का भोजनादि न पचने पर दूसरा किया हुआ भोजन जहर वनता है कथन के अनुसार शरीर मे विषचक्र पैदा होता है दिनो के दिनो व महिनो तक यह घटनाक्रम जारी रहने पर वह विष घातक वीमारियो को पेदा करता हे। समाज का, देश का स्वास्थ्य निरीक्षण करने पर हम भलीभाति यह वात समझ पायेग कि, रात्रि भोजन का प्रचार-प्रसार वढने के साथ ही पिछले 25-50 वर्षो मे उच्चनीच रक्तचाप (हाई-लो वी पी) हृदयरोग (हार्टअटेक) पाचन गडवडियॉ (डायजेशन प्रोव्लेम्स) कितनी हद तक वढ गये ह ।

यदि हम रात्रिभोजन छोड द तो स्वास्थ्तालाभ होता ही हे साथ ही ओर अनेक लाभ होते हे । आज कल 'सेव इलेक्ट्रीसीटी' विजली वचाओ का उद्घोप जोर शोर से प्रचारित किया जा रहा है। दिन मे सहज सुलभ सूर्यप्रकाश की उपस्थिति मे अन्नादि पकाने व खान वाले प्रतिदिन अपने घर मे कम से कम एक घटा विजली पावर वचा सकते है जो राष्ट्रीय वचत की वात है। दिन को किया हुआ भोजन सूर्य प्रकाश की प्रवलता व प्राणवायु की अधिकता की वजह स जल्दी पच जाता हे अत शरीर की कम ऊर्जा-कम केलेरियो का उपयोग होता हे जवकि रात्रिभोजी को यह नुकसान होता है ।

दिन मे भोजन करने वाले शाकाहारी मनुष्य सात्विक होते है। उनमे शाति-परोपकार-जीवदया जैसे सद्‌गुण विशेष पनपते है अत उनके द्वारा समाज व देशकल्याण की अनेक उत्तम प्रवृत्तियॉ होती है । यदि रात्रिभोजन त्याग देशव्यापी कानून वन जाय तो भारत पुन एक स्वर्गीय स्वणिम भृमि वन जाय क्योकि रात्रि का खाना-पीना वद होने पर न होटल चलेगी न ड्रींकरवार (शरावघर) चलेगे । न डासक्लव चलेगी न जुआ के अड्डे चलेगे । वाह कितनी अच्छी वात रात्रि भोजन की समाप्ति के साथ ही सिनेमा, जुआ, वलात्कार, लूटपाट आदि पापा की समाप्ति । हे न रात्रि भोजन महापाप?

सुज्ञ वाचकगण हम प्रारभ म प्रयोग क नाम भी रात्रिभोजन त्याग की प्राचीन परम्परा का माह मे कुछ दिन भी स्वीकारे व स्वय लाभ नुकसान का अनुभव करे । इस रात्रि भाजन के जेसी ही वात जमीकद की है उसमे भी जिसम से तेल निकलता हे (तैल जतुघ्न होता ह या जतु को पैदा होने से ही रोकता है) वैसी मुगफली को छोडकर वाकी की सभी चीजे उन्हीं अवगुणो को दोषो को धारण करती हे कि जो दोष रात्रिभोजन मे है । अजैन साहित्य मे भी जमीकद की गिनती तामसिक आहार मे की है । चूस्त वैष्ण प्याज-लहसृन को कभी नहीं छूते । अरे सुना ह कि नियमित रूप से मस्जिद मे नमाज पढने वाले चुस्त कई मुस्लिम प्याज-लहसून को नहीं खाते।

जेन धर्म ने जमीकद को साधारण वनस्पतिकाय के रूप मे वर्णित किया हे । दूसरी वनस्पति मे फल-फूल-छाल-काष्ठ (तना)-मूल

(जडें) पत्ते-एवं बीज ऐसे 7 स्थानों में जीव माना है जिसे प्रत्येक वनस्पतिकाय कहा है। जबकि जमीकंद के अणु-अणु में अनंत (अगणित) जीव होते हैं इसलिए उसकी काया को अनंतकाय कहा। दूसरा नाम रखा साधारण वनस्पतिकाय अर्थात् वनस्पति के अगणित जीवों को रहने की जनरलबोडी। आज के वैज्ञानिकों ने कई सूक्ष्म कीटाणुओं की खोज की है। कहते हैं कि थेसस नामक एक सूक्ष्मजंतु सुई की नोंक पर 50,000 की संख्या में रह सकता है। हम भी जानते हैं कि आलु के बीज नही होते उसका हर टुकडा सजीव होता है जिसे बोते ही वह उग सकता है। थोर आदि अनंतकायिक वनस्पति के भी सब टुकडे वृक्ष वन सकते हैं।

यह भी भेद स्पष्टतया पाया जाता है कि सफरजन, आम, केले आदि जल्दी पक जाते व विगड जाते हैं जबकि आलु, प्याज-लहसून आदि काफी लम्बे अर्से तक सुरक्षित रहते हैं क्योंकि अन्य वनस्पति की अपेक्षा या जीवसंख्या अधिक होने से उसमें जेविक शक्ति (लीवींगपावर) अधिक होता है।

हमारे तन को, मन को अधिक शुद्ध व शुभ बनाने हेतु हम अधिक से अधिक जीवदया का पालन करें उसमें भी कपडे आदि में व्यवस्थित नही बनेंगे तो शायद चल जायेगा परन्तु पेट में ग्रहण किये जाने वाले खानपान के विषय मे आज से अभी से ही सजग व सक्रिय बनें क्योंकि अन्न ही तन को व मन को प्रभावित करता है। सुज्ञ वाचक वर्ग अवश्य ही सारांश ग्रहण करके जीवन में उतारेगें।

इसी शुभ भावना के साथ। ❖

मणियों में चिंतामणि, वृक्षों में कल्पवृक्ष, नक्षत्रों में चन्द्र और समस्त धातुओं में सुवर्ण जैसे प्रधान है, उसी प्रकार समस्त धर्मों में दया, धर्म ही प्रधान है।

आराधना में, शरीर, वस्त्र, क्षेत्र, मन, उपकरण, द्रव्य और विधि ये सातों ही शुद्ध मान हों तो आराधना शुद्ध बन जाती है।

सज्जन का क्रोध क्षण भर रहता है, साधारण मनुष्य का दो घंटे, नीच मनुष्य का एक दिन रात और पापी का मरते दम तक रहता है।

धर्म श्रवण की सार्थकता कैसे?

महत्तरा सा सुमंगलाश्री जी म सा , बरखेडा तीर्थ

श्रोता दो प्रकार के होते है-एक सोने जैसे, दूसरे लोहे जैसे। लोहे और सोने को जब अग्नि मे डाला जाता है तब दोनो अग्नि जैसे लाल-लाल दिखाई देते है। कौनसा लोहा है और कौनसा सोना है, इसकी पहचान भी नहीं होती। परन्तु जैसे ही दोनो को जब अग्नि से बाहर निकाला जाता है तब लोहा थोडी देर मे ही जैसा पहले था वैसा ही वैसा काला हो जाता है जबकि सोना अग्नि मे तपने के पश्चात् और अधिक तेजस्वी बन जाता है।

इसी प्रकार व्याख्यान हाल मे बैठे हुए सभी श्रोता रसिक दिखाई देते है। जो मात्र कान से सुनते है वे श्रोता और जो कान और प्राण दोनो से सुनते है वे श्रावक।

मात्र कान से सुनने वाले रसिक श्रोता यहाँ से उठने के पश्चात् दूसरे कान से सब निकाल देते है ऐसे श्रावक लोहे जैसे होते है और जो सुनने के पश्चात् उसे जीवन मे आचरण की फ्रेम मे जड देते है, घर या दुकान पर जाकर भी उसी चिन्तन मे मस्त रहते है वे सोने जैसे श्रावक श्रोता होते है।

आप अपनी आत्मा से पूछिये कि आप कैसे श्रोता है? लोहे जैसे या सोने जैसे। अरे! श्रोता बनकर तो बहुत बार सुना होगा अब तो श्रावक बनकर वीतराग वाणी का श्रवण करना होगा जिससे अनादि काल से आत्मा पर जमी हुई कर्म रूपी खाद जल जायेगी।

दुनिया मे श्रोताजनो की कमी नहीं है, वक्ताओ की भी कमी नहीं है, कमी है तो मात्र प्राण से सुनने वाले श्रोता, श्रावको की है।

एक बार शहर मे एक साधु महाराज प्रवचन दे रहे थे। सबसे आगे वहा के प्रसिद्ध सेठ बैठे हुए थे। सेठजी बहुत ही सरल स्वभाव के थे। साधु महाराज जो भी प्रश्न उनसे पृछते वे केवल एक ही उत्तर देते कि महाराज। हम अज्ञानी जीव क्या जाने? सुनते-सुनते सेठजी को नींद आ गई, झोके खाने लगे, सिर जमीन के साथ टक्कर खाने लगा।

प्रवचन करने वाले महाराज भी जरा मजाकिये स्वभाव के थे। वे बोले सेठजी! सोते हो या जागते? सेठजी एकदम हडबडाते हुए बोले-नहीं गुरुदेव! जागता हूँ। थोडी देर बाद फिर वही परिस्थिति! गुरुदेव ने जोर से पूछा-सेठजी! सोते हो या जागते? सेठजी तुरत बोले-नहीं गुरुदेव जागता हूँ। अच्छा सेठजी बतलाइये कि भगवान महावीर के पिता का नाम क्या था? सेठजी अपनी आदत के अनुसार बोले-बापजी! आप ही फरमाइये हम अज्ञानी क्या जाने? इसके तुरन्त

बाद में ही गुरुदेव ने दूसरा प्रश्न पूछ लिया कि कहो सेठजी! आपके पिताजी का नाम क्या था? अपने स्वभाव के अनुसार सेठजी का वही उत्तर था कि बापजी! आप ही बतलाइये, हम अज्ञानी क्या जानें? गुरुदेव ने हंसते हुए कहा कि सेठजी! बाप आपके थे या मेरे? यह सुनते ही चारों तरफ श्रोताओं की हंसी फूट पडी । सभी सेठजी की ओर देखने लग गये । सेठजी का चेहरा तो उस समय देखने जैसा था । शर्म के मारे सेठजी की गर्दन झुकी रह गई ।

सुनना हो तो मिट्टी बनकर सुनो, चिकने घडे के समान नहीं! यदि चिकने घडे के साथी बनकर सुनते रहे तो जिंदगी भर सुनने पर भी क्या लाभ होगा? बरसात के समय लोग बरसात के पानी से बचने के लिये रेन कोट पहनते है जिसके पहनने से उनके तन पर पानी गिरता है तो वह पानी नीचे बहता रहता है । भीतर से कपडे नहीं भीगते । वैसे ही कई बार परमात्म वाणी का श्रवण करने पर भी उनके हृदय में कुछ भी असर नहीं होता । इससे अनुभव होता है कि वे कहीं रेन कोट पहनकर तो नहीं आये ?

हमारे ज्ञानी भगवन्त ने कहा है-सुनना हो तो कच्ची मिट्टी बनकर सुनो । जिस प्रकार मिट्टी में पानी गिरता है तो वह उसे पचा लेती है, अपने हृदय में समा लेती है । इसी प्रकार श्रोता भी ऐसा ही होना चाहिये जो सुने उसे सीधा ही अपने अन्दर निगल ले । अपने अंदर समा ले ।

एक [illegible] व्यापारी सेठ था । वह [illegible] का भक्त था पर बगुला भक्त था । वह गुरु महाराज का प्रवचन प्रतिदिन पान करता था । उसके किराणे का व्यापार था । उसने अपने व्यापार से अच्छा कमाने के लिये दो बाट रखे जिसके नाम उसने लेवडा और देवडा रखा । सेठजी ने अंदर ही अंदर अपने नौकर को समझा दिया कि इन बाटों का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिये ।

बगुला भक्त सेठजी अपनी इज्जत को बराबर जमाये रखने के लिये अपनी बुद्धि का भी बराबर उपयोग किया करते । जब दुकान के अंदर कोई ग्राहक आता तो देवडा को बुलाता और जब दुकान के लिये माल लेना होता तो लेवडा को बुलाता । तोल के बाटों को इस प्रकार का बना दिया कि देने के समय हल्के, कम तुलने वाले बाट का प्रयोग किया जाता और लेने के लिये ज्यादा तुलने वाले वजनदार बाट का प्रयोग किया जाता । सेठजी की इस वृत्ति को कोई नहीं जानता था व्यापारी भी और ग्राहक भी ।

एक दिन सेठजी का पौत्र अपने दादाजी के संग गुरु महाराज का प्रवचन सुनने गया । गुरु महाराज ने न्याय सम्पन्नता पर प्रवचन दिया । प्रवचन सुनने के बाद पौत्र का चिन्तन चला कि दादाजी प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करते है पर आचरण कुछ भी नहीं करते । अरे दादाजी! अपना व्यापार [illegible] है? प्रामाणिकता तो इसमें [illegible] भी नहीं ।

वह प्रवचन श्रवण [illegible]

दुकान पर गया और [illegible]

[illegible]

[illegible]

अरे मेरे दादाजी! आप प्रतिदिन प्रवचन सुनने जाते है परन्तु आपने आचरण कुछ भी नहीं किया। मैने तो मात्र आज ही प्रवचन सुना है कि न्याय नीति से व्यापार करना चाहिये। सुने हुए प्रवचन के अनुसार आचरण करना चाहिये तभी प्रवचन सुना हुआ सार्थक माना जाता है। मैने दादाजी दोनो बाटो को इकट्ठा कर दिया है। अपने को अन्याय से व्यापार नहीं करना है।

दादाजी ने अपने पोत की बात पर विचार किया और पौत्र से बोले-सच मैने प्रवचन सुन-सुन करके मेरे सिर के जो बाल काले थे वे धोले हो गये पर मुझमे कुछ भी, जरा सा भी असर नहीं हुआ। लेकिन तू तो एक ही दिन का प्रवचन सुनकर आचरण मे ले आया। इतना ही नहीं, तूने तो मुझे भी सही दिशा का बोध बता दिया।

वीतराग परमात्मा की वाणी अज्ञानरूपी अधेरे मे भटकते हुये प्राणियो के लिये सर्च लाईट का काम करती है। जम्बुस्वामी, मेघकुमार आदि ऐसे कई महापुरुषो ने एक ही बार भगवान की वाणी का श्रवण किया था, उनकी आत्मा जागृत हो गई।

धर्म-वाणी के श्रवण से आत्मा परमात्मा और परमपद के रहस्यो का हमे बोध होता है। पाप के प्रति भीति और जीवो के प्रति मैत्री बढती है। नित्य धर्म श्रवण से देव-गुरु और धर्म के प्रति निष्ठा दृढ बनती है। सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति होती है और सम्यग् चारित्र के प्रति अनुराग पैदा होता है। विषय वासना के प्रति वैराग्य और कषायो के प्रति त्याग का प्रेरक बल प्राप्त होता है।

धर्म श्रवण से व्रत-पच्चक्खाण और धर्मानुष्ठान करने की भावना जागृत होती है। पाप सस्कार नष्ट होते है और धर्म सस्कार जागृत होते है। चित्त मे शाति, जीवन मे खुशहाली का अनुभव प्राप्त होता हे।

जीवन की शाति से लेकर मुक्ति की प्राप्ति तक का कार्य धर्मवाणी के श्रवण से सिद्ध होता है। ससार के ताप से सतप्त आत्मा के लिये धर्म श्रवण, धर्म वाणी मानसरोवर के समान ह। धर्म श्रवण की ताकत अनुपम-अलौकिक है।

धर्म वाणी के श्रवण से ही राजगृही क सुप्रसिद्ध चोर रोहिणेय के जीवन मे ऐसा अद्‌भुत परिवर्तन आया कि वह रोहिणेय राजगृही नगरी का प्रसिद्ध महासत बन गया। रोहिणेय ने अपनी इच्छा से नहीं, किन्तु अनिच्छा से ही प्रभु महावीर की वाणी का श्रवण किया था, फिर भी वह उस श्रवण के प्रभाव से मौत के मुख मे जाने से बच गया। बस केवल इसी घटना को लक्ष्य मे रखकर रोहिणेया प्रभु के चरणो मे पूर्णरूप से समर्पित हो गया और फलस्वरूप उसने उसी भव मे अपनी आत्मा का कल्याण कर लिया।

अत मे सच्चा साधक और श्रावक वही कहा जाता है जो श्रद्धापूर्वक जिनवाणी का श्रवण कर शुद्ध आचरणपूर्वक अपनी आत्मा का कल्याण करे।

अत मे—

जिनवाणी ही राग को विराग बना देती है
वही विषय भोगो को त्याग बना देती है।
कर देता है पूरे जीवन का रूपान्तर
गहरे अधेरो को चिराग बना देता हे। ✤

आत्मा की कुञ्जी

सा. प्रफुल्लप्रभा श्रीजी म., बरखेड़ा तीर्थ

सत्संग से मानव का हृदय पवन के समान पवित्र, जल के समान निर्मल तथा गुलाब के फूल के समान मन मोहक बन जाता है यानी व्यक्ति में एक चुम्बकीय चमत्कार उत्पन्न हो जाता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगत बैठिये, तैसोई फल दीन ॥

स्वाति नक्षत्र की बूंद ऐसी ही होती है। अगर केले के पत्ते में गिर जाये तो कपूर बन जाती है, सीप में गिरे तो मोती तथा विषधर सर्प के मुँह में गिर जाय तो जहर बन जाती है। बांस में वंशलोचन उत्पन्न हो जाने की उपलब्धियाँ हाथ लगती है परन्तु कलुषित हृदय वाला व्यक्ति उसे यथार्थ स्वरूप में हृदयांगम नही कर सकता। बेल जमीन पर फैल सकती है क्योंकि उसकी कमर पतली होती है किन्तु यदि उसे किसी पेड से लिपट जाने का अवसर मिल जाय तो उतनी ही ऊँची उठ जाती हे जितना कि पेड ऊँचा होता है। बांस की पतली नली जब किसी बादल के हाथ लग जाती है तो उसका सुन्दर स्वर असंख्यों का मन मोहता है, अन्यथा पतले बांस का क्या उपयोग ? उसकी निजी हेसियत कूडा ढोने की [illegible] जितनी ही होती है।

[illegible] के तख्ते जब बढ़ई के हाथों नाव [illegible] और माझी के [illegible] चलाये जाते है, तो [illegible] [illegible] जलराशि पर [illegible] अपनी पीठ पर बिठाकर अनेकों को आये दिन इधर से उधर पार लगाते हैं।

फूल उद्यान में खडे रहते हैं, सूखने पर मुरझाकर जमीन पर आ गिरते हैं, किन्तु यदि उन्हें माली का संयोग मिल जाय तो गुलदस्ते के रूप में सजकर मेज पर बैठ सकते है एवं भगवान के गले का हार भी बन सकते हे।

संगति की महिमा ऐसी ही हे। सान्निध्य का चमत्कार जितना समझे उतना ही कम है।

कोयले की दुकान पर बैठने से कपडे काले होते हैं। काजल की कोठरी में घुसने पर कही न कहीं दाग लगता ही है, किन्तु इत्र बेचने वाले की दुकान पर जा बैठने पर नाक को सुगंध मिलती ही हे, यहां तक कि कपडों तक बेसी खुशबू आ जाती है। नाले का पानी जब नदी में मिल जाता है तो उसकी गंदगी तिरोहित हो जाती है और पवित्र जल में उनकी गणना होती है। गा का दूध अगर शंख में डालकर रखा जाय तो वह सरस तथा सुस्वादु रहता है, पर उसे अगर [illegible] तुम्बी में डालकर रख दिया जाय तो वह पीने लायक नहीं रहता, [illegible] है।

[illegible]

ज्ञान के लिये निष्णात अध्यापक के पास जाना पडता है। किसी को कानून कायदे की जानकारी प्राप्त करनी हो तो वह वकील या बैरिस्टर के पास से प्राप्त हो सकती है । फौज या सेना की कार्यवाही के लिये सेनापति के पास जाना पडता है । राज कार्य का परिचय प्राप्त करने के लिये राज कर्मचारियो के पास जाना पडता है वैसे ही मानव को अपना जीवन उन्नत और प्रशस्त बनाने के लिये महान पुरुषो की सगति मे जाना पडता है ।

एक व्यक्ति एक बार किसी सत महात्मा के पास पहुँचा और बोला-'महात्मन्! मुझे आत्म कल्याण का मार्ग दिखाइये ताकि मै जल्दी ही प्रभु को पा सकू।' सत महात्मा ने उसकी बात सुनकर कुछ सद्ग्रथ उसे दिये और उससे कहा कि इसका अध्ययन करना, मनन और चितन करना, इससे तुम्हे वह सीढी मिल जायेगी जिसके लिए तुमने मेरे से कहा है ।

कुछ दिनो के बाद वह व्यक्ति पुन सत महात्मा के पास आया और बोला-महात्माजी! मै कई बार इन ग्रथो को पढ चुका लेकिन मुझे प्रभु के दर्शन नहीं हुए आप कृपाकर अब मुझे शीघ्र उनके पास पहुचने का मार्ग दिखाइये ।

वह व्यक्ति बहुत शीघ्रता के लिये आग्रह करने लगा तब सत महात्मा ने कुछ भुने हुए चने मगवाये और कहा-भैया! इन्हे खाओ । वह उन्हे खा गया। फिर सत महात्मा ने और चने दिये, वह व्यक्ति उन्हे भी खा गया ।

जब खूब चने खा लिये तब उसे एक कमरे मे बद करके ताला लगा दिया। कुछ देर बाद उसे प्यास लगी। भयकर गर्मी एव प्यास के मारे वह दरवाजा खटखटाता रहा लेकिन महात्माजी ने दरवाजा नहीं खोला ।

अत मे प्यास से तड़फते-तड़फते उसे नींद लग गई। नींद मे वह स्वप्न देखता है कि वह एक बहुत ही सुन्दर टापू पर बैठा है। उसके चारो ओर सुन्दर पानी के झरने बह रहे है और वह खूब चाव से, मस्ती से, आनद से पानी पीकर मग्न हो रहा है ।

तभी अचानक उसकी नींद खुल गई। फिर वह उसी तरह से पानी-पानी चिल्लाने लगा। सत महात्मा ने ताला खोलकर पानी दिया और पूछा—कहो भक्त! कैसे हो? उसने कहा-महात्माजी! यदि थोडी देर आप पानी नहीं देते तो मै मर ही जाता ।

सत महात्मा ने पूछा—भैया तुम्हे पानी बिना कैसा लगा? तब उसने आरभ से अत तक पूरी स्वप्न वाली कहानी कह सुनाई ।

सत महात्मा ने उसे समझाते हुए कहा-'भैया! जैसे पानी की लगन मे तुमने पानी का सुन्दर स्वप्न देखा, उसी प्रकार पानी की तरह जब प्रभु की लगन तुममे जागृत हो जायेगी तब हर जगह प्रभु ही प्रभु के दर्शन होगे और तुम्हारा आत्मकल्याण हो जायेगा ।

जिस प्रकार आग के सम्पर्क मे आते ही ईधन मे ऊर्जा का आविर्भाव होता है उसी प्रकार आत्मा को परमात्मा का सान्निध्य मिलते ही आत्मा की स्थिति हो जाती है ।

जिस प्रकार पानी जब दूध मे मिल जाता है तो दोनो एक भाव बिकते है उसी प्रकार महान

पुरुषों के सम्पर्क में आते ही जीवन परिवर्तित हो जाता है।

पृथ्वी को सूर्य का सन्तुलित अनुदान मिलता है तब वह इतनी सुन्दर सम्पन्न बन जाती है कि परिचित ग्रह मंडल में से किसी की भी वरिष्ठता नहीं दिखती। चन्द्रमा दूर होते हुए भी समुद्र में ज्वार भाटे उठाता है और वह अंधेरी रात को प्रकाशवान बनाता है।

यह महान पुरुषों की महानता की गरिमा है जो अपने सम्पर्क में आने वाले को अनायास ही प्रभावित करती है।

एक शहर में एक करोडपति सेठ निवास करते थे। सेठजी के दिल में गरीब लोगों के प्रति बहुत दया थी। इस कारण पूरे शहर में वे प्रख्यात थे। सेठजी से उनके घर के नौकर चाकर भी बहुत खुश रहते थे क्योंकि सेठजी का व्यवहार बहुत अच्छा था। लक्ष्मी मॉ की सेठजी पर पूर्ण कृपा थी इसलिये उनके घर प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की मिठाईयॉ बनती थी। जो भोजन सेठजी एवं परिवार के सदस्यगण करते थे वही भोजन नौकरों को भी मिलता था।

एक दिन सेठजी के घर दूसरे शहर से एक कंजूस सेठ आये। कंजूस भी इतना कि न खाए और न खाने दे। फिर भी दयालु सेठजी ने उसका स्वागत किया। कंजूस सेठ ने जब नौकरों को भी विभिन्न प्रकार की मिठाइयां खाते हुए देखा तो अपने मन में विचार करके दयालु सेठजी से कहा- अरे मित्र! तुम तो बेकार में नौकरों को मिठाइयां खिलाते हो! इससे फालतू खर्च [illegible] [illegible] का अपव्यय रुक जायेगा। अरे भाई! लक्ष्मी चंचल है, संभल-संभलकर खर्च करना चाहिये।

कहते हैं कि ''जैसा संग, वैसा रंग'' कंजूस सेठ की बात सेठजी के दिल में बैठ गई। अब उनका व्यवहार एकदम बदल गया। उनके हृदय से दया निकल गई। दयालु सेठजी अपने नौकरों से अभद्र व्यवहार करने लगे। मधुर मिष्ठान्न के स्थान पर रुखा-सूखा भोजन देने लगे तथा पहले से दुगुना काम करवाने लगे। नौकरों ने सेठजी के एकदम बदलते व्यवहार को देखा तो वे आश्चर्य में खो गये।

एक दिन सेठजी बीमार हो गये। अस्वस्थ हो जाने पर अपनी सेवा के लिये नौकरों को नाम ले लेकर बुलाने लगे। आवाज देने लगे।

उचित अवसर जानकर किसी नौकर ने म्याऊं-म्याऊं, किसी ने भॉ-भॉ तो किसी ने किसी अन्य जानवर की आवाज से सेठजी को प्रत्युत्तर दिया किन्तु कोई भी नौकर अपने स्थान से हटा नहीं।

सेठजी ने नौकरों का अनूठा व्यवहार देखा तो सभी नौकरों को अपने पास बुलाया और बड़े प्रेम से सबसे पूछा कि कब से तुम लोग जानवर हो गये हो? तब उन नौकरों ने जवाब में कहा कि जब से इस घर में जानवरों का भोजन और व्यवहार मिलने लगा है।

सेठजी ने पूरी बात को समझ लिया [illegible]

प्रेम को बनाये रखने के लिए अपने निजी स्वार्थ का त्याग करना पडेगा ।

सजय आर विजय दो भाई थे । जब विजय मात्र पाच साल का था तब उनके माता-पिता प्लेग की बीमारी के कारण प्रभु को प्यारे बन गये थे । सजय विवाहित युवक था । उसकी पत्नी अनुराधा बहुत ही नेक एव दयालु स्त्री थी । विजय का पालन उसने पुत्रवत् किया । वह उसे पढा-लिखाकर योग्य बनाना चाहती थी । लेकिन सजय की स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि अपने भाई की पढाई का भार उठा सके, लेकिन अनुराधा के जोर देने पर उसे विजय को आगे की उच्च पढाई की हा भरनी पडी । विजय भी पढाई मे अच्छी लगन रखता था इस कारण भाभी की मेहनत से उसका इजीनियरिग की पढाई मे चुनाव हो गया । सजय और अनुराधा दिन-रात श्रम करके विजय की पढाई के लिए रुपयो की व्यवस्था करते । उनके स्वय का भी पुत्र दीपक बडा हो रहा था । अनुराधा ने विजय की पढाई पूरी करवाकर अपने गहने बेच शहर की पढी-लिखी लडकी आशा के साथ शादी कर दी जिससे उसके जीवन मे खुशहाली आ गई । लेकिन जब आशा ससुराल मे आई, ग्रामीण परिवेश का घर देखकर उसे निराशा ही हुई, मगर क्या कर सकती थी? विजय भी वहीं बाध पर एक इजीनियर था । घर मे अब आमदनी चालू होने से सजय-अनुराधा पुराने कर्जे से मुक्त होने लगे । लेकिन आशा नहीं चाहती थी कि उसका पति अपनी आमदनी भाई-भाभी को दे । उसने पति के कान भरने शुरू कर दिये । घर मे कलह का वातावरण बढने लगा । सजय ने अनुराधा को कहा-क्या मिला तुझे?

आशा कुछ भी मन मे आता वह बोल जाती, मगर अनुराधा सुनती रहती । विजय भी पत्नी को डाटता-फटकारता लेकिन उसकी धमकी के आगे दबना पड़ा ।

अनुराधा कहती है बहू- इससे अपने परिवार की बनी बनाई इज्जत खराब होती है ।

आखिर आये दिन के झगडे से तग आकर विजय ने कहा-भैया अब अपनी पटरी बैठना मुश्किल है । हमेशा-हमेशा की अशान्ति से तो अच्छा है आप बटवारा कर दे ।

इस बात से सजय को बहुत दु ख हुआ, उसकी ऑखो के आगे अधेरा छा गया, मगर अब कोई चारा नहीं था । दोनो भाई अलग-अलग हो गये । सजय की आर्थिक स्थिति अब भी खराब ही थी । अनुराधा अपने कर्मो का ही खेल मान चुप रही । उसने अपने पति सजय से कहा-विजय अपना ही भाई है । कभी न कभी तो उसे समझ आयेगी । आपके और मेरे प्रति उसका प्रेम एक दिन अवश्य जगेगा ।

लेकिन सजय का विश्वास टूट गया । उसका स्वार्थ अब पूरा हुआ ओर मुझे इस हालत मे बीच मझधार मे छोड दिया ।

समय पख लगाकर उडा जा रहा था दीपक भी बडा हुआ । माता-पिता के आशीर्वाद से उसकी पढाई का चुनाव डाक्टर की शिक्षा मे हुआ । वह पाच साल मे डाक्टर बनकर घर आ गया, अपनी मेहनत व लगन से कम समय मे ही यश प्राप्त कर लिया । गरीबो की नि शुल्क सेवा करने के कारण लोग सजय और अनुराधा की

प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

दीपक का नाम अच्छे डाक्टर के रूप में प्रख्यात हुआ।

संजय और विजय की दिल की दूरी बढती गई। दोनों भाईयों का जीवन नदी के दो किनारे हो गये। संजय कभी-कभी अनुराधा के साथ वार्तालाप करते हुये जब विजय का विषय आता तो चिढता था। सब तूने किया। आखिर मिला क्या? मेरा भाई भी मुझसे छिन गया।

सजय का स्वास्थ्य अब काफी कमजोर हो गया, उसे लगने लगा कि अब मेरा जीवन दीप बुझने वाला है। उसने अपने पुत्र दीपक से कहा बेटे। मेरे भाई विजय ने मेरी आत्मा को बहुत गहरी चोट पहुंचाई है। तू सबकी सेवा करना मगर जरूरत पडने पर उनके घर कभी मत जाना।

दीपक ने अपनी माँ की ओर देखा। वह अभी कुछ बोल ही नहीं पाई कि संजय के प्राण पखेरू उड गये। लेकिन अंतिम संस्कार में भी विजय का सहयोग नहीं हुआ। वह बाहर गांव गया हुआ था। लेकिन आशा भी नहीं आई।

विजय जब गांव से लौटा तो उसे भाई के देहावसान के समाचार मिले। अपने भतीजे दीपक से मिलने आया और कुछ समय बैठकर चला गया। अनुराधा से मिला ही नहीं, उसे बहुत दुख लगा मैंने क्या बिगाड़ा? मैंने तो भावना [illegible] ही निर्णय लिया था।

[illegible]

बडी खराब है। उन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। आशा की आवाज सुन अनुराधा भी बाहर आई। दीपक ने अपनी मां की ओर देखा। फिर मां का संकेत समझकर आशा के साथ ही दीपक निकल गया। अनुराधा की आंखे आशा से मिलते ही दोनों की आंखे आंसू बहा रही थी लेकिन कुछ भी बोलने की हिम्मत आशा में नहीं रही।

दीपक ने अपने चाचा को दवा और इंजेक्शन दिया और कहा शाम तक स्वास्थ्य में सुधार न हो तो मुझे बुलवा ले। वैसे कल सवेरे मैं स्वयं ही आकर देख लूंगा। आशा पचास रुपये लेकर दीपक को देने लगी वह खडा होकर चाची से बोला यह क्या कर रही हो? क्या मैं कोई गैर हूं? भविष्य में कभी ऐसा मत करना।

बेटे! मैं अपने आपको अपराधी मानती हूं। मैं कभी अपने आपको क्षमा नहीं कर सकती हूं। जो भी मेरे निमित्त से हुआ उसको भी पश्चाताप के आंसू से धोने की क्षमता भी अब मेरे में नही रही है।

चाची यह सब कर्मों का चक्कर है। जो हुआ उस पर विचार करना व्यर्थ है आप चाचा की दवाई का ध्यान रखें।

सवेरे तक विजय ठीक हो गया था। आज दीपक की बातों से उसकी आंखे खुल गई। दीपक के साथ आशा और विजय [illegible] अनुराधा के पास आये। [illegible]

पिछली बातो को भूलकर अनुराधा कहती हे जैसी आपकी इच्छा। उनकी आखो से प्रेम का श्रावण बरसन लगा। क्षमामूर्ति अनुराधा ने विजय ओर आशा को अपने गले लगाते हुए कहा कोई बात नहीं सुबह का भूला शाम आया तो भूला नहीं कहलाता है।

आँख है तो आसू मिलकर रहेगा।
शक्ति है तो पर्वत हिलकर रहेगा।
स्नेह का निर्झर वहाते रहो वरावर तुम।
तो एक दिन दिल मिलकर ही रहेगा॥

अत मानव मन के मानसरोवर मे नि स्वार्थ जल भरा हुआ रहेगा तो उसमे निश्चित ही 'राजहस' का आना होगा। मानव मन की शोभा नि स्वार्थ प्रेम के मिठास से होती है।

अत हमारा जीवन नि स्वार्थ प्रेम के खजाने से भरापूरा बने इसी शुभेच्छा के साथ। ❖

परिवार नियोजन और जैन धर्म

-श्री रतनलाल रॉय सोनी जैन

परिवार नियोजन के सम्बन्ध मे जैन धर्म हमेशा अग्रणी रहा है। हजारो वर्षो पूर्व भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) के सौ पुत्र और दो पुत्रियॉ थी। जिनमे भरत चक्रवर्ती सम्राट भी थे जिनके नाम स भारत वर्ष जाना जाता है। उस समय की परिस्थितियो म जो जो समस्याए सामने आई होगी उसी के अनुरूप जैन धर्म मे नियम से रहने का प्रयास किया गया ओर इस नियम को सयम मे वदला गया।

आज भी जैन धर्म के अनुयायी साधु साध्वी अपने प्रवचन मे सयम से रहन की शिक्षा देते हे। जैसे 1 महीने मे दस दिन सयम से रहना। प्रत्येक पखवाडे के दिनो मे बीज, पञ्चमी, अष्टमी, ग्यारस, चौदस, पूनम आदि भी है। वेसे तो सभी को नियम के साथ सयम से रहने का रोज-रोज बोध कराया जाता है। व्याख्यान मे भी उपदेश दिया जाता है। साधु, साध्वी, अपने पर ता अकुश रखते है ओर ससार के वैभव को त्यागकर सयम से रहने के लिये उपासरे मे रहत है। कई दिन तक एक स्थान पर नहीं रहते है। ससार के वैभव को त्याग कर सयम से रहने के दिये उपासरे मे रहते है वे स्वय के चारित्र पालन मे कोई ढील नहीं करते है। और इसीलिये दूसरो को भी चारित्र पालने की शिक्षा देते है। यही कारण है कि जेन धर्मावलम्बी अधिक सुखी सतोषी है। वे दूसरो पर वोझ नहीं है। वे सरकार से भी कोई माग नहीं करते है बल्कि सरकार को सभी प्रकार का आर्थिक सहयोग देते है। परिवार नियोजन को अपनान का फल है भारतवर्ष की जनसख्या मे जैनी सिर्फ 30 लाख ही है। उनका मानना है कि जीवन तो क्षण भगुर है कहा है-

1 जीव अकेला अवतरीया, अकेला ही जाय, जीवन मरण से अकेला छूट जाय
2 छोट परिवार सुख का आधार
3 दो मे शाति, तीन मे क्राति, चार मे अशाति। ❖

सम्यक्दर्शी के पाँच लक्षण

सा. श्री पीयूषपूर्णा श्री जी.म., जोधपुर

सम्यकत्व के पॉच लक्षण हैं-सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा एवं आस्था।

इन्ही पॉच लक्षण से ही जैनेत्व की पहचान होती है। इन कसौटियों पर कसा जाने पर मानव सम्यकत्व धारी कहला सकता है।

1. "सम" का अर्थ हे समभाव होना। समभाव का उदय जीव में तभी होता है जबकि रागद्वेष तथा क्रोध, मान, माया और लोभादि कषायों का शमन हो जाय। कषाय आत्मा के लिए महा अनर्थकारी होते हैं।

शास्त्रकार मनीषि कहते हैं :

कोहं च माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चतारि दोसाओ इच्छंतो हियमप्पणो॥

जो मानव अपनी आत्मा का हित चाहता है वह इन चारों दोषों (कषायो) का त्याग करता है।

क्योंकि कषाय का सेवन करने वाले मानव दानव के समान होते हैं तथा क्षमादि गुणों का धारण करने वाले देवताओं के तुल्य माने जाते हैं। कषाय वह कालकूट विष है, जो आत्मा में [illegible] शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक [illegible]

[illegible]

"[illegible] ॥"

[illegible]

आत्मा को बार-बार छला करते हैं। क्रोधादि कषायों के वशीभूत हुआ प्राणी सदा खिन्न और अशान्त रहता है। न ही किसी पर स्नेह रखता है और न ही स्वयं किसी के स्नेह का भाजन बन सकता है। लेकिन इसके विपरीत समभावी पुरुष शत्रु और मित्र में समान भाव रखता हुआ सभी का प्रिय पात्र बनता है। वन्दनीय पूजनीय आदरणीय बनता है।

कृष्ण-कंस, जैनागमो में अनेक विध प्रेरक प्रसंग आते हैं। मरुभूति-कमठ, अग्निशर्मा-गुणशर्मा, महावीर-गोशाला, एक करुणामूर्ति है तो दूसरा क्रूरता का कठोर पत्थर।

2 संवेग : संवेग का अर्थ है विषय कषायों की ओर उन्मुख होने वाली आत्माभिमुख करना, प्रतिपल मन और इन्द्रियों को संवेग-[illegible] पथ पर चलाकर आत्मा के लिए प्रतिपल मोक्ष सुख की ही कामना करना। मन-इन्द्रिय को शुभ क्रिया मे लगाना व अशुभ क्रिया से पीछे हटाना। सांसारिक [illegible] को जन्म मरण [illegible] [illegible] शुभ क्रिया में [illegible] करना।

3 [illegible]

[illegible]

सेठानी ने नव दम्पत्ति जीवन की शुरुआत से ही ससार के क्षणिक भोग विलासो से विरक्त होकर अपने जीवन को अमरत्व प्रदान किया। सम्यक्त्व के तीसरे लक्षण से मन इन्द्रिय विरक्ति की ओर बढता हुआ समस्त कर्मो से मुक्त होकर अक्षयसुख मे प्रवेश करता है।

4 अनुकम्पा ये सम्यकत्व का चोथा लक्षण है। रोग, शोक, पीडित प्राणियो की पीड़ा को दूर करने की भावना अनुकम्पा कहलाती है। किसी दीन, हीन, दु खी, दरिद्र प्राणी को देखकर जिस मनुष्य के मन मदिर मे दया का देवता प्रकट हो जाता हे, वह आत्मा सम्यक् दृष्टि है। पर पीडा को जानने वाला, दूर करने वाला निश्चित ही परमतत्व को प्राप्त करने वाला होता है।

इगलैण्ड के सुप्रसिद्ध लेखक और वीर सर फिलिप सिडनी महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल मे हुई एक लडाई के समय घायल होकर रणक्षेत्र म पडे हुए प्यास से छटपटा रहे थे।

कुछ सैनिक बडी कठिनाई से एक प्याला पानी कहीं से उनके लिए लाए। सिडनी ने ज्योही पानी का प्याला अपने मुँह से लगाना चाहा उनकी नजर बगल मे पड़े हुए एक सिपाही की ओर गई। वह घायल सिपाही भी तृष्णातुर था और टकटकी लगाये उस प्याले की ओर देख रहा था। सर फिलिप सिडनी का हृदय अनुकम्पा से भर गया ओर उन्होने अपनी असह्य पिपासा की परवाह न करके प्याला उस घायल सिपाही के हाथो मे थमा दिया, स्वय एक बूद पानी भी अपने मुह मे नहीं डाला। मृत्यु शय्या पर पडे रहकर भी जो दूसरो का दु ख देखकर पिघल जाते हे उनसे बढकर अनुकम्पाशील और कौन हो सकता है? ऐसी ही अनुकम्पा सम्यक्त्व की पहचान कराती है। जिस व्यक्ति को दूसरे के कष्ट की अनुभूति नहीं होती, दूसरे की तकलीफ पीडा को देखकर उसके हृदय मे दर्द नहीं होता, मात्र अपना ही अपना स्वार्थ रहता है तो समझ लेना चाहिये कि वह इसान का हृदय नहीं शैतान का दिल ह। ससार मे जितने भी धर्म है सबमे अनुकम्पा मूल कहा है।

''दयानदी महातीरे सर्वेधर्मा, द्रु मायिता'' ॥

दया-अर्थात अनुकम्पा रूपी नदी के किनारे पर ही समस्त धर्मो के वृक्ष फूल-फल रहत है। अनुकम्पा का अमृत जल ही उन्हे हरा भरा रखता है। नदी का जल सूख जाने पर जिस प्रकार तटवर्ती वृक्ष पेड़-पोधे सूख जाते है उसी प्रकार अनुकम्पा रूपी जल सूख जाने पर समस्त सद्गुण निस्तेज हो जाते है। इसलिये सम्यक्त्व के लक्षणो मे अनुकम्पा को मुख्य माना है।

एक पजाबी कवि ने कहा हे

अपना दुख देख न रोवे, दुखिया देख दुखी दिल होवे।
करके दूसरे दा नुकसान, कदे सुख अपना टोले ना॥
वन उपकारी जान गवावे,दुखिया दे दुख दरद मिटावे।
हत्थ विच फड इन्साफ दी लकडी,कमती कदी भी तोले ना॥

5 आस्था सम्यक्त्व का लक्षण है। इसका अर्थ है आत्मा, लोक, परलोक पर विश्वास करना तथा वीतराग के वचनो पर श्रद्धा रखना।

जिस प्रकार राख पर लीपना व्यर्थ होता है उसी प्रकार शुद्ध श्रद्धा के बिना सभी क्रियाए व्यर्थ मानी जाती ह। इसीलिए परम परमात्मा महावीर ने चार दुर्लभ वस्तुओ मे ''श्रद्धा परम दुल्लहा माणुसे भवे''। श्रद्धा को मनुष्य भव मे परम दुर्लभ कहा गया हे। मुक्ति महल के ताले की चाबी ही श्रद्धा है। श्रद्धा के कारण ही प्रभु महावीर ने राजगृही जाते हुये अवड परिव्राजक के साथ

सुलसा श्राविका को धर्मलाभ का शुभ संदेश भेजा था । सम्यक् श्रद्धा के कारण ही ब्राह्मण पुत्र अमर कुमार ने अग्निकुंड को जलकुंड बनाया था ।

राजगृही नगरी में सम्राट श्रेणिक के द्वारा एक चित्रशाला का निर्माण करवाया जा रहा था । लेकिन उसमें सम्राट को सफलता हासिल नहीं हो रही थी । चित्रशाला का दरवाजा बार-बार टूट रहा था । परेशान होकर सम्राट ने राज ज्योतिषियों से इसका कारण पूछा । ज्योतिषियों ने बताया राजन् ! इसमें कोई देवी प्रकोप है, अतः इसके लिये हमें किसी बत्तीस लक्षण युक्त बालक की बलि देकर देवी को सतुष्ट करना पडेगा ।

सम्राट ने राजसेवकों से पूरी राजग्रही नगरी के अन्दर ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई भी बत्तीस लक्षण युक्त बालक हमें बलि के लिए लाकर देगा, उन्हें राजदरबार की ओर से बालक के तोल बराबर सोना दिया जायेगा । इस बात को सुनकर एक ब्रह्मणी का मन ललचा जाता है मेरा बेटा अमर कुमार बत्तीस लक्षण वाला है । मेरे पुत्र संतान तो पांच है लेकिन संपत्ति से मेरा जीवन दरिद्र है क्या फर्क पडेगा अगर पांच बेटों में से एक बेटे को दे भी दूंगी तो? जब बाहर से पति ब्राह्मण घर आता है उन्हें वह सारी इस तरह की दीन-हीन जिन्दगी की बात कहकर उससे मुक्त होने के लिए पुत्र अमर कुमार को बेचने के लिए कहती है । ब्राह्मण भी पत्नि और परिस्थिति से परेशान होकर हाँ कर देता है । ब्राह्मणी ने राजसेवकों को बुलाकर अमर कुमार को देने का सौदा तय कर [illegible] । [illegible] अमर कुमार [illegible]

[illegible]

पहुँचते देख अमर कुमार का दिल धडक उठता है। रोने लगता है, रोते-रोते माता-पिता, काका-काकी, भाई-बहन सभी के पास जीवन की भीख मांगता है, लेकिन सभी का मुंह बंद है । अमरकुमार को स्नानादि करवाकर, सजाकर राजदरबार ले जाया गया । नन्हासा बालक प्रजापालक राजा से भी जीवन की भीख मांगता है, प्रजा को भी बचाने के लिए कहता है लेकिन माता-पिता के द्वारा बेचे जाने से किसी ने उसका साथ नहीं दिया । ब्राह्मणों ने हवन-कुण्ड आदि बनवाकर हवन की तैयारी कर दी । जोर-जोर से मंत्रोच्चारण हो रहा है । नन्हासा बालक सोचता है कि मेरा मरण निश्चित है । इस स्वार्थी मायावी दुनिया में कोई मेरा नही है । उसे याद आती है निःस्वार्थी आत्म प्रेमी संतमुनि की । उन्होंने मुझे मंत्र दिया था कि इस दुनिया में एक मात्र निःस्वार्थी संत की ही शरण है । उनके द्वारा दिया हुआ मंत्र ही मेरी आत्मा का उद्धार करेगा । अमर कुमार आपातकाल में एक मात्र धर्म की शरण लेकर श्रद्धा समर्पण से नवकारमंत्र का ध्यान करता है । उस छोटे से बालक के पास श्रद्धा के सिवाय था ही क्या? सच में । उसकी श्रद्धा की शक्ति ने अग्निकुंड को जल कुण्ड बनाया । श्रद्धा आत्मशक्तियों को उजागर कर परमात्म तत्व को दिलाने वाली है ।

सम्यग्दर्शी आत्मा अपने जीवन में सम्यक्त्व के लक्षणों को आत्मसात करता हुआ परमपद को प्राप्त करता है ।

[illegible]

विनय-विद्या-विवेक का संगम

सा कुसुमप्रभा श्री जी म , बरखेडा तीर्थ

भारत के पूर्वकालीन महर्षि विद्या प्राप्ति के मूल सिद्धान्त को बताते हुए कहते है कि "विद्या ददाति विनयम्" विद्या विनय से आती है अर्थात् विद्या प्राप्ति का मूल साधन विनय ही है। ज्ञान यह दीपक तुल्य है । जो मानव के अधकारमय जीवन को बदल प्रकाशमय बनाता है। अज्ञान, अधकार है और ज्ञान प्रकाश है। अज्ञान अर्थात् अविवेक से युक्त चेष्टा ओर ज्ञान अर्थात् विवेक से पूर्ण शुभ प्रवृत्ति । अथवा ऐसा कहे तो भी ठीक ह कि व्यक्ति मे ज्यो-ज्यो ज्ञान का प्रकाश प्रकट होता है त्यो-त्यो उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति विवेक से युक्त होती जाती है।

प्रश्न हो सकता हे विवेक किसे कहे? इसके उत्तर मे कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, भक्ष्य-अभक्ष्य, पेय-अपेय को समझने की शक्ति तथा उसके अनुरूप आचरण। विवेक से हीन मानव पूछ रहित पशु तुल्य ही है। क्योकि इस जीवन सृष्टि मे मानव प्राणी का विशिष्ट महत्त्व होने का यही कारण है कि उसमे विवेक है, वह सोच सकता है, समझ सकता है। और उसके अनुरूप आचरण भी कर सकता है।

महर्षि पुरुष ज्ञान की व्याख्या करते हुए भी यही बताते है कि ज्ञान वही है जिससे व्यक्ति मे विनय और विवेक का विकास हो, क्योकि ज्ञान का फल विनय और विवेक ही हे।

अपने जीवन की ओर दृष्टिपात करो, और देखो इतने वर्षो तक अभ्यास करने के उपरान्त भी तुम्हारे जीवन मे गुरुजनो के प्रति आदर भाव बढा है या नहीं? यदि इतने वर्षा से विद्याभ्यास के उपरान्त भी जीवन मे विनय और विवेक उत्पन्न नहीं हुआ हे तो समझ लो यह विद्या पची नहीं है। तुम्हे विद्या ग्रहण करने के उपरात यदि उसको पहचाने की ताकत नहीं है तो समझ लो कि विद्या अजीर्ण हो गई हे और अर्जीण हुई विद्या जीवन मे अह भाव अभियान को उत्पन्न करती है।

वाचकवर्य उमास्वाति विद्या के फल विनय का महत्त्व बताते हुए कहते है-"कुल रूप वचन योवन धन मित्रेश्वर्य सम्पदपि पुसाम्। विनय प्रशम विहीना न शोभते निजलेव नदी॥"

अर्थात् उत्तम कुल, सुन्दर रूप, मधुर स्वर, योवन अवस्था, धन, मित्र, ऐश्वर्य तथा अन्य सम्पत्तियो की प्राप्ति होने पर भी विनय और प्रशम से हीन मनुष्य निर्जल नदी की तरह शोभता है।

स्पष्ट है कि जिस प्रकार जल से रहित सूखी नदी शोभा नहीं देती, उसी प्रकार विनय से रहित व्यक्ति सज्जन पुरुषो के बीच नहीं शोभता है।

विद्या की प्राप्ति मे गुरु कृपा का ही महत्त्व हे। गुरु का अपमान अथवा अनादर कर यदि विद्या प्राप्त हेतु विशेष प्रयत्न भी कर ले तो भी उसमे सफलता प्राप्त नहीं होती है ओर यदि विद्या भी प्राप्त हो जायेगी तो जीवन मे मात्र अह भाव को ही पुष्ट करेगी। उसके फलस्वरूप जीवन

में उत्तम आचरण नहीं आ सकता है।

विद्या का फल है विवेक अथवा कर्त्तव्य परायणता। किस योग्य कार्य में हमारी कितनी निष्ठा है? इसे अवश्य जानना होगा। विद्याभ्यास के उपरांत भी कर्त्तव्य पालन में चित्त नहीं लगता है और मात्र उद्दंडता में ही आनन्द आता है तो समझ लो कि अभी तक योग्य विद्या प्राप्त नहीं हुई है।

विद्या विनय की जननी है। उसके उपरांत ही व्यक्ति नर से नारायण, कंकर से शंकर, शव से शिव, जन से जिन, कायर से वीर, दुर्जन से सज्जन, चालाक से चतुर, अभिमानी से विनयवान, अविवेकी से विवेकवान, व आत्मा से परमात्मा बनता है। कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का ख्याल रखता है। क्या खाने योग्य है और क्या नहीं। इसमें उसका पूर्ण विवेक होता है।

विनय से विद्या और विद्या से विवेक। इन तीनों में 'वि' का आपसी घनिष्ठ संबंध है विनय अर्थात् गुरुजनों के प्रति समर्पण भाव, विद्यार्थी जीवन और विद्यारूपी धन की प्राप्ति हेतु गुरु को अपने जीवन का समर्पण।

गुरु श्रद्धा और गुरु के बहुमान बिना विद्या प्राप्ति अशक्य है। द्रोणाचार्य के प्रति भक्ति भाव तथा गुरुत्व का भाव होने के कारण ही एकलव्य धनुष कला में इतना निपुण हुआ था। गुरु समर्पण से प्राप्त विद्यासम्पन्नता के अनेक दृष्टांत भारत प्राचीन इतिहास का अवलोकन करने से मिल सकता है। विद्या प्राप्ति के बाद ही कर्त्तव्य का [illegible]

नाम के तीन विद्यार्थी विद्याभ्यास हेतु गुरुकुल में गये। अपनी सूक्ष्म बुद्धि से कुछ ही वर्षों में अनेक विद्याओं में पारंगत हो गये। तब तीनों ने गुरु से घर जाने की आज्ञा मांगी। गुरुजी ने अब उनकी अंतिम आचरण परीक्षा लेने का निर्णय किया। गुरुजी ने तीनों को घर जाने की अनुमति प्रदान कर दी। इधर गुरु ने उन तीनों के जाने के पूर्व कुछ दूर जाकर मार्ग में कांटे बिछा दिये। तीनों उस मार्ग से आ रहे थे। देवदत्त शरीर से बलवान और लम्बा था अतः उसने कूदकर उस कांटे वाले मार्ग को पार कर लिया। सोमदत्त उन कांटे वाले मार्ग को लांघने में हिचकिचाया और वह उस मार्ग से नीचे उतर थोडे कठिन मार्ग से चल, उस कांटे वाले मार्ग को पार कर गया। अब प्रेमदत्त की बारी थी उसने सोचा कि यह तो आम मार्ग है यदि यहां कांटे पडे रहेंगे तो अनेकों को कष्ट देंगे। अतः वह वहां बैठा और सावधानी से उन बिखरे हुए कांटों को उठाकर मार्ग से कुछ दूर फैंक दिया। इस प्रकार तीनों ने उस मार्ग को तय कर दिया। मार्ग तय होते ही गुप्त स्थान में छुपे गुरुजी उनके सामने आए और बोले कि प्रेमदत्त का अभ्यास पूर्ण हो गया है। अतः उसे जाने की अनुमति है। परन्तु देवदत्त व सोमदत्त का अभ्यास अभी तक बाकी है अतः उन्हें कुछ वर्ष और ठहरना होगा। उन दोनों के पूछने पर गुरुजी ने बताया कि आचरण-विवेक के बिना विद्या की प्राप्ति [illegible]

[illegible] ❖

मानव जीवन का सार परोपकार

सा श्री पूर्णनन्दिता श्री जी म , बरखेडा तीर्थ

जो आदमी दु खी है उन्हे देखकर अनुकम्पा करना यह समकित का गुण है आज गुजरात मे और राजस्थान मे कैसी बाढ आ गई है?

लोगो का कितना नुकसान हो गया है यह सब देखकर भी आपके जीवन म परिवर्तन कहाँ से हो रहा है। आज इस होटल मे जाना और कल उस होटल मे खाना है क्या श्रावक इस तरह होटलो मे खाना खा सकता है? उधर तो लोग भूखे मर रहे ह आर आप इधर महफिल उडा रहे हो? बाढ कम हाती है लोग पेडो पर से नीचे उतरते है सब घर बार, अन्न, वस्त्र रहित हो गये। कहाँ जावे? अहिसा प्रेमी लोग कुछ दिन खाना खिला देगे आखिर तो कुछ करना ही पडेगा।

माधो और लक्ष्मी अहमदाबाद आते हे और वहा कान्तीलाल की मील मे नौकरी करते है। 15 रु मासिक मिलता है, मजदूरो की मेहनत पर मजा करने वालो आज यहा मजा कर लो, पर परलोक मे इसका फल भोगना ही पडेगा। कर्मो ने छह खण्ड के स्वामी को भी नहीं छोडा तो तुम्हारी क्या बात है? याद रखिये कर्म फूल की शैय्या पर सोने वाला को भी काटो की शैय्या पर सुला देता है।

पति-पत्नि दोना सख्त काम करते ह। पति एक साल काम करने से बीमार हो जाता है। माधो घर मे रहता है। लक्ष्मी घर का काम-काज कर मील मे काम करने जाती है। साथ मे 3 साल का लडका भी है। लक्ष्मी माधो का इलाज कराते-कराते थक जाती है। उसकी तबियत ठीक नहीं होती। बुखार शरीर से निकलता नहीं है। धनवानो की मोटर बिगड़ जाती है तो तत्काल ठीक करा ली जाती है। पर कोई नोकर बीमार हो जाता है तो क्या वे उसकी भी खबर करवाते है? नोकर की खबर लेने वाले तो कोई विरले ही होते है। हमदर्दी सेठ होगा तो नौकर उसका काम तन तोडकर करेगा। वरना तो टाईम हुआ नहीं कि चल देगा, फिर वह खडा रहना भी नहीं चाहेगा। आज के नौकरो की हालत भी ऐसी ही है एक दिन मील मजदूर हड़ताल कर देते है। लक्ष्मी अपने बालक को लेकर बाहर आ रही है। उसका लडका मोटर के नीचे आकर मर जाता है। लक्ष्मी चिल्लाती है-बचाओ मेरा लडका मोटर के नीचे आ गया है। मोटर खुद सेठ चला रहा था। वह सोचता ह मेरे हाथ से यह हत्या हो गई है म गुनहगार हूँ। पुलिस जान जायेगी तो अभी मुझे बेडिया पहना देगी। लक्ष्मी रोती है। सठ कहता है तू रो मत तुझे जो चाहिये ले ले। लडका तो मर चुका है। वह वापस आ नहीं सकता। मै तुझे लड़क के बदले मे पाच हजार रुपये देता हूँ इन्हे लेकर चुपचाप अपने घर चली जा। नहीं तो

पुलिस आ जायेगी तो परेशान कर देगी। लक्ष्मी कहती है सेठ मुझे पांच हजार रुपये नहीं चाहिये। मुझे तो मेरा लडका चाहिये। मेरा पति बीमार है मेरा एक लडका था वह भी तुमने मार दिया तो अब मैं क्या करुंगी? मेरे पति को अब क्या जवाब दूंगी? लक्ष्मी बहुत रोती है। पर सेठ उसका दुःख थोडे ही समझ सकता है? वह लडके का दाह संस्कार भी करा देती है। लक्ष्मी धीरे-धीरे अपने घर जाती है। माधो 105 डिग्री बुखार में पडा है फिर भी लक्ष्मी को देखता है तो पूछता है तू क्या अकेली आई है? लक्ष्मण कहाँ रह गया है? यह सुनकर तो लक्ष्मी रो पडती है? माधो पूछता है क्या हुआ, रोती क्यों है? क्या लक्ष्मण कहीं गुम हो गया है? लक्ष्मी ने रोते-रोते उत्तर दिया-सेठ की मोटर में आकर वह मर चुका है। यह कहकर वह तो फूट-फूटकर रोने लगी। माधो भी रोते हुए कहता है अरे उसका एक बार मुंह तो मुझे दिखा दे वह मुझसे पहले क्यों चला गया? जाना तो मुझे चाहिये था? लक्ष्मी कहती है। उसका तो अंतिम संस्कार भी कर दिया गया है। माधो पुत्र के शोक में और अधिक बीमार हो गया। वह अब वमन करने लगा। सन्निपात सा उसे हो जाता था। घर में दूसरा कोई नहीं। न पास में कुछ पैसा ही क्या करता है। लक्ष्मी सेठ के पास जाती है और कुछ [illegible] मांगती है। सेठ लक्ष्मी को देखता है [illegible]

[illegible]

है। मुझे महिने की पगार चाहिये। मेरे पास दवा लाने के लिये भी पैसे नहीं है। अतः मेहरबानी कर मेरा वेतन मुझे दिला दीजिये। सेठ कहता है वेतन तो पहली तारीख को ही मिलेगा। उससे पहले वह नहीं मिल सकता। लक्ष्मी-मेरा लडका तो मर गया अब मेरा पति भी जाने की तैयारी में है आपसे मैं अपना वेतन ही मांग रही हूं वह मुझे मिल जायेगा तो मैं दवा का प्रबंध कर लूंगी, लेकिन सेठ के हृदय में दया कहाँ थी? उसने कहा एक बार कह तो दिया, वेतन अभी नही मिल सकता। चली जा यहां से नहीं तो धक्का मारकर निकलवा दी जायेगी। लक्ष्मी कहती है सेठ वह बात याद करिये जब आप मुझे जेल के डरसे पांच हजार रुपये दे रहे थे। आज आप मुझे मेरा वेतन भी नहीं दे सकते?

बन्धुओ! गरीबों को मत सताओ वरना उनकी हाय एक दिन तुमको भी खत्म किये बिना नही रहेगी।

तुलसी हाय गरीब की कबहु न खाली जाय।
मुवा ढोर के चाम से लोहा भस्म हो जाय॥

लक्ष्मी ऑफिस से बाहर निकल कर मार्ग में आती है और जी भरकर वह रोती है पर कोई पूछने वाला नहीं आता है। [illegible]

[illegible]

दे देते हो, पर सगे भाई का लड़का भूखा मर रहा है तो उसकी तरफ आज कौन देखता है ? लक्ष्मी एक आने का बरफ लेकर घर आती है और माधो के सिर पर मलती है। उससे उसका बुखार उतर जाता है एक तारीख को उसे वेतन मिल जाता है। लक्ष्मी कहती है अब हमको इस मील मे नौकरी नहीं करनी है। जहाँ सेठ के दिल मे नौकरो के प्रति तनिक भी हमदर्दी नहीं वहा नौकरी करने से क्या लाभ? दोनो नौकरी छोड देते है। जिन्हे काम ही करना है उनके लिये तो शहर मे काम की कमी नहीं होती है। जिन्हे काम ही न करना हो वही मागते फिरते हे। इतने मे तो शहर मे आग लग गई। लोगो ने कहा कान्तीलाल सेठ का बगला जल रहा है। सेठ अन्दर ही रह गया है। चारो तरफ आग ही आग दिखाई दे रही है। कोई अन्दर जाकर सेठ को निकाल नहीं सकता हे। माधो सुनता है तो खून गरम हो जाता है। मेरा मालिक जल रहा हे और मै खडा-खडा देख रहा हूँ। उसने अम्बा वाले की निसरनी उठाई और उस पर चढकर वह मकान मे कूद पडता है? गरीब और अमीर का हृदय देखिये। माधो सेठ को उठाकर बाहर ले आता है। सेठ बेभान है। लक्ष्मी राब बनाती है और माधो सेठ के मुँह मे डालता है। चार घटे बाद सेठ जागृत होता है तो देखता है, यहाँ मैं कैसे आ गया? लक्ष्मी और माधो को देखकर पूछता है माधो तूने मुझे कैसे बचा लिया। म तो मर ही गया था। माधो! मुझे तो वे दिन याद आते हे जब तेरी औरत पगार लेने आई थी ओर मैने उसे वह भी समय पर नहीं दी थी। मै कितना क्रूर हूँ। पर तुम कितने दयालू हो। मुझ जेसे निर्दयी को भी तुमने बचा लिया। अपनी जान की भी परवाह नहीं की। मै कहा ओर तुम कहा? माधो, बोल क्या चाहता है? क्या कीमत मागता है? मै सब कुछ देने को तैयार हूँ। माधो कहता हे मै तो सात महीने से आपके यहा काम नहीं करता हूँ। पर मै कहता हूँ आप अपने मील के लोगो का वेतन बढाकर डेढा कर दीजिये। सेठ कहता है यह तो तू दूसरो के लिये माग रहा है अपने लिये क्या मागता है माधो कहता है कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। मेरा काम तो चलता है। सेठ यह सुनकर तो आश्चर्य मे डूब जाता है सोचता है गरीब होकर भी कितना निस्पृह व्यक्ति है। उपकारी पर अपकार करना तो पशुता है। जानकर भी यह कर सकता है। कुत्ते को रोटी डालो तो वह भी तुम्हारी चौकीदारी कर देता है। जो अपकारी पर भी उपकार करता है यही सच्ची मानवता है। ऐसी मानवता जब पैदा होगी तभी इस आत्मा का कल्याण हो सकेगा। आज के दिन ओर नहीं तो इतना जरूर करना कि हो सके तो किसी का भला करना पर बुरा किसी का नहीं करना।

कान्तिलाल सेठ अपने घर के लिये रवाना होता हे। जाते समय वह कहता है यह लक्ष्मीबेन मेरी बहिन है मै इसका भाई हूँ। राखी के निमित्त मै यह हीरे की अगूठी इसे देता हूँ इसकी कीमत दस हजार रुपये है। माधो अब बोल नहीं सका। यह तो भाई और बहिन का व्यवहार था।

बन्धुओ! मानवता पैदा करो, यही भावना है। ❖

शांति आत्मा में रहती है

सा. श्री संयमरत्ना श्री जी म., वरखेड़ा तीर्थ

रागद्वेष से मुक्त-बनना ही सची-शांति प्राप्त करने का सच्चा उपाय है । राग द्वेष में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह आत्मा को शांति दे सके । आप जगत की किसी वस्तु का विचार करें । जिसे आप अपनी आवश्यकता समझते है उसके लिए सोचकर देखें कि उसमें से किसी भी वस्तु में सच्ची शांति देने में सामर्थ्य नहीं है । स्त्री भोग शांति दायक है या कि स्त्री भोग की इच्छा को शमन करने से शांति मिलती है । भोजन शांति दता है? कि भोजन के खाने से भोजन की आवश्यकता शांत होने से शांति मिलती है । अर्थात-भूख शांत होने के कारण भूख की पीडा टली, धन का लोभ-शांति दायक है कि, धन का लाभ होते हुए भी धन की इच्छा शमन करने से शांति मिलती है । आप स्वयं अपने अनुभव को जांचकर देखें । आपको भी समझ में आ जायेगा कि शांति तो आत्मा में स्थिर है और आत्मा ज्यां ज्यां रागद्वेष से मुक्त होती जायेगी और दुन्यावी आशाओ और इच्छाओं का त्याग करती जायेगी त्यों-त्यां शांति का अनुभव होता जायेगा ।

आपको अपनी हर छोटी-बड़ी इच्छाओं की पूर्ति होने पर क्षणिक शांति का अनुभव होता है किन्तु एक इच्छा शांत होने के बाद ही दूसरी [illegible] सकता है ।

योग वशिष्ठ का कथन—'योग वशिष्ठ' नामक हिन्दु धर्म का ग्रंथ है उसमें रामचन्द्रजी के मुख से बोले गये शब्द इस प्रकार .. .

'नाऽहंरामो न मे वांछा, विषयेपु न च मे मनः ।
शान्तिमाद्यातु मिच्छामी, स्वात्मनीव जिनो यथा ॥

रामचन्द्रजी ने कहा-''राम मेरा नाम भले हो पर मैं 'राम' अथवा क्रीडा में मस्त रहने वाला नही हूँ । संसार में और संसार के सुख में ''मैं रममान नहीं हूँ । इस सांसारिक सुख में रमण की मेरी इच्छा भी नहीं है वांछा-विडम्बना की पराकाष्टा है और अन्त में कहते है-मैं तो अपनी आत्मा में शांति धारण करने का इच्छुक हूँ और वह भी उस रीति से कि जिस रीति से श्री जिन ने अपनी आत्मा में शांति धारण की है ।

संसार की समस्त पौद्गलिक चीजों की इच्छा प्राप्ति भोग एवं रक्षण से हमें केवल अशांति ही प्राप्त होती है । यदि सांसारिक चीजों का उपभोग न कर सके तो भी अशांति रहती है [illegible]

[illegible]

पर्वाधिराज : एक आदर्श

सा श्रुतदर्शिता श्री जी म , वरखेडा तीर्थ

भगवान महावीर देव ने अतिम देशना मे फरमाया कि इस जगत मे अति दुर्लभ है मानव जन्म । कितने पुण्यशाली है अपन कि, श्रमण भगवान महावीर देव के मुख से जिसकी प्रशसा हुई वह मनुष्य का भव इस बार हमको मिला, मनुष्य जन्म मे हमको तीन विशिष्ट अधिराज भी मिल गये मन्त्राधिराज, पर्वाधिराज तीर्थाधिराज। मत्राधिराज-इस जगत म, मत्रा की दुनिया म यदि कोई प्रभावशाली, चमत्कारी मत्र है तो नवकार मत्र सव मत्रो का मूल इसमे समाहित है । इसी कारण इसे मत्र+अधिराज की उपमा से उपमित किया । इस मत्र के स्मरण मात्र से तन मन की आधी व्याधी नष्ट हो जाती है । मन शात और प्रशात वनता है ।

दूसरे नम्बर मे मिला है पर्वाधिराज-पर्व की एक विशिष्टता है तीर्थ के पास हमे जाना पडता है लेकिन पर्व हमारे पास स्वय आते ह । तीर्थ को क्षेत्र का वधन है, पर्व को समय का चाहे आप अमेरिका मे हो या पाकिस्तान मे पर्व ठीक समय आपके पास आ जायेगा । पर्व तो घडी की अलाम की तरह हमे वासना की नींद से ठीक समय जगाने आ जाता है । पर्वाधिराज पर्युपण जीवन को सुधारने की कला सिखाता है । कैसे रहना? कैसे चलना? इन सब कलाओ का स्थान है पर्युपण अपने जीवन म आदर्श लेना हो तो महापर्व की आराधना मे मन को लगा दो, क्षमा महापर्व का प्राण है । पर्युपण की यदि कोई आत्मा है तो वह है क्षमा । किसी के साथ कलह क्लेश झगडा करके हमारी आराधना समुचित नहीं हो सकती । अत हम पूर्ण निखालस और सरल वने । भूल चाहे किसी की हो तुम स्वय स्वीकार कर लो, जव तक छद्मस्थ है भूल होना स्वाभाविक है । जो कभी भूल न करे उसे भगवान कहते ह । जो भूल कबूल करे उसे इन्सान कहते है जो भूल कबूल न करे उसे हैवान कहते है । जो अपनी भूल दूसरो पर डाले उसे शैतान कहते हैं। वधुओ, भगवान वनना है तो पहले इन्सान बनो। पर्युपण यही सदेश देता है क्रोध छोडो, मान छोडो, ममत्व छोड़ो, जीओ और जीने दो । सब पर्वो का राजा यह पर्युषण है । इसीलिए इसे पर्वाधिराज के नाम का सम्बोधन दिया यह शिरोमणि पर्व हमारी आत्मा को पावन बनाने आया है । कवि के शब्दो मे कहु-

पर्व तो वहुत प्रचलित है देश मे
सभी मनाते है उमग से
किन्तु पर्वो का राजा है पर्युषण
आओ इसे मना ले क्षमाके उपहार से

तीसरा अधिराज है तीर्थाधिराज-वैसे तो वडे-वडे सुन्दर रमणीय चमत्कारी तीर्थ हमे मिले है लेकिन तीर्थो का यदि कोई शिरोमणि तीर्थ है तो तीर्थाधिराज शत्रुजय तीर्थ । इस पावन भूमि का जितना गुणगान कर उतना ही कम है। इसके

एक-एक कण में बडा इतिहास छिपा है जिसका कण-कण पवित्र है। जिसकी रज को मस्तक पर लगाया जाये तो भाग्य ही बदल जाये। इसकी रज और पानी को यदि आँखों में अञ्जन किया जाये तो अन्धे को रोशनी मिल जाये ऐसी निराली महिमा है तीर्थाधिराज की। इस तीर्थ की गरिमा को क्या बताऊँ शब्द नहीं मेरे पास।

हार को जीत में बदल देने वाली एक छोटी सी बात मुझे याद आ रही है। एक राजा अपने राज्य को हार गया और घबराकर आत्महत्या करने की सोची।

रास्ते में कोई गुरुराज मिले और तीर्थाधिराज की महिमा को बताया, और कहा जा वत्स, वहाँ की रज को मस्तक पर लगा ले, तेरी हार जीत में बदल जायेगी।

चल पडा शंत्रुजय का ओर, दादा के दर्शन पूजन कर रज को मस्तक पर लगाया। कुछ समय ध्यान किया। अनेक सिद्धियों की प्राप्ति हुई। अपने देश आकर फिर से युद्ध कर विजयी बना। अपना राज्य वापिस मिल गया यहां तक शत्रु राजा का राज्य भी मिल गया।

वाह! क्या महिमा है इस तीर्थाधिराज की। अरे, एक अधिराज मिले तब भी कितनी खुशी होती है। हमें तो एक साथ तीन-तीन अधिराज मिले हैं वाह कितनी आनंद की बात है। अब तो मानव जन्म को सफल बनाने की कोशिश करो। ऐसा जन्म बार-बार नही मिलने वाला है। इस जीवन को सफल बनाने की कोशिश करो। ऐसा जन्म बार-बार नहीं मिलने वाला है। इस जीवन की सफलता इन तीन अधिराज की आराधना करने से ही हो सकती है।

लगा सको तो बाग लगाना,
आग लगाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाना,
दिल जलाना मत सीखो।
पिला सको तो अमृत पिलाना,
विष पिलाना मत सीखो॥

काम धोखे का है बात ईमान की।
पूजा शैतान की है चर्चा भगवान की।
दुनिया की दुःख दुविधा चाहे तो चाहे देखे।
सीरत हैवान की है, सूरत इन्सान की॥ ❖

> क्रोध बड़ा भयंकर पाप है, यह मनुष्य की काया में ताप, मन में सन्ताप और जीवन में उत्पात करता है।
>
> जैसे नदी बह जाती है और लौटकर नहीं आती उसी तरह रात और दिन मनुष्य की आयु लेकर चले जाते हैं।

पर्युषण का प्राण-क्षमापना

सा तत्वदर्शिता श्री जी म सा., सादड़ी

पर्वो का राजा पर्युषण का प्राण हे क्षमापना। आत्मशुद्धि करने के लिए पवित्र गगा और पापो को धोने के लिए स्पेशल साबुन इस पर्व के स्वागत मे आत्मा के स्वागत का समावेश है। क्षमा मनुष्य को शात ओर सहनशील बनाती हे। जहा क्लेश, कलह का काटा पत्थर ओर रागद्वेष का काटा वाला पौधा उगा है वहा पर क्षमा नया प्रकाश ओर नई रोशनी फेलाता हे जिस प्रकार हृदयरोग को देखने के लिए कार्डियोग्राम की जरूरत होती है। केसर रोग को जानने के लिए थर्मोग्राफ की जरूरत होती हे। फेफडा के रोग को खोजन के लिए एक्सरे की जरूग्त होती है। ठीक वैसे ही आत्मा के रोगो को देखने के लिए पर्युषण-सवत्सरी पर्व की आवश्यकता होती हे। यह पर्व ऐलान करता है कि दुश्मनी की वसुलात दुश्मनी से नहीं दिव्यता से दो, शत्रुता से नही स्नेह से वसुलात अदा करो। बैर और वात्सल्य के सघर्ष मे विजय वात्सल्य की हुई हे। हमारे इतिहास म जल और अग्नि का जितना भी सघर्ष हुआ उसम भी विजय जल की हुई ह। कहा परमार्थ मूर्ति महावीर? कहॉ तेजोलेश्या छोडता गोशालक? कहॉ गुणसेन? और कहा अधम अग्निशर्मा? उन महापुरुषो ने विष के भरे घडे को अमृत मे बदल लिया धन्य हे उनकी क्षमासाधना को क्षमा की अगोचर धरती को खोजने का कोई मत्र है तो वह है मिच्छामि दुक्कडम् क्षमा के प्रयोग केन्द्र म प्रवेश करने के लिए मिच्छामि दुक्कडम् एक पासपोर्ट हे, इस पासपोर्ट के बिना अगर भूल से भी क्षमारूपी महल मे प्रवेश कर लिया तो, ध्यान रखना क्रोधरूपी द्वारपाल वापिस कर देगा। जिसके पास क्षमारूपी पासपोर्ट है उसे द्वारपाल हैरान नही कर सकता, क्षमा का टिकिट पास होगा तो क्रोध की ताकत नहीं कि अपना कुछ बिगाड सके। क्षमा देना सरल हे किन्तु क्षमा मागना कठिन। कारण क्षमा देने मे गोरव का इतना हनन नही होता, किन्तु क्षमा मागने मे क्रोध, मान दोनो को दबाना पडता हे किन्तु हमारे पास क्षमा का शस्त्र हे तो डरना किसवात का। पालक ने पाचसो मुनियो को घाणी मे पिला दिया किन्तु 499 मुनियो ने क्षमा का सहारा लिया जरा भी क्रोध को आने नहीं दिया किन्तु गुरु ने क्रोध कियातो विराधक बने, दुर्गति का सफर करना पडा।

एक समय की बात है। एक माली बगीचे मे काम कर रहा था उस बगीचे से उसे बहुत प्यार था एक समय की बात है सूर्य ने अलविदा ले ली, सध्या खिली हुई थी, माली गार्डन का दरवाजा बद कर निकल ही रहा था, इतने मे एक रोता

हाफंता व्यक्ति माली के चरणों में आ गिरा। भैय्या मुझे शरण दे दो तुम्हारा उपकार कभी नही भूलूंगा। माली ने कहा तू इतना घबराया क्यों है क्या तूने चोरी की है, खून किया है? हाँ भाई मैंने एक बच्चे की हत्या की है लोग मेरे पीछे पडे हैं कृपया मुझे शरण दो।

माली सोचता है। इसे मौत का कितना डर है लेकिन जिसको मारा है उसकी क्या दशा हुई होगी? लेकिन यह मेरी शरण आया है। मुझे शरण देनी चाहिये।

शरणागत को शरण

माली कुछ भी हो फिर भी एक मनुष्य था, मानवता का संगीत उसके दिल में गूंज रहा था। माली ने कहा, बगीचे में एक छोटी कोठरी है उसमें घुस जाओ, मैं बाहर से ताला लगा दूंगा और रात को 12 बजे आकर खोल दूंगा। उसके बाद तुम अपने रास्ते चले जाना। माली तो ताला लगाकर घर चला गया, माली के एक ही लडका था, उसे घर में न देख पत्नि से पूछा आज बेटा अभी तक आया क्यों नहीं। पत्नि ने कहा खेलने गया था, मैं भी उसकी राह देख रही हूं। माली दूर तक देखने जाता है। इतने में ही दूर से एक समूह का आना देखा। सभी चिल्ला रहे थे एक युवक के [illegible] ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे थे [illegible]

[illegible]

पर करुण रुदन करने लगा यह सुन पत्नि आयी ऐसा दृश्य कठोर दिल को भी पिघला दे उसकी भी आँखें चकरा गयी और गिर पडी। लोगों ने उसे खूब आश्वासन दिया। बालक की तरफ देखा तो शरीर पर एक भी घाव नहीं था। एक भाई ने कहा इस बच्चे पर जो सितम गुजरा है वो मैंने देखा है। अचानक एक युवक आया, बच्चे की छाती पर चढ गया और गला घोंट दिया, मैं पहुंचा तब तक बच्चे ने प्राण छोड दिये, हम उसके पीछे बहुत भागे लेकिन वह बगीचे की तरफ से गया था लम्बा श्याम वर्ण का काला कोट पहने था। माली हैरान रह गया। शाम वाला दृश्य उसके सामने मंडराने लगा। जिसको मैंने जीवन दान दिया वही मेरे बेटे का खूनी था। उसे क्या जरूरत पडी बच्चे को किस कारण मारा? क्या अपराध किया था मेरे बच्चे ने? माली का खून खोल उठा, बदला लेने के लिए बच्चे का अग्नि संस्कार इत्यादि करने के बाद मन में एक विचार उद्भव हुआ, उसे मारने से क्या मतलब, मुझे एक संत मिले थे उन्होंने कहा था वैर का बदला वैर से नहीं प्रेम से लेना चाहिये वैर से भव की परम्परा बढती है।

वैर विरोध से कभी सुख नहीं मिलता, दुर्नीति, [illegible] कभी नहीं फलता। शरणागत की रक्षा करना मेरा [illegible] है। [illegible]

[illegible]

करे, दान दे, साधना करे लेकिन क्षमा के बिना कोई लाभ नहीं । पहले अतर के कषायो की कालिमा को साफ करो ।

माली शत्रु को मित्र समान मानने लगा पत्नि से कहा आज मै बगीचे मे रात्रि व्यतीत करूगा । मालिन ने कहा आप जा रहे हे तो म भी चलूगी यहा अकेली नहीं रहूगी । मुझे बेटे की भनक सुनाई पडती है । माली ने कहा एक शर्त हे तुम वहा कुछ भी बोलोगी नहीं, जो करू देखती रहना । दोनो गये, ताला खोल खूनी को बाहर निकाला । खूनी माली के चरणो मे गिर गया । तब माली ने कहा-अरे खूनी जिसकी तूने हत्या की ह वह और कोई नहीं मेरा ही बेटा था, तुम्हारा उसने क्या बिगाडा था? तू मरने के डर से मेरे पास आया व उस बालक को कितना दु ख हुआ होगा । यह सुन खूनी कापने लगा । माली ने कहा, डरो नहीं, मै तुम्हे मारूगा नहीं, क्योकि तुम मेरी शरण आये हो ।

मालिन समझ गयी, यही खूनी हे । उसका खून बदला लेने के लिए उछल रहा था, लेकिन माली को न बोलने का वचन दिया था । माली ने खूनी को रिहा कर दिया, माली ने पत्नि से कहा खून से भीगा दाग खून से नहीं पानी के धोने से मिटता हे ।

हमारा इतिहास क्षमावीरो से भरा पडा है । देखो, माली ने खूनी को प्रेम से रिहाकर दिया, क्रोध का बदला वैर से नहीं दिया। हमारे तीर्थपति प्रभुवीर को कितने कष्ट दिये गये फिर भी सभी के प्रति कैसी क्षमा । अरे, वह तो मेरे उपकारी है, मुझे मोक्ष की पगड़ी पहनायी । ताजा लोच कियाहुआ, क्या उन्हे 'वेदना' नहीं हुई होगी? वे तो अपने से ज्यादा सुकुमार थे, कोमल थे लेकिन कष्ट देने वाले को भी उपकारी माना समता रखी । खधक मुनि की चमडी उतारी गयी फिर भी केसी भावना उतारने वालो के प्रति । अरे, भैय्या तुम कहो वेसे वैठ जाऊॅ, खडा हो जाऊॅ, तुम्हे कष्ट नहीं होना चाहिये, क्योकि विहार करने से लूखी सूखी खाने से मेरी चमडी कठोर हो गयी है, इसलिए आपकी अनुकूलता हो वेसे बेठू । कैसे क्षमाशील मुनि ।

पर्युपण हमे यही सदेश देने आया है । भूतकाल की भूलो को भूल जाओ और प्रेमभरा वर्तमान खडा करो । शत्रु की शत्रुता को भूल जाओ, उसे मित्र बनाकर गले लगालो । यदि जीवन को दिव्य ओर भव्य बनाना है तो भूलने की तथा बरदाश्त करने की ये दो क्रियाए करनी पडेगीं । हमे कैमरे की तरह नहीं दर्पण की तरह बनना है । केमरा लम्बे समय तक आपके प्रतिबिम्ब को पकड कर रखता है किन्तु दर्पण मे आपका प्रतिविम्ब तुरन्त हट जायेगा, रहेगा नहीं हमे कैमरे की तरह भूलो को पकडकर नहीं रखना, दर्पण की तरह स्वच्छ रहना है । जो भूलो को भूल गया उसका जन्म टल गया जो भूलो को भूला नहीं, वह भव परम्परा को बढा गया । हम वेमनस्य को छोड क्षमा का आदर्श जागृत करे । यही शुभ भावना । ❖

भक्ति के अंग : एक अवलोकन

सुश्री सरोज कोचर, जयपुर

आदि पुराण में कहा गया है कि- ''भक्ति : श्रेयोऽनुबंधिनी'' अर्थात् भक्ति कल्याण करने वाली है। बृहन्नारदीय पुराण में कहा गया है कि-

यथाऽऽलोको हि जन्तूनां चेष्टाकारणतां गतः
तथैव सर्वसिद्धीनां भक्तिः परमकारणम्

जेसे लोक में प्रकाश ही सभी प्राणियों की चेष्टाओं, कार्यो का कारण है वैसे ही भक्ति सर्व सिद्धियों का परम कारण है।

भक्ति, ज्ञान और कर्म-ये तीन साधना के बड़े मार्ग हैं। ज्ञान मानव जीवन को शुद्ध अद्वेत तत्व अर्थात् परमात्मा की ओर आकर्षित करता है, कर्म उसे व्यवहार की ओर प्रवृत्त करता है किन्तु भक्ति या उपासना का मार्ग ही ऐसा है, जिसमें संसार और परमार्थ दोनों की एक साथ मधुर साधना करना आवश्यक है। माधुर्य ही भक्ति का प्राण है। [illegible] अर्थात आराध्य के का ज्ञान होगा। प्रभु चरणों में स्तुति-स्तोत्र के पुष्प अर्पित होंगे। आत्मा के ज्ञान रूप का दिग्दर्शन कराने वाले आचार्यो ने भगवान के चरणों में स्तुति-स्तोत्र के पुष्प अर्पित किये हे। मात्र स्तुति-स्तवन या स्तोत्र ही नही अपितु पूजा, वन्दन, विनय मंगल और महोत्सव के रूप में भी भक्ति विकसित होती रही है। ये भक्ति के अंग माने जाते हैं जिसका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है-

पूजा-अभिधान राजेन्द्र कोश में पूजा शब्द 'पूज' ही 'गुरोश्च हलः' के द्वारा दीर्घ होकर पूजाका रूप धारण कर लेती है।'पूज' धातु पुष्पादि के द्वारा अर्चन करने में गन्ध, माला, वस्त्र, पूजा, पात्र, अन्न और पानादि के द्वारा सत्कार के अर्थ में स्तवादि के द्वारा गुणगान करने में और पुष्प, फल, आहार तथा वस्त्रादि के द्वारा उपहार करने में आती है।

शास्त्रकारो के अनुसार अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधुओ तथा शास्त्र की नाना प्रकार की पूजा की जाती है उसे पूजा विधान समझना चाहिये। यह दो प्रकार की हे द्रव्य पूजा और भाव पूजा। किसी न किसी द्रव्य से आराध्य के मूर्ति, बिम्ब आदि की पूजा करना द्रव्य पूजा है ओर शुद्ध भाव से क्षायोपशमिकादि भाव के प्रतीक जिनेन्द्र को नमस्कार करना, उनका ध्यान लगाना अथवा उनके गुणो का कीर्तन करना भाव पूजा है। जाबाल योग के अनुसार-

रागाद्यपेत हृदय वागदुष्टानृतादिना ।
हिसादिरहित कर्म यत्तदीश्वरपूजनम् ॥

अर्थात् राग-द्वेष आदि मे रहित हृदय, अनृत आदि दोषो से रहित वाणी एव हिसा आदि से रहित कर्म का होना यही ईश्वर पूजन कहलाता है।

स्तुति-स्तोत्र—स्तुति को ही स्तोत्र कहते ह। आराध्य के गुणो की प्रशसा करना स्तुति है। लोक मे अतिश्योक्तिपूर्ण प्रशसा को ही स्तुति कहते है। पर यह परमात्मा पर घटित नहीं होती क्योकि उसमे अनन्त गुण है जिनका किसी भी रूप मे कथन करना सम्भव नहीं है। अत स्पष्ट है कि अपनी लघुता दिखाते हुए भगवान की प्रशसा करना स्तुति हे। भगवान जिनेन्द्र के गुणो का सतत स्मरण और आराध्यमय हो जाने की चाह हृदय मे पवित्रता का सचार करती है। उस पवित्रता से पुण्य प्रसाधक परिणाम बढत है जिससे भक्त स्वय सब कुछ प्राप्त कर लेता है। स्तुति को ही स्तोत्र कहते है, दोनो मे कोई मौलिक भेद नहीं है।

सस्तव, स्तव और स्तवन—सस्तवन सस्तव अर्थात् सम्यक् प्रकार से स्तवन करना ही सस्तव कहलाता है। सस्तव मे सम्यक् शब्द है अन्यथा वह स्तव और स्तवन ही है। अभिधान राजेन्द्र कोश मे सस्तव के दो भेद हैं सम्बन्धी सथव और वयण सथव। सम्बन्धी सथव अर्थात् माता-पिता और सास-ससुर के परिचय मे है और दूसरे का तात्पर्य श्लाघारूप वचनो से है। अमरकोश म 'सस्तव स्यात् परिचय कहकर सस्तव को केवल परिचय' रूप मे स्वीकार किया गया है। यह अर्थ लौकिक पुरुष के साथ स्वीकार नहीं करके मात्र आराध्य अलौकिक व्यक्तित्व से सम्बन्धित है। उसमे भी जिनेन्द्र के अनन्तचतुष्टय की श्लाघा ही प्रतीत होती है। मूलाचार मे तीर्थंकर के असाधारण गुणो की पशसा करने को स्तव स्वीकार किया गया है। षड्आवशयक सूत्र मे चौवीस तीर्थकरो की प्रशसा को स्तव कहा गया है। स्तव मे गम्भीर अर्थ वाला तथा सर्वांग का वर्णन रहता है। इसके छ भेद कहे गये है-नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव।

वन्दना—मूलाचार के अनुसार तपगुरु, श्रुतगुरु, गुणगुरु, दीक्षागुरु आदि को सम्मानपूर्वक मन-वचन-काया की शुद्धि से सिर झुकाकर प्रणाम करना वन्दना है। आवश्यक सूत्र के अनुसार भगवान महावीर के प्रमुख शिष्यो को नमस्कार करना वन्दना है। प्रमुख शिष्य गणधरा को गुरु सज्ञा से अभिहित किया गया है। उमास्वाति के अनुसार जो दर्शन शुद्धि के निमित्त उचित समय पर भगवान जिनेन्द्र की वन्दना

करता है वह सच्चा जैन है। हरिभद्र सूरि ने भगवान जिनेन्द्र के सम्मुख शुद्ध मन-वचन-काया से झुकने को वन्दना कहा है। जिनेन्द्र के स्थूल चिह्न, बिम्ब या मूर्ति की वन्दना को चैत्यवंदन कहते हैं। मन, वचन, काया के प्रशस्त व्यापार का अभिवादन है यह अभिवादन वन्दन है।

विनय—आराध्य की महानता से झुक जाना विनय है। स्वार्थ वश झुकना विनय नही है। विशेष रूप से विनय एवं श्रद्धा करना दर्शन विनय है। आचार्य पूज्यपाद की दृष्टि में **शंकादिदोष रहितं तत्त्वार्थश्रद्धानं दर्शन-विनयः** है अर्थात् शंकादि दोषों से रहित, तत्त्वार्थ श्रद्धान को दर्शन विनय कहते हैं जिससे मोक्ष प्राप्ति होती है। विनय पवित्र हृदय का प्रतीक है। पवित्र हृदय ही दूसरों के गुणों पर मुग्ध हो सकता है।

अत्यन्त आदर के साथ ज्ञान ग्रहण करना, अभ्यास करना और स्मरण आदि करना ज्ञान विनय है। विनय के होने पर ज्ञान लाभ, आचार शुद्धि और सम्यगाराधना होती है।

मंगल—जो मलों को गलाता है, नष्ट करता है, घातता है, दहन करता है, विध्वंस करता है, शुद्ध करता है उसे मंगल कहते हैं। [illegible] ने पाप को ही मल माना है। मंगल शब्द का अन्य अर्थ है—"**मंगं लातीति मंगलम्**" [illegible]

[illegible]

की आत्मा शुद्ध एवं निर्मल हो जाती है। समस्त मल गल जाते हैं और अनन्त सुख प्राप्त होता है। कार्य निर्विघ्न रूप से समाप्त हो यही मंगल का प्रयोजन है।

महोत्सव—आराध्य के गुणों से आकर्षित भाव जब बाहर आते हैं तो वे कतिपय मार्गों का सहारा लेते है। नृत्य, गायन, वादन, नाटक, रास और रथ यात्रा आदि सभी भक्त के भावों की अभिव्यक्ति है। जैन भक्तों के भावो की अभिव्यक्ति इन रूपों में हुई है।

इस प्रकार मनुष्य जीवन की किसी भी स्थिति मे हो वह सर्वत्र अपने लिये भक्ति का दृष्टिकोण अपना सकता है। मानव को अपनी पूर्णता एवं कल्याण के लिए भक्ति की आवश्यकता है। किसी भी देव तत्त्व को प्राप्त करने के लिए मानव के मन की अविचल स्थिति भक्ति के लिए अनिवार्य दृढ़भूमि है। भक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है शांति परकता। जैन भक्तों का आराध्य मात्र दर्शन और ज्ञान से ही नहीं अपितु चारित्र से भी अलंकृत है। इसी में उसकी पूर्णता है। यद्यपि चारित्र एवं भक्ति पृथक्-पृथक् हैं पर दोनों का समन्वय मिलना कठिन है। [illegible]

[illegible]

धर्म और आत्मा

श्री तारकेश्वर गोलछा, बीकानेर

यह मनुष्य लोक नाम का क्षेत्र है, उसमे शरीर नामक नगर है। इस नगर मे मोह नामक राजा स्वेच्छा पूर्वक विलाण करता है । उस राजा का माया नाम की पत्नि अनग (अहकार) नामक पुत्र और लोभ नामक महामत्री है । सर्व सुभटा मे शिरोमणि क्रोध नामक महायोद्धा है। उस राजा के पास रहने वाले राग-द्रेप नामक दो अगरक्षक है। मिथ्यात्व नामक माडलिक राजा है । मान नामक बडा हाथी, मोह राजा का वाहन है। उस राजा को इन्द्रिय रूपी अश्व पर रहने वाला विपय नामक सेवक है, इत्यादि महान सैन्य उस राजा का है। उस नगर मे कर्म नामक किसान एव प्राण नामक बडा व्यापारी है और मानस नामक रक्षापाल है।

एक दिन धर्म नामक राजा ने मानस नामक रक्षापाल को रिश्वत म उपदेश दिया कि-"इस भयकर ससार मे जीव को जन्म के समय दुख होता है। वृद्धावस्था मे भी दुख होता है। यह दुख एक बार नही अपितु बार-बार होता है, इसीलिये हे मानस तू जाग्रत हो तथा इस शरीर मे काम-क्रोध-लोभादि चोर जो ज्ञान रूपी रत्न को चोरी कर रहे है और तू उनकी रक्षा कर रहा है अब तू उनका दमन कर। हे महानुभाव माता-पिता-भाई-बहिन-पत्नि-बेटा-बटी-धन-घरादि तुम्हारा कोई भी नही है सब क्षण भगुर है। तुम स्वय अपनी भौतिकता से नष्ट हो जाओगे। सिर्फ मै (धर्म) तुम्हारा रहूगा। अत मेरे चितन को समझ मेरी पुकार को सुन और हे मानस तू जाग्रत हो।

व्यवहार की बहुत समझदारी रखना। चूकि आशा ही आशा मे मनुष्य अपना क्षण-क्षण मे क्षीण होता आयुष्य नहीं देख सकता अत हे मानस तू जाग्रत हो। जरा-व्याधि-मृत्यु तीनो तरे पीछे लगे है इसलिय तू प्रमाद मत कर और विचार किये बिना जाग्रत होकर मेरे लिये अपन नगर का द्वार खोल द। इन्द्र और उपेन्द्र भी सब मृत्यु के जाल म फस जात है तो उस 'काल' के पास इन प्राणिया का कौन शरणाभुत है । दुख रूपी दावानल की जली हुई ज्वाला से भयकर दिखता हुआ इस ससार रूपी वन मे बाल हिरण के समान कौन शरणाभुत है अर्थात इस ससार म कोई अपना नहीं है। अत हे मानस, तू जाग्रत हो और द्वार खोल। और उस मानस नामक रक्षापाल ने धर्म रूपी उपदेश रूपी धन (रिश्वत) का ग्रहणकर द्वार का भेदन करवाकर उस नगर म प्रवेश किया। उस धर्मराजा को ऋजुता नाम की रानी है। सतोप नामक महामत्री है। सम्यक्त्व नामक माडलिक राजा है। महाव्रती रूपी सामन्त है । सर्व विरती नामक पुत्र और देशविरती नामक प्रपोत्र है। अणुव्रत रूपी सेना, मार्दव नामक गजेन्द्र है। उसम उपशम आदि मुख्य योद्धा है और सच्चारित्र नामक रथ मे बैठा हुआ श्रुत नामक सेनापति है तथा गुणव्रत और शिक्षाव्रत रूपी दो अगरक्षक भी उस धर्मराजा के है।

फिर धर्मराजा ने उस नगर मे प्रवेश कर मोहराजा को जीतकर उस नगर से निकाल दिया। फिर धर्मराजा ने सर्व सैन्य को आज्ञा दी कि "इस मोहराजा को जरा भी स्थान नहीं देना।" इस प्रकार धर्मराजा की आज्ञा होने पर भी कभी कोई मोहराजा के वश हो जाये तो उसे कर्म परिणाम फिर से मार्ग मे स्थापन करता है। ✤

जन्म-मृत्यु

मुनि श्री मणिप्रभ सागर जी म., नन्दुरवार

जन्म है वहाँ मृत्यु है।

—आदमी जन्म लेता है, जीता है, साधना करता है और आखिर में प्रकाश पाता है। मगर जो साधना किये बिना भोग में और राग में मरते हैं वह अज्ञानी हैं।

—मृत्यु यानी आत्मा का नीरस स्थान से सरस स्थान में जाना है। वृद्ध आदमी को कोई नहीं देखता, मगर वही मरने के वाद वालक रूप में आता हे तो कोई कहता है-''वापस आया है।''

—मौत यह निश्चित है, इस वात का विचार रखकर मन परिपक्व वनाने का समय जव मिलता है तव मौन रखकर समता धारण करके अपना भविष्य काल पर सौंप देना चाहिए।

—हर एक मानव को जीना अच्छा लगता है, मगर वह अपने हाथ में नहीं। मृत्यु किसी को भी नहीं चाहिए मगर वह एक दिन सामने आने वाली है। हम जो नहीं चाहते उसे चाहना चाहिए। मोह को छोड़कर मृत्यु से दोस्ती करनी है।

—ए मूर्ख मानव। तू मृत्यु से क्यों डरता है? क्यों उससे डरकर भागता है। हर एक जन्मे हुए जीव के लिए मृत्यु निश्चित है। अगर तुझे इससे भागकर छुटकारा [illegible] करना।

—[illegible]

नहीं लेने वाला, दूसरों से द्रोह-झगडा न करने वाला और सचाई से चलने वाला ऐसा पवित्र आदमी मुझे कव पवित्र करेगा।

—यदि मृत्यु नही होती तो जन्म भी नही होता। नया कार्य करने के लिए नया क्षेत्र भी नहीं मिलता। सभी पूर्वजों के लिए घर में जगह नहीं रहती।

—अज्ञानी आदमी को मृत्यु नाम भी अच्छा नहीं लगता। अरे, मै तो चला जाऊंगा, मेरा कौन रक्षण करेगा, मैं कहां जाऊंगा। इस तरह की व्यथा को वह अनुभव करता है? मगर ज्ञानी तो जानता है आत्मा का ज्ञान स्वभाव अविनाशी है, जीर्ण देह को छोड़ने में इस अविनाशी स्वभाव को कुछ भी नहीं लगता। समाधि रखने से अनन्तकाल का अमृत प्राप्त होता है।

—अगर इस शरीर में राग उत्पन्न नहीं होते तो उसके ऊपर से ममता नहीं हटती। राग उत्पत्ति से हर्ष मानना चाहिए, इसके प्रभाव से पूर्व कर्म की निर्जरा होगी और [illegible] छुटकारा [illegible]

—[illegible]

के पुण्य की कमी है इसलिये धनाभाव है और इस अभाव से वह कॉटेज वार्ड की सुख सुविधाओ से वचित रहता है । सो समझ लीजिये कि अगर आपको कॉटेज वार्ड की सुख सुविधा चाहिये तो आपको पुण्य का खजाना भरना पड़ेगा और वह भरने के लिये पर्वाराधना करनी होगी अन्यथा आप कोरे रह जायगे। कॉटेज वार्ड रूपी यह मानव शरीर पाकर भी आप कोरे रह जायेगे। कुछ भी पल्ले नहीं पडेगा। तो समझ लीजिये कि आपको इस कॉटज वार्ड रूपी जीवन को सार्थक बनाने के लिये कुछ न कुछ शुभ कार्य अवश्य करना हे। ज्ञानिया ने करने के लिये बहुत कुछ बताया है लेकिन उनकी यह बात ध्यान दने योग्य है, बताया ह कि ज्ञान और क्रिया दो वस्तुए है । अकेला ज्ञान या अकेली क्रिया सार्थक नहीं होती। कहा है-''ज्ञान, क्रिया ओर मोक्ष'' अर्थात ज्ञान आर क्रिया से मोक्ष की प्राप्ति होती है, किन्तु केसे ज्ञान से? तो कहत हे कि सम्यक् ज्ञान और सम्यक् क्रिया । इससे सम्यक् भावना जागृत होती है और उससे श्रद्धा उत्पन्न होती है। तो सिद्धि के लिये भाव और श्रद्धा का होना भी परमावश्यक है अन्यथा क्रिया तोतारटत होकर ही रह जायेगी जैसे कि तोता सारे दिन भर राम-राम रटता रहता है लेकिन फल से लाभान्वित नहीं होता। इसलिये कल्याण मदिर स्तोत्र म कहा कि, यस्मात क्रिया प्रति फलन्ति व भावशून्य । यानी कि भाव शून्य क्रिया फलदायी नहीं होती। तो आवश्यकता है ज्ञान से मण्डित भाव और श्रद्धायुक्त क्रिया की, जो हम पर्व के दिना मे करनी है।

पर्व निरन्तर हमे यही सदेश दे रहे है कि अगर आपको अपना मानव जीवन सफल बनाना है तो इन दिनो मे आप इसी पकार की क्रियाए करे। इससे आपको अपनी लक्ष्य प्राप्ति म सफलता मिलेगी।

पर्व सदश दे रहे है कि इसके अलावा, आप एक और बात का भी ध्यान अवश्य रख, वना आप डगमगा जायगे। तीन बात ध्यान देन योग्य है। अवज्ञा, अविधि, और आशातना। ये तीन बात बहुत महत्त्वपूर्ण है जिनका हमे हमारे जीवन म काई भी क्रिया करते हुए पूर्ण ध्यान रखना जरूरी है। वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा ने जो फरमाया उसके विपरीत कुछ करना, सुनना अवज्ञा है उन परमात्मा की । उन्होने जो विधि बताई उसके विपरीत करना यह अविधि मार्ग कहलाता हे और उनका विनय, बहुमान आदि न करना उसके विपरीत करना आशातना कहलाती हे। इन तीन बाता की ओर ध्यान न देने से निरन्तर अशुभ कम का बधन होता है। अतएव पर्वाधिराज का यही शुभ सदेश है कि आपसे अगर कुछ बन पडे तो अवश्य शुभ कार्य यथाशक्ति अवश्य करना, कराना और अनुमोदन भी करना। किन्तु यदि कुछ न बन पडे तो आप वीतराग परमात्मा की अवज्ञा, अविधि और आशातना से तो अवश्य बचना। बस हमारा यही सक्षिप्त सदेश आप ध्यान मे रखे तो कल्याणकारक होगा।

हमारा यही सदेश हे कि आपने अपनी आत्मा के ऊपर अनादि काल से जो कर्मो का मैल चढाकर उसे भारी बना रखा हे उसे हल्का कर जप-तप-ध्यान-वदन-अर्चन-पूजन आदि शुभ कार्यो के द्वारा जिससे वह सर्वथा निर्मल, निर्मुक्त होकर अजर-अमर पद प्राप्त कर सके।

मनुष्य जन्म की सफलता

श्री राजमल सिंघी, जयपुर

कभी-कभी धार्मिक चर्चा चल पडती है तो कोई कहता है कि धार्मिक क्रियाएं तो मेरे दादाजी करते हैं, कोई कहते हैं कि आपके जितनी उम्र के होंगे तब हम भी धार्मिक क्रियाएं करेंगे, कोई कहते हैं कि हम तो धार्मिक क्रियाओं में विश्वास नहीं रखते और ऐसा विश्वास रखते हैं कि किसी का बुरा नहीं करना-यही धर्म है, बाकी सब फिजूल है। कोई कहते हैं कि धार्मिक क्रियाएं करने वाले (अर्थात् सुबह-शाम प्रतिक्रमण करने वाले, सदैव पूजा पाठ करने वाले, व्याख्यान सुनने वाले, धार्मिक क्रियाओं में धन खर्च करने वाले) दिन भर अधर्म करते रहते हैं। कोई कहते हैं कि हमको तो धार्मिक कार्यों में दिलचस्पी नहीं है, हमको तो सदा टी.वी. देखने, ताश-पत्ती खेलने, दोस्तों के साथ गप्पे मारने में आनंद आता है। कोई कहते हैं कि धार्मिक शास्त्र इत्यादि सब कपोल कल्पित हैं, आत्मा, परलोक, स्वर्ग, नर्क, मोक्ष इत्यादि कुछ भी नहीं है, जो कुछ है इसी संसार में है। खूब खाओ पिओ, मौज करो, मनुष्य जन्म मिला है तो उसको आनन्द में बिताओ। भगवान ने सारी चीजें, जमीकंद, मांस, [illegible] सभी खाने के लिए ही [illegible] चाहिए। रात्रि भोजन न करने [illegible] हैं, तो पार्टियों इत्यादि में उनके साथ रात्रि को नही खाएंगे तो उनके साथ मेल-मिलाप कैसे रह सकेगा। कोई कहते हैं कि हम धार्मिक कार्यों में व्यस्त रहें तो कमाएं कैसे, बाल-बच्चों को पालें कैसे?

इस प्रकार की अनेक बाते सुन सुनकर मैं असमंजस में पड जाता हूँ कि कैसे-कैसे ख्याल लोगों के हैं और उनके लिए मनोकामना करता हूँ कि उनको सद्‌बुद्धि प्राप्त हो। कोई-कोई मेरी बात सुनने को तैयार होता है, तो उनको समझाता भी हूँ। बाहर रहते हों तो उनको पत्र भी लिखता हूँ किन्तु खेद है सिवाय दो-चार भाई जैसे मित्रों के किसी पर कोई असर नहीं पड़ता और वे धार्मिक आराधनाओं की ओर अग्रसर नहीं होते।

ऐसे व्यक्तियों को तीर्थंकरों एवं ज्ञानी महात्माओं के उपदेशों को ध्यान में रखते हुए निवेदन है कि मनुष्य जन्म, आर्य देश, जैन धर्म, सभी इन्द्रियों की संपूर्णता आदि जो हमको मिले हैं वो हमारे अनेक पूर्व जन्मों में किए हुए [illegible] पुण्य कर्म, [illegible]

ज्ञान-चारित्र रत्नो के आधार पर उत्तरोत्तर प्रगति करे एव मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो । जिस प्रकार आर्थिक आदि क्षेत्रो मे पूरी मेहनत करके सभी प्रगति करने की इच्छा रखते है, उसी प्रकार पूर्ण पुरुषार्थ करके हमको धार्मिक क्षेत्र मे भी प्रगति करनी चाहिए यही मनुष्य जन्म का ध्येय है, वी ऑल एन्ड ऑल है ।

हम ध्यान मे रक्खे कि हमारा जीवन अनन्त वर्षों पूर्व नीगोद के जीवो से आरभ हुआ जहॉ एक ऑख के पलकारे मे हमारा 175 वार जन्म और मरण हुआ । फिर मनुष्य भव से कोई एक जीव मोक्ष मे गया तो नीगोद का एक जीव, नीगोद से बाहर निकलकर आया (यह उपकार मोक्ष मे जाने वाले किसी मनुष्य ने किया-क्योकि मनुष्य की गति से ही मोक्ष प्राप्ति हो सकती है) ओर हमारा चान्स आया तो हम भी नीगोद से निकले । निगोद से निकलकर हमारा जीव पत्थर, पानी, आग, वायु, वनस्पति रूपी स्पर्शेन्द्रिय वाला जीव बना, फिर दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय वाला जीव बना और अत मे पचेन्द्रिय वाला बनकर देवता, नारकी, तिर्यच मनुष्य वना । इस प्रकार हमारे जीव ने कर्मानुसार अनन्त वार, अनन्त वर्षो तक जन्म मरण किया ओर ससार मे घोरातिघोर दुख सहे । अब अवसर आया है कि हम मनुष्य बने है तो हमारा कर्त्तव्य बन जाता है कि हम इस मनुष्य जन्म का सदुपयोग करे, इस जन्म को सुधारे ताकि हम विशेषत जन्म, जरा, मरण के दु खो से निवृत्त हो, और मोक्ष प्राप्त कर शाश्वत सुख को प्राप्त करे, वरना फिर कहीं पापाचार करके वापिस नीगोद इत्यादि मे न चले जाए और 84 लाख जीवायोनियो मे भटकते रह। ससार दुख का घर है, यहॉ सच्चा सुख है हा नहीं। जो यहॉ सुख समझते है, वो भ्रम म है। जीव जो भी अकार्य, पाप इत्यादि करता है, व जीव की आत्मा पर चिपक जाते ह । हसते-हसते कर्म वधते है और रोते हुए भी नहीं छूटते ।

अत हमको अठारह पापो-हिसा, झूठ, चोरी, परिग्रह, क्रोध, घमड, कपट, लोभ, राग, द्वेष, झगड़ो, झूठे दोषारोपण, पीठ पीछे दोपारापण, खुश होना-दुखी होना, दूसरा का वुरा वताना और अपनी प्रशसा करना, कपट करके ठगना और मिथ्यात्व रूपी काटे से दूर करना अर्थात् सक्षेप मे कुदेव, कुगुरु, कुधर्म को नहीं मानना ओर नौ तत्वो अर्थात् जीव, अजीव, पाप, पुण्य, आश्रव, सवर, मोक्ष, नर्क, निर्जरा को मानने से दूर रहना पड़ेगा ताकि नए कर्म हमारी आत्मा पर चिपक न सके, आत्मा को दूषित न कर सके ओर जो पूर्व मे कर्म वध गए है और वे आत्मा पर चिपक गए है, वो हम वाह्य एव आभ्यतर तपो द्वारा जला डाले (उपवास करना, भूख से कम खाना, कम वस्तुए खाना, आयबिल, काया को कष्ट देना और विषय-वासना से दूर रहना-ये वाह्य तप है और प्रायश्चित्त, विनय, वैयावच्च, स्वाध्याय, ध्यान एव कायोत्सर्ग-ये आतरिक तप है)

साथ ही हमको अभक्ष्य भक्षण से भी दूर रहना पडेगा जैसे-मास, मदिरा, शहद, मक्खन, बर्फ, जहर, ओले, मिट्टी, बेगन, वहुबीजे, अचार, मुरब्बे, बिदल, वोर इत्यादि तुच्छ फल, अजाने फल, रात्रि भोजन, जमीकन्द, बासी भोजन,

तुरता भोजन (फास्ट फूड), ठंडे पेय, खडे-खडे अथवा चलते फिरते खाना पीना इन सबसे हिंसा होती हैं और बोलते हुए खाना जिससे ज्ञानावरणीय कर्म का बंधन होता है।

हमको ऐसे कार्यो से भी बचना पडेगा, जिनसे हिंसा होती हो, जैसे ऐसे कार्य जिनमें आग लगानी पडती हो, खेती-बाग-बगीचे-दोब, मकान-जमीन-वाहन इत्यादि किराए पर देना, ऐसे कार्य जिनमें जमीन खोदनी पडे एवं गृह निर्माण-सडक, नाले इत्यादि का निर्माण, हाथीदांत, मोती आदि का कार्य, लाख-गोंद, साबुन, खार, लोहा इत्यादि का कार्य, मांस-मदिरा-शहद-अभक्ष्य दवाईयों का व्यापार, मनुष्यों एवं पशुओं के बालों एवं खाल से बनी हुई वस्तुओं का व्यापार, जहर एवं मादक वस्तुओं का व्यापार, फैक्ट्री-कारखाने-घाणी आदि के कार्य, मनुष्यों एवं पशुओं के अंगों के छेदन का कार्य, वन में आग लगाना, तालाब इत्यादि सुखाना, जुआ खेलना-चोरी करना-वैश्यावृत्ति करना, कुत्ता, बिल्ली, खरगोश, कबूतर, तोता, मैना, तीतर इत्यादि का पालना इन पन्द्रह कर्मादानों का त्याग करना चाहिए।

वस्तुओं के उपयोग के बारे में हमको [illegible] नियम लेना चाहिए, ताकि जितनी वस्तुएं [illegible] उतनी ही वस्तुओं [illegible] [illegible]

इत्यादि नहीं देखना, कुश्ती-ताजिए आदि नहीं देखना, नदी-तालाब, कुएं-बावडी-कुंड इत्यादि में नहीं नहाना या तैरना।

इस प्रकार जीवन प्रणाली से हम पाप-कर्मों से बचते हुए अपने मनुष्य जन्म को सफल बना सकेंगे, जो एक मात्र मनुष्य जन्म का ध्येय है। हमको यह नहीं सोचना चाहिए कि हम धर्म बाद में कर लेंगे क्योंकि जो धर्म-कार्य, तप, यात्रा आदि युवावस्था में कर सकते हैं वह वृद्धावस्था मे नहीं कर सकते। कहा भी है कि "काल करे सो आज कर, आज करे सो अब पल में प्रलय होयगी, बहुरि करेगो कब?" केवल किसी का बुरा न करना ही संपूर्ण धर्म नहीं है। धर्म के प्रकार जिनका वर्णन ऊपर किया गया है उन सब में रत रहना ही वास्तविक धर्म है। धार्मिक क्रियाएं करने वालों को भी यह ध्यान में रखना पडेगा कि वे अपनी जीवन प्रणाली एवं सभी कार्य कलापों में ऐसा बर्ताव करें कि उन पर कोई उंगली न उठ सके कि अमुक व्यक्ति धार्मिक कार्य तो करते हैं किन्तु अपने जीवन में नीति नहीं अपनाते, ईमानदारी नहीं रखते। वे व्यापार आदि में झूठ नहीं बोले, कम न दें, किसी की [illegible] न लें, [illegible] किसी का नुकसान भी न करें। [illegible]

पश्चात तो अपना जीवन धर्ममय बना ही लेना चाहिए । धार्मिक पुस्तको का अध्ययन, मनन, चितन और उनके अनुसार आचरण करना ही श्रेयस्कर है । अनन्त ज्ञानी, सर्वज्ञ तीर्थकरो ने एव महापुरुषो ने जो उपदेश दिए है, वो अत्यन्त करुणा करके सत्यरूप मे दिए है, वे कपोलकल्पित नहीं है, उन्होने ससार का सच्चा स्वरूप एव मोक्ष प्राप्ति का सच्चा रास्ता बताया है, हमको उनके कहे हुए पर श्रद्धा रखनी पडेगी- यही सम्यग् दर्शन है । उनके उपदेशो का पालन, आचरण ही सम्यग् चारित्र है जिसका आलबन करना ही पडेगा ।

रात्रि भोजन करने वालो को यही निवेदन करूगा कि सासारिक व्यवहार निभाने के लिए, मित्रो एव सबधिया का साथ देने के लिए रात्रि भोजन न करे । इनका साथ तो जीवनकाल तक का है, किन्तु आत्मा का साथ तो सदा का है । अत आत्मोन्नति को ध्यान मे रखते हुए रात्रि भोजन छोड ही देना चाहिए एव घर मे रहते हुए तो रात्रि भोजन करना ही नहीं चाहिए । अपना व्यावहारिक, व्यापारिक इत्यादि जीवन इस प्रकार करना चाहिए कि दिन मे ही भोजन कर सके । इसमे प्रमाद करना अत्यन्त घातक है । साथ ही धार्मिक कार्यो, पूजा-पाठ इत्यादि कार्यक्रमो मे पूर्ण विवेक रखना चाहिए ताकि पुण्य बाधने के बजाय किसी क्रिया मे अनावश्यक हिंसा करके पाप न बध जाय ।

इतना लिखकर विराम लेता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी अपना जीवन धर्म-मय बनावे और जीवन पद्धति ऐसी बनावे कि शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष प्राप्त कर सके । भरतक्षेत्र मे आज की जीवन प्रणाली ऐसी हो गई है कि हम यहाँ से मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते, किन्तु निराश होने की आवश्यकता नहीं है, हम यदि अपना जीवन उपरोक्त प्रकार धर्ममय बनावे तो, हम महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर वहाँ सीमधर स्वामी की निश्रा मे दीक्षा लेकर, पूर्णरूप से सयम पालकर मोक्ष प्राप्त कर सकते है । भरतक्षेत्र मे रहते हुए एव धर्ममय जीवन जीने पर भी जाने अनजाने एव विवेक की कमी के कारण पापबध हो जाय, उसके लिए प्रतिदिन, प्रतिपल क्षमायाचना मन, वचन, काया से करे ताकि शीघ्रातिशीघ्र अपना महाविदेह क्षेत्र मे जन्म हो और वहाँ से हम मोक्ष पद प्राप्त करे । हमारी प्रार्थना सीमधर स्वामी को प्रतिदिन यही होनी चाहिए कि "जल्दी थी तेडावजे तू, पूरजे मारी आश"-हेलो मारो साभलो श्री सीमधर स्वामी"

सभी के लिए शुभ मनोकामना ।

विषमता

-श्रीमती शान्ती देवी लोढ़ा, जयपुर

एक मानव निज महल में नींद सुख की सो रहा है।
दूसरा निज झोंपडी में हो क्षुधातुर रो रहा है।
वस्तु कोई भी नहीं दुर्लभ उसे धनवान है जो,
एक इंगित पर नचाता है सहस्रों भाग्य को वो।
रात-दिन करता परिश्रम, दीन फिर भी है तरसता,
सहस्रों व्यंजन सडा करते धनिक के द्वार पर हैं।
है सुराका पात्र निशि दिन चुमते उसके अधर हैं।
स्नेह से हो रिक्त दीपक बुझ गया है झोंपडी में।
मृत्यु आवेगी अचानक कौन जाने किस घडी में।
रत्नमंडित आभरण हैं झिलमिलाते धनिक तन पर
नीति और अनीति क्या है, है नहीं यह ज्ञान मन पर।
लाज ढकने के लिए भी वस्त्र दीनों को न मिलता
रुक्ष भोजन उदर भर यदि मिल गया तो हृदय खिलता
पुष्प शय्या धनिक को भरपूर निद्रा दे न पाती।
कोप निज कैसे भरूँ निशि दिन यही चिन्ता सताती।
पर्ण अरु तृण ही बिछाकर दीन सुख की नींद सोता
कल मुझे क्या मिलेगा इसमें नहीं यह समझ खोता
श्रमिक का शोणित पसीना धनिक का [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मानसिक अशांति का हल जैन दर्शन से संभव है

कु शानु जैन, जयपुर

किसी ने कहा है-

शक्ति है तो सेवा करना सीखो
भक्ति हे तो भजन करना सीखो ।
मानसिक शान्ति तो तुम्हे मिल जायेगी,
पर जेन दर्शन के अनुसार चलना तो सीखो ॥

जीवन म सुख-शाति की आकाक्षा हर प्राणी रखता है । दु ख से हर प्राणी घबराता है, दूर भागता है । इसी बात का प दौलतराम जी ने 'हृहढाला' मे बताया है कि-

जे त्रिभुवन मे जीव अनन्त सुख चाहे दु ख ते भयवन्त ।
ताते दुखहारी सुखकार, कहे सीख गुरु करुणाधार ॥

सुख भी दो प्रकार के है-1 भौतिक 2 आत्मिक । एक बच्चा रो रहा है, आपने खिलौना दिया तो आनन्द मे उछल पडा, नाचने लगा । परन्तु कितनी देर? खिलौना टूट गया ओर बच्चा और भी अधिक रो रहा है । कहने का तात्पर्य है कि भौतिक सुख क्षणभगुर है, ये हमे शाश्वत सुख प्रदान नहीं कर सकते । परन्तु आज के इस भौतिक चकाचौधमय वातावरण मे मनुष्य भौतिक सुखो की प्राप्ति के लिये बेतहाशा दौडा चला जा रहा है परन्तु फिर भी उसे शाति नहीं मिल पा रही है क्योकि भौतिक सुख कभी भी मानसिक शान्ति नहीं दे सकत ।

मानसिक अशाति का प्रमुख कारण यह है कि आज जनमानस की भावना जेन दर्शन से विमुख, ससारमुखी ज्यादा बन गई ह । आज का मानव क्राध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या ओर परिग्रह-तृष्णा रूपी मकड़ी के जालो म बुरी तरह फॅस गया हे और निरन्तर फॅसता चला जा रहा है । फिर इनसे मुक्त हुए बिना मानसिक शाति कैसे मिल सकती हे? आज के इस भौतिक वातावरण म मनुष्य जैन दर्शन व उसके सिद्धान्तो को भूल गया हे और निरन्तर इन्द्रिय-सुखा को प्राप्त करने की होड़ मे मानसिक शाति लुप्त होती जा रही है । जैसे किसी ने अच्छा मकान बनाया तो मनुष्य को ईर्ष्या हुई कि अरे! इसन ऐसा आलीशान मकान कैसे बना लिया? किसी ने अच्छा पैसा कमाना शुरु किया तो ईर्ष्या हुई कि यह इतना धनवान कैसे हो गया । परिणामत चिन्ता आधि-व्याधि बिना बुलाये ही जीवन म आ जाती हे और मन अशात हो जाता है । इन्द्रिय सुख और इच्छाए ये दोनो मिलकर मानसिक शाति को दूर भगा देती है । इसलिए जब तक इन

पर हमारा नियंत्रण नहीं होता तब तक हम चिन्ताग्रस्त रहते हैं। किसी ने कहा भी है-

''चाह गई चिन्ता गई, मनवा बेपरवाह।
जिनको कछु न चाहिए, ते शाहन के शाह॥''

वास्तव में मानसिक अशांति का हल जैन दर्शन से ही संभव है। जैन धर्म व जैन दर्शन दोनों का परस्पर सम्बन्ध है। जैन दर्शन यदि एक महान वृक्ष है तो जैन धर्म उसका मधुर फल। हमारे जैन दर्शन में बताये गये अनेकान्तवाद, साम्यवाद, कर्मवाद, निसंगवाद तथा तत्वों पर विचार के पश्चात् कहीं भी विषाद, आकुलता अथवा अशांति की स्थिति नहीं रहती। हमारा जैन धर्म तो सभी धर्मो में श्रेष्ठ माना जाता है। इसमें बताये गये अहिंसादि पंच महाव्रत, जीओ और जीने दो के सिद्धान्तों को यदि हम आचरण में ले आयें तो मानसिक अशांति रहने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

हमारा जैन दर्शन कहता हैं कि शांति बाह्य पदार्थों में नहीं अपितु हमारी आत्मा में हैं। सबसे प्रमुख बात यह है कि यदि हम अपनी इच्छाओं, तृष्णाओं पर नियंत्रण रखें और नियमित रूप से स्वाध्याय करें तो हम वास्तव में अपनी आत्मा के स्वरूप को पहचान पायेंगे कि हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? हमारा स्वरूप क्या है? जब यह ज्ञान हमें प्राप्त हो जायेगा तो हम अशांति के शिकार कभी नही बनेंगे।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि मानसिक अशांति के लिए मनुष्य स्वयं ही जिम्मेदार है। यदि मनुष्य जैन दर्शन व जैन धर्म को भुलाकर सांसारिक भोगों में लिप्त रहेगा तो उसे मानसिक शांति कभी नहीं मिल पाएगी और वह निरन्तर भवभ्रमण करता रहेगा और यदि मनुष्य अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखकर संयमी जीवन व्यतीत करे और जैन दर्शन के अनुसार अपरिग्रह वृत्ति को धारण करे, पंच महाव्रतों का पालन करे तो वह अपने जीवन को सुख व शांति से व्यतीत करता हुआ एक दिन परम सुख अर्थात् मोक्ष को भी प्राप्त करेगा।

जैन दर्शन के बताये मार्ग पर चलकर हमारे 24 तीर्थकरों ने अपना कल्याण किया है, वे सांसारिक अशांति से मुक्त होकर सिद्ध हो गये हैं। इसलिए जब जैन दर्शन के सिद्धान्तों का पालन होगा तो मानव ही नहीं अपितु समस्त विश्व में प्रेम, सहयोग का दिन-रात अमृत बरसा करेगा और जब सब प्राणी इस अमृत का पान करेंगे तो सबको असीम सुख व शांति की प्राप्ति होगी।

''जैन दर्शन से ही बन सकता है विश्व में वह देश
जहाँ न राग-द्वेष हो, न ही कोई क्लेश।
जैन दर्शन से ही बनेगा मानसिक अशांति का हल
पहुँचायेगा सभी को मोक्ष की मंजिल॥''

जीवन में विनय होना आवश्यक है

श्रीमती सन्तोष देवी छाजेड, जयपुर

"जग मे जीवन श्रेष्ठ वही, जो फूलो सा मुस्कराता है।
अपने गुण सौरभ से जग के, कण-कण को महकाता है॥"

विनय शब्द अपने आप म महत्त्वपूर्ण अग है। हमारे शास्त्रो मे विनय शब्द को बहुत प्रधानता दी गयी है। अगर हमारे जीवन मे विनय नहीं होगा तो हमारी धर्म के प्रति आस्था नहीं रहेगी। यहाँ तक कि अगर जीवन मे शिक्षा है लेकिन विनय नहीं है तो वह शिक्षा भी अधूरी मानी जायेगी। विनय के कारण ही मनुष्य मे बडो के प्रति आदर भाव पैदा होता है।

विनय से हम ज्ञान दर्शन, चारित्र प्राप्त कर सकते है। अर्थात मोक्ष प्राप्ति का विनय सर्वोत्तम साधन माना है। विनय के द्वारा ही हमे धर्म, दान, शील, तप, पूजा प्राप्त हो सकती है। इसलिए मनुष्य को अभिमान अहकार से दूर रहना चाहिए। अगर यह अवगुण विद्यमान हागे तो विनय नहीं ठहर सकता।

जैसा कि हमारे शास्त्रो मे कहा गया है कि ' विनय मूल धम्मो उयमासि'' विनय ही धर्म का मूल है। विनय से ही हमे सब कुछ प्राप्त होता हे। जेन धर्म का प्रारभ ही विनय गुण से होता हे। इसलिए तो चौद-पूर्वो का सार मूल नमस्कार महामत्र मे 'णमो' शब्द नम्रता का प्रतीक है। अगर नम्रता नहीं आती तो विवेक जाग्रत नहीं होता। अरिहताण से नमो शब्द की महानता विशेष है। क्योकि अरिहत बनने से पहले नम्र बनना पड़ता है यानी नम्रता अरिहत पद का बीज है। इसलिए नमो शब्द पहले रखा जाता है। भाग्यशालिया चिन्तन करो मनन करो।

मीठे बोलो, नम चलो, सबसे करो स्नेह।
कितने दिन का जीवन हे, कितने दिन की देह॥

अगर हम अपने शास्त्रो को उठाकर दखे तो हम पायेगे कि एकलव्य मे कितना विनय था। वह अपने गुरु के प्रति कितना निष्ठावान था। द्रोणाचार्य के द्वारा ठुकरा दिए जाने पर भी उसने द्रोणाचार्य को अपने मन से गुरु माना और तीरदाजी मे निपुण हो गया। उसमे विनय कूट-कूटकर भरा हुआ था। इसलिए विनय का सर्वोत्कृष्ट रूप हे मन वचन, काया तीनो से विनय करना। आगमा म विनय को मोक्षद्वार कहकर सबसे महत्त्वपूर्ण गुण बताया गया है।

जिस प्रकार फलवान वृक्ष पर पक्षी आकर बेठता है, फल खाकर सतुष्ट होता है, उसी प्रकार विपय भाव रहित मनुष्य के सामने अवगुण वाला व्यक्ति अवगुण त्यागकर सद्गुण अपना सकता ह।

क्रोध को प्रेम मे बहाओ कृष्ण बनोगे
क्रोध को ध्यान मे बहाओ, बुद्ध बनोगे
क्रोध को करुणा मे बहाओ, महावीर बनोगे
क्रोध को भक्ति मे बहाओ भगवान बनोगे।

कवि ने कहा है कि विनय शासन का मूल हे। विनय निर्वाण देने वाला हे जिसमे विनय नहीं हे उसका धर्म एव तप व्यर्थ है।

धर्म मे नो टाईम कहने वालो को पूछना है टी वी वीडियो देखने का टाइम कहाँ से मिलता है। 'नो टाइम' मत कहो 'नो इटरेस्ट' कहो॥

महावीर : अन्तर्दृष्टि की पतवार

श्री विनीत सांड, जयपुर

''महावीर की पूजा करना किसका काम नहीं है? काम तो यह है कि हरेक महावीर बनने की तरफ विकसित हो। महावीर की पूजा भी सार्थक है तो इसी अर्थ में कि हम क्रमशः उस पूजा के माध्यम से महावीर की तरफ, महावीर की भांति ऊंचा उठने में समर्थ हो जाएं।''

अगर हम खाली आकाश को भी थोडी देर तक बैठकर देखते रहें तो खाली आकाश भी हमको खाली कर देगा? अगर हम फूलों के पास बैठकर फूलों को थोड़ी देर देखते रहें तो थोडी देर में फूलों की गंध और फूलों की वास हमारे भीतर भर जाएगी। अगर हम सूरज को थोड़ी देर तक बैठकर देखते रहें तो हम पाएंगे कि सूरज का प्रकाश हमारे भीतर प्रविष्ट हो गया है। और हम सागर की लहरों के पास बैठकर उन्हें बहुत देर तक अनुभव करते रहें तो हम पाएंगे कि सागर हमारे भीतर लहरें लेने लगा है। ऐसे ही जब हम प्रभु की स्मृति में डूबते हैं तो हमारे भीतर कुछ परिवर्तन होने लगता है, कुछ बदलने लगता है, [illegible] नई बात [illegible] हमारे भीतर प्रारंभ हो जाता है। [illegible] मैं महावीर प्रभु पर [illegible] चर्चा करूंगा कि [illegible] और मेरे भीतर कोई परिवर्तन [illegible] भीतर कोई [illegible], हमारे भीतर [illegible]

उत्पन्न हो जाए।

यह हो सकता है। यह प्रत्येक मनुष्य के लिए संभव है। प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर उन्हीं संभावनाओं को लिए हुए है, जो महावीर में हम परिपूर्णता पर पहुंचा हुआ अनुभव करते हैं। जो महावीर के लिए विकसित हो गया है, वह हमारे भीतर बीज की भांति मौजूद है। इसलिए कोई अपने दुर्भाग्य को न कोसे और यह न समझें कि हम असमर्थ हैं उतनी ऊंचाइयों में उठने में न ही सोचें कि हमारा काम एक है कि हम महावीर की पूजा करें। केवल महावीर की पूजा करना ही पर्याप्त नही है। काम तो यह है कि हरेक महावीर बनने की तरफ विकसित हों। महावीर की पूजा भी सार्थक है तो इसी अर्थ में कि हम क्रमशः उस पूजा के माध्यम से महावीर की तरफ महावीर की भांति ऊंचा उठने में समर्थ हो जाए। इसे स्मरण रखें कि कोई मनुष्य केवल पूजा करने [illegible] नहीं हुआ है कि जो एक जीवन में विकसित हो सकता है वह प्रत्येक जीवन में विकसित हो जाएगा। जितने लोग जमीन पर हैं, [illegible] कभी महावीर हो जाएं। [illegible] हमारे भीतर [illegible] परमात्मा [illegible]

हमारे महावीर बनने मे अनन्त जन्मो का फासला हो जाए। यह काल अनत है, इसमे अनत जन्मो से भी कोई फर्क नहीं पडता है, तो महावीर का स्मरण मुझे इसलिए आनद से भर देता है कि वह जो हमारे भीतर महावीर की सभावना है उसका स्मरण हे महावीर का विचार करना। इसलिए सार्थक है, उपयोगी हे कि उसके माध्यम से हम उस सभावना के प्रति सजग होगे जो हमारे भीतर सोई हुई है और कभी भी जाग सकती है। अगर हमारे भीतर उनका विचार, उनके जैसा बनने का भाव पैदा न करता हो तो उनका विचारक अर्थ हो जाता मै यह कहना चाहूगा कि महावीर की पूजा भी करे मगर महावीर बनने की आकाक्षा के साथ? यह बीज अपने भीतर पैदा करे कि मै उन जैसा बन सकू। और इसमे जो भी सहयोगी हो, जो भी इसकी भूमिका बनाने मे समर्थ हो, उस भूमिका को, उस आचरण को अगीकार करे।

महावीर को विचारक न कहे, महावीर विचारक नहीं है, महावीर "साधक और सिद्ध है" साधक और विचारक मे यही अन्तर है। विचारक सोचता है कि सत्य क्या है? साधक जीता है। हमने अपने देश मे विचारको की बहुत कीमत नहीं मानी। बहुत बडे-बडे विचारक हुए, जिन्होने बडी दूर की बाते कही है-सृष्टि को बनने की, स्वर्ग की, नरक की। बडी विचार की बाते कही है। महावीर इन विचारका मे से नहीं है। जो व्यक्ति जीवन मे सत्य को उतारता हे और आचरण करता है वह सत्य के सबध मे विचार ही नहीं करता वह आनद के सबध मे साधना करता है। महावीर सत्य के ही खोजी नहीं है, महावीर आनद के खोजी है। इस जमीन पर विचार की दृष्टि से हम भिन्न-भिन्न हो सकते हे, आपका और मेरा विचार अलग हो सकता है। लेकिन आनद की तलाश मे हम भिन्न-भिन्न नहीं हो सकते हैं। सबकी तलाश आनद की है इसलिए महावीर का धर्म सार्वजनिक, सार्वलौकिक धर्म है। इस जगत मे जो भी आनद को खोजना चाहेगा, उसे महावीर के सिवाय कोई रास्ता नहीं हे। महावीर आनद की खोज करने वाले साधक है इसलिए उनकी सारी चर्या, उनका विचार, उनका सार जीवन मोक्ष पर केन्द्रित है। आनद और मोक्ष एक ही चीज के दो नाम है।

मनुष्य जैसा हे, अपने ही कारण है मनुष्य जैसा है वह अपने निर्माण से वैसा है। महावीर की दृष्टि मे मनुष्य का उत्तरदायित्व चरम है। दुख है तो तुम कारण हो। सुख है तो तुम कारण हो, बन्धे हो तो आपने बधना चाहा है। मुक्त होना चाहो तो मुक्त हो जाओगे। कोई मनुष्य को बाधता नहीं, कोई मनुष्य को मुक्त नहीं करता। मनुष्य की अपनी वृत्तियॉ ही बाधती है, अपने राग-द्वेष ही बाधते हे, अपने विचार ही बाधते है। एक अर्थ मे गहन दायित्व है मनुष्य का क्योकि जिम्मेदारी किसी और पर फेकी नहीं जा सकती। महावीर के विचार मे परमात्मा की कोई जगह नहीं है इसलिए तुम किसी ओर पर दोष नहीं फेक सकोगे। महावीर ने दोष फेकने के सारे उपाय छीन लिए है सारा दोष तुम्हारा हे। चूकि सारा दोष तुम्हारा हे इसलिए तुम्हारी मालकियत की उद्घोषणा हो रही है। तुम चाहो तो इसी क्षण जजीर गिर सकती है तुम उन्हे पकडे हो, जजीरो

ने तुम्हें नहीं पकडा है किसी और ने तुम्हें कारागृह में नहीं डाला है तुम अपनी मर्जी से प्रविष्ट हुए हो। तुमने कारागृह को घर समझा है। तुमने कांटों को फूल समझा है महावीर कहते हैं—एक ही नियम है होशपूर्वक। एक ही पुण्य है, एक ही धर्म है फिर भी सारी छूट है होश में रहकर जो करना है करो, धर्म को इतना सारभूत कम ही लोगों ने समझा ओर कहा है महावीर के सारे उपदेश, उनकी सारी धर्म देशना इस एक ही शब्द के आसपास घूमती है होशपूर्वक।

नीति की दूसरी कोई आधारशिला नहीं है, यह बुरा है, यह करना अच्छा है, इस पर महावीर का कोई जोर नहीं है लेकिन तब बडी हैरानी होती है-महावीर का जिन्होंने 25 सों सालों का अनुगमन किया है उनको 'होश' की कोई फिक्र नहीं है उनको कर्मो की फिक्र नहीं है।

मुक्तक

श्रीमती रंजन सी. मेहता, जयपुर

जब तक आदमी-आदमी के बीच में है दूरी,
तब तक मानव की विकास यात्रा है अधूरी।
मानवीय एकता के मूल शिलान्यास के लिए,
भेद-भावों को खत्म करना है सबसे जरूरी॥

मजबूत से मजबूत दीवार भी एक दिन टूट जाती है,
चौंकस पकडी हुई पतवार भी हाथों से छूट जाती है।
कोई भी अस्तित्व ठहरता नहीं है अनंत समय के लिए,
सत्ता की मय भरी मटकी आखिर एक दिन फूट जाती है॥

खण्डहर टूटेगा तभी नया निर्माण होगा,
बन्धन छूटेगा तभी जीवन कल्याण होगा।
हो गया है वास इंसान में शैतान का आज,
यह फफोला फूटेगा तभी सुख-संधान होगा॥

उपदेशों में तो छलक-छलक पडती है आस्था,
पर आचरणों ने पकडा है बिल्कुल उलटा रास्ता।
इन आडम्बरी व्यवहारों से लगता है हमें,
जरा भी नहीं है इनका धर्म-कर्म से वास्ता॥

हर जिंदगी में उतार-चढ़ाव आता है,
हर रास्ते में कुछ न कुछ घुमाव आता है।
[illegible] करो बोझिल मन को [illegible],
[illegible] तो नहीं [illegible] आता है॥

आदमी का आचार-विचार [illegible] रहा है,
[illegible] का [illegible]-प्रकार [illegible] रहा है।
[illegible] नहीं है [illegible] पग-पग पर [illegible],
[illegible] का आज [illegible] रहा है॥

श्री महावीरजी तीर्थ

श्री आर के चतर

अध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर (मूर्ति पूजक) श्री महावीरजी तीर्थ रक्षा समिति, जयपुर

राजस्थान राज्य के करौली जिले मे मुबई-दिल्ली रेलवे लाइन पर स्थित श्री महावीर जी रेलवे स्टेशन से चार किलोमीटर दूरी पर स्थित श्री महावीर जी प्रसिद्ध जैन तीर्थ के श्री महावीर जी मदिर मे मूलनायक अति चमतरी मल्यागिरी रग की पदमासन भगवान महावीर की भूगर्भ से निकली प्रतिमा विराजमान है । मूलनायक श्वेताम्बर है, जिनके कन्दोरा लगोट के स्पष्ट चिह्न है व नेत्र खुले हुए है । प्रसन्न मुद्रा मे सामने देखती हुई दृष्टि है । यह भी सर्वविदित एव ऐतिहासिक तथ्य है कि मदिर एव कटले का निर्माण श्वेताम्बर आमनाय श्री जोधराज जी पल्लीवाल जो कि भरतपुर राज्य के दीवान थे, ने कराया था तथा श्वेताम्बर आमनाय विजयगच्छ के महानन्द सागरा सूरिजी द्वारा सवत् 1826 मे मदिर मे प्रतिष्ठा कराई थी । प्रारम्भ से ही मदिर का प्रबन्ध एव अधिकार उसी क्षेत्र के श्वेताम्बर धर्मावलम्बियो की पचायत के अधिकार मे था ।

भगवान श्री महावीर जी की मूर्ति श्वेताम्बर, मदिर बनाने वाला श्वेताम्बर, प्रतिष्ठाकार श्वेताम्बर लेकिन अपने ही भाई दिगम्बरो ने जयपुर राज्य मे ऊँचे-ऊँचे पदो पर आसीन होने का फायदा उठाकर इस क्षेत्र पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया । उसी समय से श्वेताम्बर जैन पल्लीवाल की पचायत एव खास तौर से स्वर्गीय श्री नारायणलाल जी पल्लीवाल अनाधिकृत कब्जे को हटाने मे एकजुट होकर लग गये तथा श्री जैन श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक) श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति का सन् 1973 मे विधिवत गठन कर रजिस्ट्रेशन हुआ तभी से यह समिति भी इस कार्य मे जुट गई । इस समिति की लगन व असाध्य मेहनत का ही फल रहा कि इस केस मे अभी तक जैन एव जैनेतर 18 व्यक्तियो के बयान दिगम्बर कमेटी द्वारा पग-पग पर बाधाए खडी करने के बावजूद श्वेताम्बर समाज की ओर से पूर्ण हो चुके है ।

दिगम्बर कमेटी के द्वारा अतिरिक्त जिला एव सत्र न्यायाधीश क्रम सख्या 2 जयपुर शहर के न्यायालय मे एक दरखास्त (एप्लीकेशन) दी प्लेस ऑफ वरशिप (स्पेशल प्राविजन) एक्ट 1991 के अन्तर्गत 15 अगस्त 1947 की पोजिशन रखवाने के लिये लगाई गई । इस एप्लीकेशन का निर्णय न्यायालय के द्वारा दिनाक 27 10 94 को दिया जिसमे दिगम्बर समाज का 15 अगस्त 1947 को कब्जा एव सेवा पूजा करने के आधार पर पूजा स्थल के धार्मिक स्वरूप मे तब्दीली मानते हुए केस को खारिज कर दिया तथा मूर्ति पर कन्दोरा एव लगोट के स्पष्ट चिह्न होते हुए भी न्यायाधीश ने मूर्ति को दिगम्बर मूर्ति प्रतीत होना माना है जबकि उक्त प्रकरण असिस्टेन्ट कमीश्नर देवस्थान से बाकायदा परमिशन लेकर राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट एक्ट की

धारा 38 एवं 40 के अन्तर्गत चल रहा था जो कि किसी भी तरह से कन्वरसन का केस नहीं था जिसमें कभी भी न तो श्वेताम्बर समाज ने केस में और न ही दिगम्बर समाज ने जवाब दावे में कन्वरसन की मांग की थी । इस नए एक्ट के अन्तर्गत सिर्फ वे ही केस खारिज किए जा सकते हैं जो कन्वरसन के आधार पर चल रहे हो जिनमें पूजा स्थल के धार्मिक स्वरूप को बदलने का मुद्दा हो ।

श्री जैन श्वेताम्वर (मूर्तिपूजक) श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति के द्वारा राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर के न्यायालय में दि. 2.2.95 को अपील पेश की गई है । समिति की ओर से केस में तत्कालीन एडवोकेट जनरल राजस्थान श्री वी.पी. अग्रवाल, श्री ओ.पी. गर्ग, एडवोकेट श्री गुमानचन्द लूणिया वकील नियुक्त हैं, श्री यू.एन. बाछावत सीनियर एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट दिल्ली का भी केस में पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है । केस में समिति के अनुरोध पर श्री महावीर जी मंदिर एवं विराजित प्रतिमाओं की वीडियोग्राफी दिनांक 3.7.97 को हो चुकी है केस में बहस एवं 2 जुलाई 1999 में हुई थी जो अपूर्ण रही । अब जल्दी फैसले के लिये कोशिश जारी है । इस केस में श्री जैन श्वेताम्वर तीर्थ रक्षा ट्रस्ट मुंवई का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त है । यह तीर्थ बहुत ही चमत्कारी है अतः सभी साधर्मी बन्धुओं से अनुरोध है कि दर्शनार्थ अवश्य पधारें । ठहरने की उचित व्यवस्था है ।

बरखेड़ा वाले आदिनाथ

सुश्री अनिशा सिंघवी, सांगानेर

बरखेडा वाले आदिनाथ
देते हैं सब दुखीयों का साथ
पूरी करते हैं सबकी आश
बरखेडा वाले आदिनाथ ।

मूरति है प्रभु की मनभावन
जो ध्यान धरे उसे कर दे पावन
मुख पर सदा मृदु मुस्कान
बरखेडा वाले आदिनाथ ।

नयनों में अद्भुत ज्योति जलती
भक्तों की हर इच्छा फलती
देते हैं सबको आशीर्वाद
बरखेड़ा वाले आदिनाथ ।

वह मंदिर का उतुंग शिखर
मंदिर समीप निर्मल सरोवर
उत्कट करते दर्शन की प्यास
बरखेडा वाले आदिनाथ ।

शीतल मंद सुगन्धित पवन
करती भक्तों का अभिनन्दन
बनता दादा का हर भक्त दास
बरखेडा वाले आदिनाथ ।

माँ सुमंगला श्री जी म.सा. ने किया जीर्णोद्धार
[illegible]
'अनिशा' [illegible]
बरखेड़ा वाले आदिनाथ ।

तपागच्छीय गुरु आरती : आवश्यकता एवं उपादेयता

श्री आशीष कुमार जैन, जयपुर

ओम् जय जय गुरुदेवा, दादा जय जय गुरुदेवा।
पुण्य नु पोपण होव, पाप नु शोपण होवे,
करिए गुरु सेवा ॥1॥

वीर जिनेश्वर गणधर, गुरु गौतम स्वामी।
सुरनर सूरिवर ध्याव, दु खहर सुखधामी ॥2॥

सूर्य किरण आलवन लेकर, अष्टापद फरस।
जग चिन्तामणि रचना, अगूठे अमृत वरसे ॥3॥

जगत्गुरु विजय हीर सूरीश्वर जिनशासन राजा।
सद्गच्छ कीरती गाव, तपगच्छ सरताजा ॥4॥

जिन धर्म मर्म समझाकर सद्गुरु, अकवर प्रतिवोधे।
तीरथ पट्टा पाकर जीवहिसा अवराधे ॥5॥

न्याय अभोनिधी विजयानद सूरी नवयुग निर्माता।
ग्रथ पूजाए स्तवन अनेका, निरखी मन हरवाता ॥6॥

जिनपूजा आगम अनुसारी, सवको समझाई।
सवेग धर्म की विजय वैजन्ती जग म लहराई ॥7॥

नित-नित नियमित आरती, सद्गुरु की कीजे।
विन मागे सव पावे, धन सुत यश लीजे ॥8॥

आशीष वरदाई गुरुवर भक्ति, करो उर उल्लासे।
धर्मलाभ धनलाभ वढे, दु ख दोहग नासे ॥9॥

जिनेश्वर भगवन्ता की विद्यमानता या अविद्यमानता मे तीर्थंकर भगवन्तो द्वारा स्थापित तीर्थ का सचालन रक्षण एव सवर्धनादि कार्य करने वाले यदि कोई ह तो वे गुरु भगवन्त है। शास्त्रीय दृष्टि से सुगुरु के स्वरूप को हृदयगम कर गुरुपद को किया नमन, वन्दन, पूजन-आरती आदि तमाम क्रियाए लौकिक एव लोकोत्तर सुखदायक हे। देव, गुरु, धर्म का स्वरूप, कर्ममल रहित होने का मार्ग गुरु ही वतलाते ह। कवि ने कहा है-

एक ओर भगवान है, एक ओर हे धर्म।
वीच मे वेठा सद्गुरु, दे दोया रो मर्म ॥

मोक्षमार्ग के साधक का गुरु की शरण मे आना नितात अनिवार्य है। ग्रामसेवक नयसार का तीर्थंकर महावीर वनाने वाले गुरु भगवन्त ही थे। मोक्षमूल गुरो कृपा-मुक्ति का मूल गुरु की कृपा ही है। श्रावक अरिहन्तो की उपासना करता है फिर भी आगमो मे श्रावक हेतु अरिहन्तोपासक नहीं अपितु श्रमणोपासक शब्द का प्रयोग हुआ है। 'श्रमण' गुरु के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। जयवीराय सूत्र मे वीतराग दव से सद्गुरु की प्राप्ति एव अखड रूप से उनकी वचन सवा की याचना की जाती हे। पाठ निम्न ह-'सुहगुरु जोगो तव्वयण से वणा आभवमखडा'।

आचार्य, उपाध्याय एव साधु इन तीन पदो मे आचार्य भगवन्त सघ क नायक प्रतिपालक ह। शास्त्रकारा ने भाव आचार्य को तीर्थंकर देव का प्रतिरूप वताया है-'तित्थयर समो सूरि, जो

जिणमयं पयासेई' । गुरु, गुरुपद, गुरुगुण की सम्यक् उपासना हेतु प्रभावक पूर्वाचार्यों की प्रतिमा-पादुका की स्थापना की जाती रही है । शास्त्रकारों ने जिनेश्वर देव की तरह ही गुरु की भी अंग व अग्रपूजा का विधान, दिशा निर्देशन किया है । शास्त्रपाठ-एवं प्रश्नोत्तर समुच्चय-आचार प्रदीप आचार दिनकर-श्राद्धविध्यानुसारेण श्री जिनस्येव गुरोरपि अंगाऽग्र पूजा सिद्धा । 'द्रव्यसप्ततिका' ग्रंथ में ग्रंथकार ने उपरोक्त चार संघमान्य शास्त्रों का हवाला देकर कहा है कि जिनदेव की तरह ही गुरु की भी अंग व अग्र पूजा सिद्ध है ।

गुरुमूर्ति प्रभुमूर्ति की तरह ही 18 दोष रहित होती है अतः जिन प्रतिमा की तरह ही गुरु प्रतिमा की भी नवांगी, अष्टप्रकारी, अंगरचना आरती आदि पुरुष एवं स्त्री समान रूप से कर सकते हैं । तपागच्छाचार्यो-मुनियों ने अपने प्रभावक पूर्वजों की यशोगाथा के प्रचार-प्रसार में सदैव तत्परता रखी है । प्राचीन अर्वाचीन तीर्थ मंदिरों पर उनकी प्रतिमा पादुका प्रतिष्ठित कर उनकी भक्ति निमित्त अनेकों पद, स्तवन, छंद, रास, पूजाओं की रचना की है । अकबर प्रतिबोधक हीरसूरीजी की परम्परा में श्री ऋद्धि विजय विरचित जगद्गुरु अष्टप्रकारी पूजा के अन्तर्गत दीपक पूजा का श्लोक :

विमलबोध सुदीपक धारकं, परमज्ञान प्रकाशक नायकं ।
गुरु गृहे शुभदीपक दीपनं, भवजले निधिपाते नमो गुरुः ॥

वीतरागदेव की भाँति गुरु पूजन तारक, [illegible] एवं शास्त्रों द्वारा सम्मत होने पर भी [illegible] में तपागच्छ में गुरुप्रतिमा [illegible]

अपेक्षित भक्तिभाव की न्यूनता है । गुरुपद के गौरव से प्रायः अनभिज्ञ कई सज्जन गुरुपूजन अर्चन को आवश्यक नहीं मानकर विशेष आदर नहीं देते, परन्तु यह धारणा उचित नहीं है । वीतरागदेव की तरह गुरु प्रतिमा पूजन भी तारक है ।

इतिहास साक्षी है कि देवाधिदेव नेमिनाथ प्रभु के समक्ष श्री कृष्ण ने 18,000 मुनियों को अलग-अलग गुरुभक्ति के विशुद्ध भाव से वन्दन किया, जिससे उनकी 4 नरकों का निवारण हुआ । यदि उन्हें भी कुछ भ्रांति होती तो क्या इस प्रसंग का बनना संभव था? तीर्थंकर के समक्ष गुरु वंदन भक्ति इस प्रसंग से सिद्ध है ।

गुरु महिमा से अनभिज्ञ-विमुख लोगों के अन्तर में गुरुभक्ति के विमलबोध के लिए गुरु आरती सर्वाधिक प्रभावी उपाय है । अधिकांश जन जल चन्दन अक्षत नैवेद्य फलादि से अंग व अग्र पूजा नहीं करते, चैत्यवंदन, गुरु वन्दन विधि नहीं जानते । अतः आरती ही एक सरल उपाय है जो सहजरूप से बाल, युवा, वृद्ध, ज्ञानमार्गी, भक्तिमार्गी, क्रियारुचि सभी को गुरुभक्ति में जोड़ने में समर्थ हैं । प्रभु आरती बहु प्रचलित है, उसी प्रकार आरती गीत द्वारा प्रातः सायं गुरु आरती करना करवाना परम आवश्यक व श्रेयस्कर है । प्रस्तुत गुरु आरती में गुरु गौतम स्वामी व सकल संघ मान्य तपागच्छीय गुरुजन [illegible] गुरु पद की महिमा-[illegible] है । गुरु आरती [illegible] में [illegible] है । [illegible] प्रभु की आरती [illegible] प्रतिमाओं के समक्ष

क्रम से घुमाई जाती है। जो लाभ मात्र एक व्यक्ति को मिलता था, आरती गीत के माध्यम से सभी भक्तवर्ग को प्राप्त होता है। आरती ज्ञान का प्रतीक है। वह कर्ता का अन्तर सद्ज्ञान से प्रकाशित करती ही है, प्रतिमाओ का तेज भी बढता हे, ऐसा अनुभव वृद्ध पुरुषो का कथन है।

क्षेत्रकाल की परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन-परिवर्द्धन कई व्यक्ति तुरन्त ग्रहण नहीं कर पाते। गुरु आरती पर भी कई व्यक्ति सशय करते है कि यह उचित है या अनुचित? किसी विषय पर चर्चा श्री सघ के लिए हितकर होती है यदि उसमे हठागह, सकुचित मानसिकता न आन पाये। शासनप्राण, गुणगरिष्ठ गुरु भगवन्तो की भक्तिस्वरूप प्रत्येक क्रिया अनेकान्त रूप से आत्मविकासकारी मोक्षपद प्रापक है।

मान्त्रिक विधानपूर्वक प्रतिष्ठित प्रत्येक प्रभु-गुरु पतिमा की अष्ट प्रकारी एव आरती करना श्रावक का परम कर्त्तव्य है। जब गुरु की दीपक पूजा हो सकती हे फिर आरती मे क्या हानि? आजकल देव-देवियो की आरती जोर शोर से होने लगी है। पद्मावती महापूजन मे माता को 108 दीपक दिखाए जाते है तो उनसे उच्च गुण स्थान पर विराजित जिनशासन गच्छाधार पच परमेष्ठि पद पर विराजित, पचागी के ज्ञात उपदेष्टा, पचाचार, पचमहाव्रतधारी गुरु भगवन्तो की आरती तो ओर अधिक उल्लास से करनी चाहिए। गुरु आरती पापबध नहीं पुण्यबध का कारण है।

सघ मे आचार्या की सत्ता सर्वोपरि ह। गीतार्थो का निर्णय ही प्रमाण माना जाता है। इस गुरु आरती पर ज्ञानवृद्ध, पर्यायवृद्ध, वयोवृद्ध तपागच्छ आचार्यो ने सम्मति दी है।

गच्छनायको-आचार्यो के पत्राश

परमात्मा की आशातना न हो, इस तरह पूरी सावधानी पूर्वक, निष्काम भाव से गुरुदेवो की प्रतिमा की पूजा आरती भक्ति करने म कोई बाधा नहीं है। गुरुदेव की भक्ति बढे यह इरादा आशय तुमारा शुभ है। क्षेत्र के अनुसार भी कुछ प्रवृत्ति करे शुभ इराद से तो उसका सही दृष्टिकोण समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

-गच्छाधिपति अध्यात्मयोगी आ कलापूर्ण सूरी जी (बागड समु)

गुरुनी आरती करवामा कोई बाध जणातो नथी, तेमज मणेला श्रावक बनावेली रचना पण चाली शके छे। तमे रचेली गुरु आरती नुगीत जोयु ते खुशी थी गुरु आरती तरीके गाई शकाशे। तपागच्छीय गुरु भगवन्तो नी महिमा वधारवो ते पण शासननीज सेवा छे माटे आमा अन्तराय करवो ते उचित जणातो नथी।

-गच्छाधिपति पू. जयघोष सूरीश्वर जी (प्रेम-भुवनभानु सूरी समु)

मात्र स्थानिक कक्षाए पूर्व महापुरुषो नी भक्तिस्वरूप प्रवृत्ति अनुचित न गणाय तेम हुँ मानु छु।

-गच्छाधिपति पू रामसूरीश्वर जी (डेहलावाला समु)

तमारो पत्र आरती मल्या खूबज सरस छे। जगत्गुरु नी अष्ट प्रकारी पूजा अमेना शिष्य बनावी छे, अेटले आरती नो प्रश्न न थी रहेतो।

-स्व. गच्छाधिपति पू. जिनभद्र सूरीश्वर जी (लब्धिसूरी समु.)

गुरुमूर्तिनी अष्टप्रकारी पूजा आरती आदि थई सके।

-आगम विशारद आ. नरेन्द्रसागर सूरी म. (सागरानंद सूरी समु.)

श्रावक की बनी आरती में कोई बाधा नहीं। वीतराग प्रभु की भक्ति को प्राथमिकता देते हुए गुरुओं की आरती निशंकपने करो। मेरी भावना कि यह आरती जहॉ-जहाँ भी गुरु प्रतिमा हो वहॉ होनी चाहिए।

-गच्छाधिपति पू. इन्द्रदिन्न सूरी म. (पू. वल्लभ सूरी समुदाय)

आपके वहां यदि गुरुमूर्ति की आरती करने का व्यवहार चालू है तो वह अनुचित नही है। देव-देवी की तो आरती बहुत सी जगह की जाती है।

-गच्छाधिपति पू. देवसूरी म. (शासनसम्राट नेमीसूरी समुदाय)

जैसे गुरु की पूजा होती है, वेसे आरती भी उतार सकते हैं।

-गच्छा. पू. राजेन्द सूरी म. (शांतिचंद्र सूरी समु.)

श्रावक की रचना प्रभु भक्ति में आदरणीय और सम्मान्य है। आपकी प्रभु भक्ति और गुरु भक्ति सराहनीय है और प्रशंसनीय है। आपको धन्यवाद है कि गुरु गौतम स्वामी, आ. श्री हीरविजयसूरी और विजयानंद सूरी की गुरु आरती की रचना की है।

-गच्छाधिपति पूज्य सुबोध सागर सूरी जी म. (बुद्धिसागर सूरी समु.)

'निर्विचारं गुरोवचः' गुरु की आज्ञा विना तर्क वितर्क निर्विरोध ही स्वीकारनी चाहिए। गच्छनायकों की आज्ञा को शिरोधार्य कर निष्काम भाव से प्रभु गुरुभक्ति में उद्यमवन्त बनना चाहिए। गुरुपूजन गुरु आरती के साथ विद्यमान गुरुदेवों व श्री संघ की भक्ति में सदेव तत्पर रहना चाहिए। महामंत्री वस्तुपाल के शब्दों में

दासोऽहं सर्वसाधुनां साध्वीनां च विशेपतः।
सर्वसंघरस्य सेवायां मते निष्काम भक्तितः॥

"मैं सब साधुओं का दास हूँ विशेपतः साध्वियों की तथा सकल संघ की सेवा का निष्काम भक्तिपूर्वक प्रयत्न करता हूँ।"

अंत में सभी सरल भव्यात्माएं गुरुचरणाश्रयी बनकर जिन भक्ति मुक्तिमार्ग में अग्रसर हों यही अभिलाषा।

जिनाज्ञा गुर्वाज्ञा विरुद्ध [illegible] [illegible] मिच्छामि दुक्कडं।

प्राचीन-जिन मंदिर व मूर्तियों की विद्यमानता

श्री बाबू माणकचन्द कोचर, जयपुर

मूर्ति-पूजा-अनादिकाल से चली आ रही है। आज भी लाखो वर्ष पूर्व से मूर्ति-पूजा चली आ रही है एव मूर्ति-पूजा के पाठ-व-मूल सूत्र है और इतने वर्ष पूर्व की मदिर तथा मूर्तियॉ मौजूद है। इनकी प्राचीनता को पुरातत्व वेत्ताओ ने भी माना है—

प्राचीन-मदिरो ओर मूर्तियो के कितने ही शास्त्रीय-प्रमाण व वर्तमान मे जो तीर्थ विद्यमान ह, उनम से कुछ इस प्रकार हे-

(1) भरत चक्रवर्ती ने भी अष्टापद पर्वत पर चोबीस तीर्थकरो की प्रतिमाए, उनके वर्ण, लछन तथा शरीर के आकार के अनुसार-स्थापित करवाई थी। (आवश्यक-सूत्र मे इसका सम्पूर्ण वर्णन हे।)

(2) राधनपुर के पास मे शखेश्वर गॉव मे शखेश्वर पार्श्वनाथ की मूर्ति गत चाबीसी के श्री दामोदर नाग के नाम के तीर्थकर के समय आषाढी श्रावक द्वारा बनवाई हुई। प्रकट प्रभावी व चमत्कारी वह प्रतिमा आज भी मोजूद हे।

(3) भगवान महावीर के निर्वाण से 250 वर्ष वाद आचार्य आर्य सुहस्ती सूरीश्वर जी द्वारा प्रतिष्ठित श्री अवन्ती सुकुमाल की स्मृति मे उनके पुत्र द्वारा भराई गई जो अवन्ती पार्श्वनाथ के नाम से आज भी उज्जेन मे क्षिप्रा नदी के निकट (भूतकाल के महाकाल वन मे) स्थित ह। यह प्रतिमा काल क्रम से भूमिगत हो गई थी। विक्रम सवत प्रवर्तक राजा-विक्रमादित्य के समय पभावक आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर जी ने कल्याण मदिर स्त्रोत की रचना द्वारा पुन प्रकट की।

(4) भरुच शहर (गुजरात) मे श्री मुनि सुव्रत स्वामी के समय की उनकी मूर्ति है जिस लाखा वर्ष हो गये।

(5) आन्ध्रप्रदेश के पास कुल्पाक गॉव म भरत महाराजा के समय मे भरवाई हुई थी ऋपभदेव स्वामी की प्रतिमा जो समय के प्रभाव से मदिर सहित दव गई थी कुछ ही समय पूर्व प्रकट हुई हे। प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की आवश्यकता नहीं। यह प्रतिमा भी देवाधिष्ठित है। लोग इसे माणिक्य स्वामी की प्रतिमा कहते है।

(6) श्रीपाल और मयणा सुन्दरी ने जिसके सरिया नाथ जी (आदीश्वरनाथ) की प्रतिमा के सम्मुख आराधना की थी वही प्रतिमा आज उदयपुर के पास सरिया नाथ तीर्थ (धुलेवा राजस्थान) म है। यह प्रतिमा भी लाखो वर्ष पुरानी हे।

(7) राजा-रावण के समय निर्मित प्रतिमा श्री अतरिक्ष पार्श्वनाथ के नाम से पहचानी जाती हे। जो आकोला (महाराष्ट्र) मे है।

(8) मारवाड के नादिया गॉव मे श्री महावीर स्वामी की हयाति (माजु दगी) मे बनी मूर्ति स्थापित हुई है जिसके जीवत स्वामी की प्रतिमा के नाम से जाना जाता है।

(9) जोधपुर के पास ओसिया नगरी मे

श्री वीर निर्वाण के 70 वर्ष बाद स्थापित की हुई श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा श्री (रत्नप्रभसूरी) द्वारा प्रतिष्ठित की हुई है जिसे 2040 दो हजार चालीस वर्ष हो गये।

(10) कच्छ प्रदेश में भद्रेश्वर तीर्थ में भव्य और प्राचीन जिनालय है। इस तीर्थ के जीर्णोद्धार के समय प्राप्त ताम्रपत्र से ज्ञात हुआ है कि यह मंदिर वीर संवत 23 मे बना था। इस प्रकार यह तीर्थ लगभग 2500 वर्ष प्राचीन है।

(11) संप्रति राजा द्वारा भरवाई वीर संवत 290 के बाद की अनेक प्रतिमाएं लगभग सभी स्थानों पर मिलती है।

(12) इसी चोवीसी के श्री नेमिनाथ भगवान के शासन के 2238 वर्ष पश्चात् (गौड देशवासी) (आषाढ) नाम के श्रावक ने तीन प्रतिमाएं भरवाई थी। उनमें से एक खंभात में श्री स्तम्भन पार्श्वनाथ की, दूसरी पाटण शहर के पास चारूप गॉव में आज भी विद्यमान है। इनकी प्राचीनता 5,86,760 वर्ष की है।

इनके अलावा जगत प्रसिद्ध तीर्थो में शिरोमणि सम्मेत शिखर जी, श्री गिरनार जी, श्री सिद्धाचल जी आवू व तारंगा तीर्थ में गगनचुम्बी मंदिर बने हुए हैं। जहां आज भी हजारों वर्ष पुरानी मनमोहक, भव्य एवं कलात्मक प्रतिमाएं विराजित हैं।

भुनेश्वर का भारकरेश्वर जैन मंदिर, वद्रीनाथ तीर्थ पर वद्रीपार्श्वनाथ के नाम से जाना जाता था। यह जैन मंदिर थे कभी। कहने का तात्पर्य यह है कि अनादि काल से मूर्ति पूजा चली आ रही है।

ढाणंग सूत्र में श्रावक को-जिनप्रतिमा, जिन मंदिर, शास्त्र, साधु-साध्वी, श्रावक, श्राविका इन सातों क्षेत्रों में धन खर्च करने का विधान बतलाया है इसके अतिरिक्त अन्य सूत्रों में भी सात क्षेत्र श्रावक के लिए श्रेष्ठ बताये हैं।

बीते हुए दिनों का अफसोस मत करो, आने वाले कल का ज्यादा सोच मत करो। जो कुछ है वह आज है अभी है-इसी वक्त है। आप कैसे उपयोग करते हैं, यही महत्वपूर्ण है।

क्षमा सर्वोत्कृष्ट तप है। वर्षों तक तपस्या करने के बाद भी क्षमा गुण का लेश अभ्यास नहीं हुआ तो तपस्या मात्र बाल क्रीड़ा है।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी), जयपुर

श्री जेन श्वे तपागच्छ सघ, जयपुर के तत्वावधान मे गुरुवार दि 9 मार्च, 2000 को साय 4 बजे श्री आत्मानन्द जेन सभा भवन, जयपुर मे आयोजित श्रद्धाजलि सभा मे पारित प्रस्ताव

श्रीमान् हीराचन्दजी सा वैद भूतपूर्व उपाध्यक्ष एव सघ मत्री, श्री जैन श्वताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर के दहावसान पर यह सभा हार्दिक शोक एव सवदना व्यक्त करती है।

श्रीमान् वैद सा चहुमुखी प्रतिभा क धनी एव इस श्रीसघ की अमूल्य निधि थे। तपागच्छ सघ के विधिवत गठन के साथ ही सम्वत् 2013 सन् 1956 से स 2028 सन् 1971 एव तत्पश्चात् सन् 1976 मे आप तपागच्छ सघ के सघ मत्री रहे। आपके ही कायकाल म इस श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन का निर्माण हुआ था। इस जिनालय के ऊपरी कक्ष-भगवान महावीर स्वामी देरासर-म प्राचीन प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। आपके ही दीर्घ कार्यकाल मे श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय म अनेका जिन विम्वा की प्रतिष्ठाआ के साथ-साथ चित्र दीर्घा एव भित्ति चित्रो का निर्माण हुआ था। इस सघ की वार्पिक स्मारिका "माणिभद्र" के प्रकाशन का श्रेय भी आपको ही था। जैन धर्म एव सस्कृति के आप मर्मज्ञ विद्वान थे। अपने लेखा द्वारा वे नई पीढी का मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। माणिभद्र" के साथ-साथ अनेका समाचार पत्रा मे आपक लेख प्रकाशित होते रहे। आपने अपने जीवनकाल म अनक सघ निकाल कर यात्राआ क सफलतम आयोजन सम्पन्न कराये थे जिनकी स्मृतियाँ आज भी यात्रियो की स्मृति मे विद्यमान है।

आपकी चहुमुखी प्रतिभा, नतृत्व की क्षमता एव कार्य कुशलता मात्र जयपुर तक ही सीमित नहीं रह सकी। जैन शासन की लब्ध प्रतिष्ठित अग्रणी सस्थाओ सघो एव पेढियो के कार्य कलापा म भी आपन सक्रिय सहयोग प्रदान कर उल्लेखनीय सेवाए दी थी। सेठ आणदजी कल्याणजी पेढी म भी आप ट्रस्टी थे और राजस्थान भर के अनेको जिनालया क निर्माण एव जीर्णोद्धार मे अमूल्य यागदान प्रदान किया था। मालपुरा मदिर का जीर्णोद्धार एव मालवीय नगर मे शखेश्वरम् जिनालय का भव्य निर्माण कराकर अपनी यशोगाथा को स्थायीत्व बनाकर चिर-स्मरणीय कर दिया। एक तरह से जयपुर एव श्री हीराचन्दजी वैद एक दूसरे के पर्याय बन गए थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी श्रीमान् हीराचन्दजी सा वैद के निधन से न केवल उनके परिवार एव इस श्रीसघ को ही अपार क्षति हुई है अपितु अखिल भारतीय स्तर पर जो रिक्तता पैदा हुई है उसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं है लेकिन विधि का विधान भी सर्वोपरि है।

महत्तरा सा श्री सुमगलाश्रीजी म सा आदि ठाणा की निश्रा म आयोजित यह सभा स्व श्रीमान् हीराचन्दजी सा वैद को अपने भाव भरे श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए शासनदेव से यही प्रार्थना करती है कि शासनदेव उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे।

–प्रस्तावक, मोतीलाल भडकतिया,
सघ मत्री
जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर

महिला स्वरोजगार शिविर

श्री गुणवंतमल सांड, शिक्षामंत्री-तपागच्छ संघ

धर्म विन्दु के टीकाकार आचार्य श्री 'साधर्मिक वात्सल्य' को जिनशासन का सार कहा है-

जिनशासनस्य सारो जीवदया निग्रहः कसायाणाम् ।
साधर्मिक वात्सल्यं भक्तिश्च तथा जिनेन्द्राणाम् ॥

जीवदया, कषायों का निग्रह, साधर्मिक वात्सल्य और जिनेन्द्र भगवन्त की भक्ति ये चार बातें जिनशासन का सार है। यदि व्यक्ति जीवन में इन चार को अंगीकार करता है तो वह जिनशासन को अपनाता है। समान धार्मिकों के साथ आचरण किस प्रकार का करना चाहिये इसका मार्गदर्शन देते हुए इसमें कहा गया है कि- ''वात्सल्यमेतेषु'' अर्थात् साधर्मिकों के प्रति वात्सल्य होना चाहिए। साधर्मिक वात्सल्य के रचनात्मक प्रकार बताते हुए कहा है कि परस्पर मैत्री भाव होना चाहिए। यह मैत्री भाव होने पर ही साधर्मिक बन्धु के सर्वाङ्गीण विकास का भाव मन में आयेगा। साधर्मिकों को भोजन, वस्त्र, चिकित्सा सेवा आदि उपलब्ध कराने के साथ-साथ यदि साधर्मिक को आर्थिक सहायता की आवश्यकता हो तो उपलब्ध करवानी चाहिए। साधर्मिक भक्ति परमात्म भक्ति है। परमात्मा के धर्मशासन का वहन करने वाला साधर्मिक है।

श्री संघ अपने श्रावक भाई-बहिनों के भरण-पोषण का कार्य करे या उनमें सहयोग करे तो यह साधर्मिक वात्सल्य है। [illegible] आत्मनिर्भर बनाये इस तथ्य को लक्ष्य में रखते हुए श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ जयपुर में वर्ष 1991 में हुए चातुर्मास में चारित्र चूडामणि, परमार क्षत्रियोद्धारक गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म.सा. की पावन प्रेरणा से स्थापित श्री समुद्रइन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष के माध्यम से साधर्मी बहिनों को स्वरोजगार प्रशिक्षण द्वारा स्वावलम्बी बनाना, वृद्धावस्था सहायता, शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में सहायता उपलब्ध कराना है। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी ग्रीष्मावस्था में इस कोष के माध्यम से महिला स्वरोजगार हस्तशिल्प प्रशिक्षण शिविर का आयोजन वरखेड़ा तीर्थोद्धारिका महत्तरा साध्वी सुमंगला श्री जी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दिनांक 21.5.2000 से 23.6.2000 तक किया गया। इस शिविर में 1065 शिविरार्थियों ने भाग लेकर निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें सिलाई पाक कला, मेहन्दी, मोती के आभूषण, कढ़ाई, सॉफ्ट टॉयज, पेंटिंग, फ्लावर मेकिंग पर्स बैग, गिफ्ट का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही पूर्णिमा वर्माज इन्स्टीट्यूट ऑफ डिजाईनिंग के सौजन्य से टेक्सटाईल डिजाइन में पेंटिंग, ब्लॉक एवं स्क्रीन प्रिंटिंग, [illegible], [illegible] आदि का प्रशिक्षण भी दिया गया।

[illegible] वर्षों की भाँति इस शिविर में भी

जिसकी आर्थिक स्थिति इस प्रकार की थी जो प्रशिक्षण सामग्री नहीं खरीद सकती थी, उनको सामग्री ही उपलब्ध नहीं करायी अपितु प्रशिक्षण के पश्चात् वह सामग्री भेट स्वरूप उन्हीं शिविरार्थिया को पदान की गई।

शिविर के उद्घाटन समारोह मे साध्वी प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा न मगलाचरण कर समारोह का शुभारभ किया। महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा ने अपने प्रवचन मे कहा कि हमारे गच्छाधिपति गुरुदेव, जिनकी प्रेरणा से कोष की स्थापना हुई शिविर के माध्यम से छात्राए रोजगार को पाप्त करके अपना जीवन उत्तम बनायेगी यह भावना मानव प्रेम, मानव उत्थान की भावना की द्योतक ह। महिला दो कुल को सुशोभित करती ह अत जहाँ आप विभिन्न कलाओ को सीखे वहीं पर आप जीवन जीने की कला भी सीखना। बुराइया को निकालते हुए अच्छाइयाँ ग्रहण करना।

शिविर समापन एव पारितोपिक वितरण समारोह का आयोजन दिनाक 27 6 2000 को महत्तरा सा जी सुमगला श्री जी म सा की पावन निश्रा एव श्री आर सी शाह कर सलाहकार के मुख्य आतिथ्य मे हुआ। सर्वप्रथम साध्वी जी श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी ने मगलाचरण किया। महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा ने कहा कि आपने जो जो यहाँ सीखा हे, प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उसको अपने तक ही सीमित नहीं रखे अपितु आगे अपने घर मे, आस-पडास मे दे। जिससे आप भूलगी भी नहीं, साथ ही ओरो को भी इसका लाभ मिलेगा। ज्यादा से ज्यादा जीवन मे उसे काम मे ले तभी हमारे सीखने का फायदा होगा। सघ के अध्यक्ष 'सघरत्न' श्री हीराभाई चोधरी ने मुख्य अतिथि का माला एव प्रतीक चिह्न द्वारा स्वागत करते हुए शिविरार्थिया से स्वागत भापण मे कहा कि जीवन म आर्थिक उन्नयन के लिए किसी न किसी कला का हाना आवश्यक है। आप लोगो ने जो भी सीखा हे उसका उपयोग अपने जीवन म कीजिये। यदि आप राजगार के क्षेत्र से जुड़ना चाहती है ओर आपको इसमे किसी प्रकार की परेशानी हो तो आप हमे अवगत कराइये। हम इसके लिए हमसे जो भी सहयोग हा सकेगा वह देगे।

सघ एव श्री समुद्र इन्द्रदिन्न साधर्मी सवा कोप क तहत चलने वाली गतिविधियो की सक्षिप्त जानकारी देते हुए सघ मत्री श्री मोतीलाल जी भड़कतिया न कहा कि श्री विजयानन्द विहार का भवन तयार होन पर जहाँ शिविर लगान मे हम और अधिक सुविधा रहेगी वहीं पर आप लोगा के विकास हेतु हम नवीन कार्य याजना बनाकर क्रियान्वित कर सकेगे ताकि आप रोजगार के क्षेत्र मे दक्षता प्राप्त करके अपना व्यवसाय कर सक।

मुख्य अतिथि श्री आर सी शाह ने कहा कि शिविर द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण को पाप्त करने की जीवन मे अत्यन्त आवश्यकता ह। जब शिविरार्थी सीमित साधनो के साथ कम समय मे इतना अधिक सीख रहे है तो इसमे निश्चित रूप से शिविर सयोजिका प्रशिक्षिका की अह भूमिका ह।

सघ के शिक्षा मत्री ने सभी आगन्तुको को धन्यवाद देते हुए कहा कि मे शिविरार्थियो का

आभारी हूँ जो इतनी भीषण गर्मी होते हुए भी इस सीमित स्थान में बडी संख्या में सीखने के लिए आ रही है। यह इस बात का प्रतीक है कि जो बहनें यहाँ सीखा रही हैं वे पूर्ण निष्ठा एवं लगन के साथ सिखा रही हैं। श्री वीर बालिका महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना प्रथम इकाई के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि गत वर्षो की भॉति इस वर्ष भी हमें प्रशिक्षण, व्यवस्था आदि में जो सहयोग मिला है वह भविष्य में भी मिलता रहे यह हमारी अभिलाषा है।

हम पूर्णिमा वर्मा इन्स्टीट्यूट ऑफ डिजाइनिंग, जवाहर नगर के भी आभारी हैं जिन्होंने इतने दिन तक अपनी इन्स्टीट्यूट से टैक्सटाइल डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग का प्रशिक्षण देने हेतु प्रशिक्षकों को निःशुल्क भेजा। भविष्य में भी आप इस संस्था में इसी प्रकार का प्रशिक्षण देने को तेयार हैं इसके लिए श्रीमती पूर्णिमा जी वर्मा सहित इनके इन्स्टीट्यूट के सभी सदस्यों का स्वागत है।

शिविर संयोजिका सुश्री सरोज कोचर ने शिविर की संक्षेप में जानकारी देते हुए कहा कि शिविर में दिये जाने वाले प्रशिक्षण से शिविरार्थी बहनें अत्यन्त लाभान्वित हो रही हैं तथा उनकी यह इच्छा है कि टैक्सटाइल डिजाइनिंग, सिलाई की कक्षा यदि नियमित रूप से लगे तो वे और अधिक लाभान्वित होंगी। जो शिविरार्थी बहनें यहॉ से प्रशिक्षण प्राप्त करके जाती है उनमें से कुछ बहनें अपने यहॉ अभिरुचि कक्षाएं चलाती है या व्यवसाय के क्षेत्र में जुडती हैं। पर ग्रीष्मावकाश में अपने यहॉ के कार्य बंद करके उनमें सामंजस्य स्थापित करके यहॉ अपनी सेवाएं देती है यह उनका इस संस्था के प्रति समर्पण के भाव को दर्शाता है। यही भाव उनका एवं औरों का भविष्य में भी बना रहेगा तो निश्चित रूप से पूज्य गुरुदेव की भावना साकार रूप लेगी कि खुद संभले-औरों को संभालें।

शिविर में प्रशिक्षण देने वाली बहनें तथा प्रत्येक को पुरस्कार स्मृति चिह्न, प्रशिक्षण में प्रथम-द्वितीय-तृतीय स्थान पर रहने वाली प्रशिक्षणार्थियों को पारितोषिक भेंट किए गए।

साथ ही शिविर संचालिका सुश्री सरोज कोचर को उनके द्वारा शिविर आयोजन एवं संचालन में कई वर्षों से दी जा रही निस्वार्थ सेवाओं के लिए तपागच्छ संघ की ओर से शाली ओढाकर एवं स्मृति चिह्न भेंटकर स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया गया।

> जब तृष्णा विवेक पर हावी हो जाती है तो वह आंधी-तूफान की तरह जन समाज के लिए भयंकर रूप धारण कर लेती है।
>
> जब सभी धर्म वाले अभिवादन में अपने अपने इष्ट देव का ही नाम बोलते हैं तो हम जय जिनेन्द्र ही क्यों न बोलें।

श्री सुमति जिन श्राविका संघ

श्रीमती मधु कर्णावट, महामंत्री

श्री सघ के परम पुण्योदय से प पू आ श्री वल्लभसूरीश्वरजी म सा की समुदायवर्तिनी सा श्री राजेन्द्र श्री जी म सा की शिष्या सा श्री देवेन्द्र श्री जी म सा की प्रेरणा से 1 10 93 को श्री सुमति जिन श्राविका सघ रूपी पौधे का रोपण हुआ था जो एक पेड़ के रूप मे फलीभूत हो रहा है। समाज की विविध गतिविधियो मे भाग लेता रहा हे और आगे भी लेता रहेगा। समय-समय पर धार्मिक कार्यो के लिए निमत्रण मिलते है श्राविका सघ यथा पूर्ण करने का प्रयास करती हे।

इस वर्ष सुमति जिन श्राविका सघ के चुनाव सम्पन्न हुए है जिसकी नयी कार्यकारिणी निम्नलिखित हे-

अध्यक्ष	श्रीमती उषा साड
उपाध्यक्ष	श्रीमती सतोप छाजेड़
मत्री	श्रीमती मधु कर्णावट
सहमत्री	श्रीमती निर्मला कोचर
कोषाध्यक्ष	श्रीमती चन्द्रकान्ता दुगड़
प्रचार-प्रसार मत्री	श्रीमती विद्या मुणोत
सास्कृतिक मत्री	श्रीमती प्रतिभा शाह

यह चुनाव हमारे गुरुजी श्री धनरूपमल नागौरी और सरक्षिका लाड बाईसा शाह के नेतृत्व मे सम्पन्न हुए है। अब हमारी नयी सरक्षिका श्रीमती सुशील छजलानी निर्वाचित हुई है।

पिछले चातुर्मास म विराजित मुनिवर्य श्री मणिप्रभविजय जी म एव साध्वी श्री हर्पप्रभा श्री जी म के आगमन पर सुमति जिन श्राविका सघ ने कलश लेकर अगवानी की। आचार्य श्री नित्यानदसूरीश्वर जी म सा के आगमन पर भी उनकी अगवानी की। वरखेड़ा म आदिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा म भी पूर्ण सहयोग करने का प्रयास किया एव स्वागत गीत भी प्रस्तुत किया।

साध्वी जी म सा की प्रेरणा से ज्ञानपचमी पर श्री सुमतिनाथ मदिर म श्राविका सघ क आर्थिक सहयाग से सुमति जिन श्राविका सघ के तत्वावधान म आत्मानन्द सेवक मण्डल के सहयाग स प्रभू अग रचना का एव कुमारपाल महाराजा की आरती एव दीपक प्रतियागिता का आयोजन रखा गया था। कुमारपाल वनन का श्रेय सघ के अध्यक्ष हीराभाई चोधरी परिवार ने लिया। सकल सघ के साथ आगरा वाले मदिर स गाजे-बाजे के साथ मदिर तक आय। दीपक पतियोगिता भी रखी गयी थी इसम पुरस्कार भी दिये गय। जिसमे प्रथम—प्रियका चोधरी, द्वितीय—रजना मेहता एव तृतीय—श्रुती चोधरी को प्रात्साहन हेतु चादी के दीपक दिये गये एव भाग लेने वाले सभी कलाकारा को प्रोत्साहित किया गया।

पूर्व की भाँति महिने की एक तारीख का सघ की मिटिग के साथ सामूहिक सामायिक भी की जाती है एव 15 तारीख को स्नात्र पूजा रखी जाती है जिसका लाभ बारी-बारी से सभी बहन लेती रहती हे। शहर के व आस-पास के सभी मदिर की वार्पिक पूजाओ मे पूजा पढाकर अपना कर्त्तव्य पूरा करती रही हे। हर वर्प बहना को प्रोत्साहन हेतु कुछ न कुछ भेट स्वरूप दी जाती है। हमारी सभी वहने आप सबकी आभारी हे कि हम आप सबका पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहता हे।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल का

वार्षिक प्रतिवेदन

श्री ललित दुगड़, मंत्री

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल श्री जैन श्वे.तपागच्छ संघ जयपुर का करीब पैंतालीस वर्षो से अभिन्न अंग रहा है। मण्डल परिवार हमारे संघ द्वारा एवं अन्य संघों द्वारा आयोजित धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में पूर्ण मनोयोग से भाग लेता रहा है।

गत् चातुर्मास में यहॉ विराजित पं.पू.मुनिराज श्री मणिप्रभ विजय जी मं.सा. एवं साध्वी श्री हर्ष प्रभा श्री जी मं.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में हुई चातुर्मासिक गतिविधियों में मण्डल परिवार ने उल्लास पूर्वक भाग लिया।

दिनांक 31 अक्टु. 1999 को मण्डल के चुनाव श्रीमान मोतीलाल जी भडकतिया चुनाव अधिकारी की देखरेख में उल्लासपूर्ण वातावरण में निर्विरोध रुप से सम्पन्न हुए। मण्डल परिवार उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने सर्वप्रथम प्रभु भक्ति को महत्व देते हुए श्री अशोक पी जैन के नेतृत्व में दीपावली के शुभ दिन को सुमतिनाथ जिनालय में भव्य अंग रचना की गयी इस अंग रचना हेतु श्रीमान सुनीलकुमार जी भन्साली ने [illegible] से हमें मोती उपलब्ध कराये हम उनका हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते है।

ज्ञान पंचमी के शुभ अवसर पर मण्डल परिवार एवं [illegible] संघ के संयुक्त तत्वावधान में भव्य अंग रचना, पूजा की गई।

एवं श्री कुमारपाल राजा की आरती का आयोजन रखा जिसमें मण्डल परिवार ने पूरा सहयोग दिया।

मण्डल के भूतपूर्व महामंत्री एवं हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री अशोक पी. जैन को मुम्बई से जयपुर होते हुए सम्मेद शिखर ट्रेन यात्रा संघ के जयपुर आगमन प्रसंग पर जयपुर स्टेशन पर उनका माल्यार्पण एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर बहुमान किया।

जनका कालोनी मन्दिर एवं चन्दलाई मन्दिर में वार्षिकोत्सव के कार्यक्रमों में मंडल परिवार ने अपना सहयोग प्रदान किया।

संयोग से मिलेनियम वर्ष 2000 का शुभ आगमन एवं पुरुषादानी परमात्मा श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक एक ही दिन था। इस शुभ अवसर पर मंडल परिवार ने सुबह भव्य स्नान पूजा का आयोजन रखा तथा उसी दिन सांयकाल भव्य अंग रचना एवं पुष्पों की सुन्दर झांकी का आयोजन रखा गया। भगवान [illegible] देखने से दिव्य अलौकिक आनन्द की अनुभूति स्मरणीय रहेगी। इस आयोजन का सम्पूर्ण लाभ श्री राजकुमार जी ललित कुमार दुगड़ परिवार ने लिया।

मंडल परिवार पर वर्ष 1981-83 चातुर्मास में विराजित [illegible]

रहा, प्रभू भक्ति की प्रेरणा की देन पूज्य म सा की थी जो हम आज भी नहीं भुला पाये ह ।

पूज्य आचार्य श्री ह्रींकार सूरि जी म सा का गुरु मन्दिर एव अन्य जिन बिम्बो की प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर एक तीर्थ यात्री बस दिनक 9-11 फरवरी, 2000 को नागेश्वर तीर्थ गयी इस यात्रा के सयोजक श्रीमान ज्ञान चन्द जी भण्डारी थे । इस यात्रा मे घाटा पूर्ती मे श्री चिमन भाई मेहता, श्री ज्ञान चन्द जी भण्डारी, श्री शान्ति कुमार जी सिघी एव ललित कुमार दुगड ने सहयोग दिया मडल परिवार इन सभी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हे ।

17-25 फरवरी तक बरखेडा मन्दिर की प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर मण्डल परिवार को श्री सघ द्वारा आवास एव यातायात जेसी महत्वपूर्ण व्यवस्था सौपी थी । आवास व्यवस्था के प्रभारी मण्डल के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी मुणोत थे एव यातायात व्यवस्था के प्रमुख भूतपूर्व अध्यक्ष श्री विजय जी सेठिया थे । इन दोनो के नेतृत्व मे मण्डल के करीब 40 कार्यकत्ताओ ने इन व्यवस्थाओ के अलावा मन्दिर जी मे अग रचना, भोजन परोसना, स्वागत कक्ष एव पूछताछ कार्यालय, पण्डाल मे व्यवस्था इत्यादि कार्यो मे यथा शक्ति अपना अमूल्य यागदान पूरी लगन एव निष्ठापूर्वक दिया ।

आठो दिन शहर से बरखेडा यात्रियो को भेजने के कार्य मे मुख्य रुप से श्री नरेश महेता श्री कुशल जी मुणोत, श्री नवीन भाई शाह, भरत भाइ शाह, दीपक बैद, प्रीतेष शाह, पीयूष दुगड, मोहित महेता, आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

इसी प्रकार आवास व्यवस्था मे जो कि पदमपुरा एव बरखेडा दोनो जगह थी मे मुख्य रुप से ललित दुगड, दिनेश लुणावत, सजय महेता, अशोक पी जैन इत्यादि का महत्वपूर्ण योगदान रहा । इसके अलावा आठो दिन बरखेडा मन्दिर म मडल परिवार द्वारा मन्दिर जी मे भव्य अग रचना कर पुण्य का लाभ कमाया । श्री दिनेश लुणावत द्वारा शुद्ध पन्ना एव माणक की आगी का लाभ लिया गया श्री सजय मेहता एव अशोक पी द्वारा इस भव्य आगी की अलोकिक रचना की गयी ।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा के सभी कार्यक्रमो मे मण्डल परिवार ने महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

इस अवसर पर मण्डल के वर्तमान अध्यक्ष श्री प्रकाश मुणोत का श्री सघ द्वारा माल्यार्पण' साफा एव स्मृति चिन्ह प्रदान कर बहुमान किया गया । इस अवसर पर श्री सघ द्वारा मण्डल परिवार को 11000 रु की राशि भेट स्वरुप प्रदान की गयी एव अन्य कार्यकत्ताओ का बहुमान चादी के सिक्के द्वारा किया गया । इस हेतु हम सघ का हृदय से आभार व्यक्त करते है ।

श्री सुमतिनाथ भगवान जिनालय के वार्षिकोत्सव एव पालीताणा से बद्रीनाथ जाने वाले आदिनाथ भगवान की रथयात्रा कार्यक्रम म मण्डल परिवार का प्रमुख योगदान रहा । इसी प्रकार चातुर्मासिक प्रवेश एव तत्पश्चात हो रही विभिन्न धर्म आराधनाओ मे मण्डल परिवार का सक्रिय योगदान हो रहा है ।

जैसा कि आप सब जानते हे मण्डल श्री सघ की एक महत्वपूर्ण इकाई हे । श्री सघ की आप उसे भावी पीढी भी कह सकते हे । मेरा श्री

संघ के समस्त महानुभावों से निवेदन है कि आप मण्डल से जुडे, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मण्डल परिवार इसी तरह से पूर्ण रुपेण समर्पित भावना एवं लगन से कार्य करता रहेगा।

मनुष्य गल्तियों का पुतला है हमसे एवं हमारे किसी भी कार्यकत्ता से कार्य करते हुए ज्ञात एवं अज्ञात रुप से कोई अज्ञानता हुई हो उसके लिए मैं सभी कार्यकत्ताओं की ओर से क्षमा प्रार्थी हूँ।

मण्डल की वर्तमान कार्यकारिणी इस प्रकार है :-

अध्यक्ष	श्री प्रकाश मुणोत	522288
उपाध्यक्ष	नरेश महेता	570287
महामंत्री	ललित दुगड	568866
संयुक्त मंत्री	संजय महेता	321932
कोषाध्यक्ष	प्रीतेष शाह	569513
संघठन मंत्री	सुरेश जैन	
सास्कृतिक मंत्री	रवीप्रकाश चोरडिया	311766
शिक्षा मंत्री	भरत शाह	568369
सूचना प्रसा.मंत्री	दिनेश लुणावत	571830

कार्यकारिणी सदस्य

श्री विजय सेठिया	569614
श्री अशोक पी.जैन	—
श्री राकेश छजलानी	651394
श्री मोहित मेहता	640925

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय में अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री

भेंटकर्त्ताओं की शुभ नामावली

भादवा सुदी 5 संवत 2056 से भादवा सुदी 4 संवत् 2057 तक

1.	अखंड ज्योत	श्रीमती पुष्पादेवी संचेती
2.	पक्षाल पूजा	श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी
3	बरास पूजा	श्री कोतर परिवार
4.	चंदन पूजा	श्री शाह कल्याणमल जी [illegible] जी
5.	[illegible] पूजा	श्री [illegible] जी [illegible]
6.	पुष्प पूजा	श्रीमती पारस देवी [illegible]
7	अंग रचना	[illegible]
8	धूप पूजा	[illegible]

श्री वर्द्धमान आयम्बिल शाला की स्थायी मित्तियाँ

श्री सम्पतलाल जी मेहता	501/-
श्री बाबूलाल जी मणिलाल शाह	501/-
श्रीमती अरुणाबेन के एल जन	501/-
श्री धर्मचद जी मेहता	501/-
श्री लक्ष्मणसिह जी सिघी	501/-
श्री मोतीलाल जी कटारिया	501/-
श्री मोतीलाल जी वैद मेहता	501/-
श्री विजयकुमार जी दुग्गड, कलकत्ता	501/-
श्री भॅवरलाल जी कोचर	501/-
श्री केसरीमल जी मेहता	501/-
श्री सानराज जी पोरवाल	251/-
श्री कमल सिह जी कोचर	251/-
श्री वृजदासजी नागरदासजी लगाडिया	251/-
श्रीमती निकेताबेन कौशल भाई शाह	251/-
श्रीमती निर्मला देवी कोचर	151/-
श्रीमती कमलादेवी केसरीचदजी सुराणा	151/-
श्री सूरत चद जी भूरट	151/-
श्री सुशील चद जी सिघी	151/-
श्री आर के चतर	151/-
श्री मदनराज जी कमलराज जी सिघी	151/-
श्री लखपत चद जी भडारी	151/-
श्री ज्ञानचदजी सुभाषचद जी छजलानी	151/-
श्री हणुवतराज जी मोहनोत	151/-
श्री राजमलजी सिघी	151/-
श्री सुशीलकुमार जी छजलानी	151/-
श्री भॅवरलाल जी मुथा	151/-

श्री वरखेडा तीर्थ पर हर माह एक बस ले जाने वाले भाग्यशाली

1 श्री भॅवरलाल जी मुथा
2 श्री तरसेम कुमार जी पारख
3 श्री हीराभाई चौधरी
4 श्री पतनमलजी नरेन्द्र कुमार जी लूणावत
5 श्री आर सी शाह
6 श्री सोनराज जी पोरवाल
7 श्री दानसिह जी कर्नावट
8 श्री कुशलराज जी सिघी
9 श्रीमती माणक बाई सुराणा
10 श्रीमती राजकुमारी जी पालावत
11 श्रीमती कमलाबेन शाह
12 श्री दशरथचद जी भडारी
13 श्री मोतीचदजी बेद
14 श्री भॅवरलाल जी मूथा
15 श्री नवीन सोनू गाधी
16 श्री शैलेष भाई शाह

यादों का झरोखा

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर में 46 वर्षों में हुए चातुर्मास एवं पदाधिकारियों का विवरण

–सकलनकर्ता, मोतीलाल भडकतिया

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर का इतिहास यो तो सम्वत 1784 से ही प्रारम्भ हो जाता है जब श्री सुमतिनाथ जिनालय की जिनालय घी वालो का रास्ता की नीव रखी गई। कहते है कि जिस दिन जयपुर शहर की नीव रखी गई उसी दिन इस जिनालय की नीव भी रखी गई। तब से निरन्तर हमारे बुजुर्ग श्री सघ के स्व-नाम धन्य आगेवान सस्था एव श्रीसघ के कार्यकलापो का सचालन करते रहे जिनका अपना इतिहास है।

माणिभद्र के प्रथम अक का पकाशन विक्रम स 2016 म हुआ जिसमे वर्णित आलेखो से ज्ञात होता ह कि इस श्रीसघ के आगेवानो ने सम्वत 2011 म विधिवत रूप से विधान बनाया तथा उसके प्रावधानो के अनुसार मताधिकार के आधार पर महासमिति का तीन वर्ष के लिए निर्वाचन होता रहा। माणिभद्र मे प्रकाशित चातुर्मास सम्बन्धी विवरण एव सघ पदाधिकारियो की नामावली एव वार्षिक कार्य विवरण प्रस्तुतकर्ता सघमत्री के नामोल्लेख क अनुसार चातुर्मास एव सघ के अध्यक्ष उपाध्यक्ष एव सघमत्री के पद पर कार्यरत रह महानुभावो का विवरण यहा पर माणिभद्र क 35व प्रकाशित किया गया था जिसे सन 2000 तक के आधार पर पूर्ण कर पुन प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि वर्तमान एव भावी पीढी की जानकारी एव स्मृति के लिए यह विवरण उपयोगी सिद्ध होगा।

माणिभद्र की अक सख्या	सम्वत्	सन्	चातुर्मास	अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सघमत्री
	2012	1955	मुनि श्री न्यायविजयजी	श्री गुलाबचन्दजी ढड्ढा	श्री किस्तूरमल जी शाह	श्री उमरावमलजी सिघी
	2013	1956	मुनि श्री रगविजयजी	श्री धनरूपमलजी भडारी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराचन्दजी वैद
	2014	1957	मुनि श्री जयविजयजी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
	2015	1958	मुनि श्री प्रेमसुन्दरविजयजी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
1	2016	1959	मुनि श्री भव्यानद विजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
2	2017	1960	—	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भसाली	श्री हीराचन्दजी वैद

3	2018	1961	सा. श्री जितेन्द्र श्री जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
4	2019	1962	—	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
5	2020	1963	मुनि श्री जिनप्रभविजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
			सा. श्री देवेन्द्रश्रीजी			
6	2021	1964	गणि श्री दर्शनसागर जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
			सा. श्री विद्या श्री जी			
7	2022	1965	यती श्री रूपचन्द जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
8	2023	1966	मुनि श्री विशालविजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री केसरी सिंह जी पालेचा	श्री हीराचन्दजी वैद
9	2024	1967	श्री विशालविजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री केसरी सिंह जी पालेचा	श्री हीराचन्दजी वैद
10	2025	1968	मुनि श्री भद्रगुप्तविजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री केसरी सिंह जी पालेचा	श्री हीराचन्दजी वैद
11	2026	1969	पन्यास श्री भुवनविजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद
12	2027	1970	मुनि श्री विनयविजय जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद
13	2028	1971	सा. श्री निर्मला श्री जी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद
14	2029	1972	सा. श्री निर्मला श्री जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री जवाहरलाल चौरडिया
15	2030	1973	सा. श्री दमयन्ती श्री जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री जवाहरलाल चौरडिया
16	2031	1974	गणिवर्य श्री विशालविजय जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री जवाहरलाल चौरडिया
17	2032	1975	मुनि श्री नवरत्नविजय जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भडकतिया
18	2033	1976	मुनि श्री कलापभविजय जी	श्री किस्तूरमल जी शाह	श्री मदनराज जी सिंघी	श्री हीराचंदजी बैद
19	2034	1977	प. श्री न्यायविजय जी	श्री किस्तूरमल जी शाह	श्री मदनराज जी सिंघी	श्री रणजीत सिंह जी भंडारी
20	2035	1978	प. श्री न्यायविजय जी	श्री किस्तूरमल जी शाह	श्री मदनराज जी सिंघी	श्री रणजीत सिंह जी भंडारी
21	2036	1979	मुनि श्री धर्मगुप्तविजय जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भडकतिया
			सा. श्री देवेन्द्र श्री जी			
22	2037	1980	प. श्री पदमविजय जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भडकतिया
23	2038	1981	आ. श्री ॐकारसूरी जी	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भड़कतिया
			सा. श्री शुभोदया श्री जी			

24	2039	1982	आ श्री मनोहरसूरीश्वर जी	श्री हीराभाई एम चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भडकतिया
25	2040	1983	आ श्री हीकारसूरीश्वर जी	श्री हीराभाई एम चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भडकतिया
26	2041	1984	मुनि श्री नयरत्नविजय जी	श्री हीराभाई एम चौधरी	श्री कपिल भाई शाह	श्री मोतीलाल भडकतिया
27	2042	1985	आ श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी	श्री शिखरचद जी पालावत	श्री कपिल भाई शाह	श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत
28	2043	1986	मुनि श्री अरुणविजय जी	श्री शिखरचद जी पालावत	श्री कपिल भाई शाह	श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत
29	2044	1987	आ श्री सद्गुणसूरीश्वर जी	श्री शिखरचद जी पालावत	श्री कपिल भाई शाह	श्री सुशील कुमार छजलानी
30	2045	1988	सा श्री चन्द्रकला श्री जी	श्री शिखरचद जी पालावत	श्री कपिल भाई शाह	श्री सुशील कुमार छजलानी
31	2046	1989	मुनि श्री नित्यवर्द्धनसागर जी	श्री शिखरचद जी पालावत	श्री कपिल भाई शाह	श्री नरेन्द्र कुमार लूणावत
32	2047	1990	— खाली —	श्री कपिल भाई शाह	श्री मदनराज जी सिंघी	श्री नरन्द्र कुमार लूणावत
33	2048	1991	आ श्री इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी सा श्री पद्मलता जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री हीराचदजी बेद	श्री मोतीलाल भडकतिया
34	2049	1992	आ श्री हिरण्यप्रभसूरीश्वर जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री हीराचदजी बैद	श्री मोतीलाल भडकतिया
35	2050	1993	उ श्री धरणेन्द्रसागर जी सा श्री देवेन्द्र श्री जी	श्री हीराभाई चौधरी	श्री हीराचदजी बेद	श्री मोतीलाल भडकतिया
36	2051	1994	मुनि श्री निर्मलसागर जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री तरसेम कुमार पारख	श्री मोतीलाल भडकतिया
37	2052	1995	सा श्री सुमगला श्री जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री तरसेम कुमार पारख	श्री मोतीलाल भडकतिया
38	2053	1996	सा श्री सुमगला श्री जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री तरसेम कुमार पारख	श्री मोतीलाल भड़कतिया
39	2054	1997	मुनि श्री पुण्यरत्नविजय जी सा श्री पदमरेखा श्री जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री तरसेम कुमार पारख	श्री मोतीलाल भडकतिया
40	2055	1998	सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री तरसेम कुमार पारख	श्री मोतीलाल भडकतिया
41	2056	1999	मुनि श्री मणिप्रभविजय जी सा श्री हर्षप्रभा श्री जी	श्री हीराभाई चौधरी श्री हीराभाई चोधरी	श्री तरसेम कुमार पारख श्री तरसेम कुमार पारख	श्री मोतीलाल भडकतिया श्री मोतीलाल भडकतिया
42	2057	2000	मुनि श्री विचक्षणविजय जी सा सुमगला श्री जी	श्री हीराभाई चोधरी	श्री नवीनचद शाह	श्री मोतीलाल भड़कतिया

श्री सुमतिनाथाय नमः

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1999-2000

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

श्री मोतीलाल भड़कतिया, संघ मंत्री

सेवा में,

श्री आत्म-वल्लभ-समुद्रसुरीश्वरजी म सा. की पाट परम्परा पर बिराजित वर्तमान गच्छाधिपति आ. श्रीमद्‌विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा., के आज्ञानुवर्ती सुशिष्य परमपूज्य प्रवचनकार मुनि श्री विचक्षण विजय जी म.सा., मुनि श्री मृगेन्द्रविजयजी म.सा. एवं बाल मुनि श्री मतिदर्शन विजयजी म.सा. आदि ठाणा-3

एवं

इसी संघ के अन्तर्गत संचालित वरखेडा तीर्थ पर विराजित उपरोक्त गच्छाधिपति श्रीमद्‌विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री सम्पतश्रीजी म.सा की शिष्या वरखेडा तीर्थ उद्धारिका शासन दीपिका महत्तरा साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा. एवं आपकी ही शिष्या प्रशिष्याएं सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म., सा. श्री कुसुमप्रभाश्रीजी म., सा. श्री अमृतप्रभाश्रीजी म., सा. श्री संयमरत्नाश्रीजी म.सा., सा. श्री पूर्णनन्दिता श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री श्रुतदर्शिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-7 एवं समस्त श्री सकल संघ।

नव-निर्वाचित महासमिति वर्ष 2000-2002 की ओर से यह प्रथम प्रतिवेदन विगत महासमिति के अंतिम वर्ष के कार्य कलापों एवं वर्ष 1999-2000 के अंकेक्षित आय-व्यय विवरण को आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

महासमिति का चुनाव

विगत महासमिति द्वारा 8 जून, 1997 को कार्य भार सभाला गया था। तीन वर्ष का कार्यकाल सन्निकट होते ही नई महासमिति के निर्वाचन हेतु प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई एवं चुनाव सम्बन्धी समस्त प्रक्रियाओं को पूर्ण करते हुए दि 18 जून, 2000 रविवार को मतदान सम्पन्न हुआ। कुल 44 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत किए जिनमें से एक प्रत्याशी का नामांकन पत्र निरस्त किया गया और 12 प्रत्याशियों ने अपने नाम वापिस ले लिए। शेष रहे 31 प्रत्याशियों मे से 21 सदस्यों का निर्वाचन करने हेतु रविवार, दि 18 जून, 2000 को मतदान हुआ तथा इसी दिन परिणाम घोषित कर दिया गया। दि. 21 जून, 2000 को चार सदस्यों के सहवरण के पश्चात् पदाधिकारियों का निर्वाचन एवं संयोजकों का मनोनयन होकर नव-निर्वाचित महासमिति द्वारा तत्काल प्रभाव से कार्य भार सम्भाल लिया गया।

चुनाव अधिकारी श्री गजेन्द्र कुमार जी चत्तर, सी.ए. एवं उनके सहयोगी श्री [illegible] कुमार जी [illegible] एवं श्री [illegible] जी [illegible]

महासमिति का चुनाव अथक परिश्रम करके शाति, शालीनता एव सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मे सपन्न कराने पर महासमिति द्वारा प्रस्ताव पारित कर धन्यवाद दिया गया ।

विगत चातुर्मास

जैसा कि आपको विदित ह कि पिछले वर्ष परम पूज्य मुनिवर्य श्री मणिप्रभ विजय जी म सा एव साध्वी श्री हर्षप्रभाश्रीजी म सा आदि ठाणा-8 का यहॉ पर चातुर्मास सम्पन्न हुआ था । पर्यूषण महापर्व के पूर्व हुए कार्यकलापा के बारे मे पिछले अक मे विवरण प्रकाशित किया जा चुका था । तत्पश्चात् आपकी ही पावन निश्रा मे पर्वाधिराज महापर्व की भव्य आराधनाए सम्पन्न हुई। भादवा वदी 12 स 2056 दि 7 सितम्बर, 99 को अष्टाह्निका प्रवचन स पर्यूषण पर्व का शुभारभ हुआ और इसी दिन श्री पार्श्वनाथ पचकल्याणक पूजा पढाने का लाभ श्री सुमति जिन श्राविका सघ, जयपुर द्वारा लिया गया । दूसरे दिन दि 8/9 को श्री अन्तरायकर्म निवारण पूजा श्री विजयराज जी लल्लूजी मूथा परिवार तथा तृतीय दिवस की श्री महावीर पच कल्याणक पूजा पढाने का लाभ श्री ज्ञानचन्दजी तिलकचन्दजी अरुणकुमार जी पालावत परिवार द्वारा लिया गया । इस बार पोथाजी का जुलूस श्रीसघ की ओर से आगरा वालो के मदिर जी मे ले जाकर भक्ति की गई तथा भादवा सुदी 1 दि 10 9 99 को पोथाजी की वापसी पर चढावे से कल्प सूत्र बोहराने का लाभ श्री हीराभाई मगलचदजी चाधरी परिवार द्वारा लिया गया । भादवा सुदी 2 शनिवार दि 11 9 99 को भगवान महावीर का जन्मोत्सव बहुत ही उल्लासमय वातावरण मे मनाया गया । इस अवसर पर मासक्षमण सहित अन्य विशिष्ट तपस्या करने वालो का बहुमान किया गया। माणिभद्र स्मारिका के 41वे अक का विमोचन श्रीमान पारसजी कुहाड एडवोकेट के कर कमला से सम्पन्न हुआ ।

दि 14 9 99 को सवत्सरी महापर्व की महान आराधनाए आपकी पावन निश्रा मे सपन्न हुई । दि 15 9 को तपस्वियो को पारणा कराने का लाभ श्रीमती भीखी बाई बैद परिवार द्वारा लिया गया ।

दि 16 अक्टूबर से 24 अक्टूबर, 99 तक नवपदजी की ओली कराने का लाभ एक सद्गृहस्थ द्वारा लिया गया । ओलीजी क समय म ही एकादशाह्निका श्री जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमे आसोज सुदी 5 गुरुवार दि 14 10 99 से आसोज सुदी 15 रविवार दि 24 10 99 तक क्रमवार पूजाए पढाने का लाभ-(1) श्री माणिभद्र महापूजन-श्री नरेशकुमारजी दिनेशकुमारजी राकेशकुमारजी मोहनोत परिवार (2) श्री सर्वतोभद्र महापूजन-श्री हीरा पन्ना ज्वेलर्स, विशाखापट्टनम (3) श्री ऋषिमडल महापूजन-श्री पूनमचद भाई नगीनदास शाह (4) श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन-श्री हीराभाई मगलचन्दजी चोधरी परिवार (5) श्री चोविश जिन महापूजन-श्रीमती कमलाबेन भोगीलाल शाह (6) श्री नमस्कार महामत्र महापूजन-श्री भवरलाल जी मुथा परिवार (7) श्री अष्टोतरी शाति स्नात्र महापूजन-श्री

शिखरचंदजी अनिल कुमारजी सुनीलकुमारजी कोचर परिवार (8) श्री वीशस्थानक महापूजन-श्री केसरीमल जी देवीचन्दजी परमार परिवार । (9) श्री उवसग्गहरं महापूजन-श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमारजी लुनावत परिवार (10) श्री सिद्धचक्र महापूजन-श्रीमती हंसा बेन बसंतभाई शाह परिवार तथा (11) श्री भक्तामर महापूजन बरखेडा तीर्थ स्थल पर श्री संघ की ओर से पढाई गई। बरखेडा तीर्थ पर यात्रियों को विशेष बस से आने जाने एवं नवकारसी एवं साधर्मी वात्सल्य का लाभ श्री सोनराजजी पोरवाल परिवार द्वारा लिया गया।

नव वर्षाभिनन्दन एवं दीपावली का महोत्सव मनाया गया। दीपावली के दूसरे दिन दि. 8.11.99 को प्रातः लड्डू चढाया गया तथा इसी दिन के साथ-साथ 9.11.99 को भी प्रातः धर्म सभा हुई।

दि. 13.11.99 को ज्ञान पंचमी की आराधना के साथ-साथ सायंकाल कुमारपाल की आरती का आयोजन भी रखा गया। चढावा लेकर श्री हीराभाई चोधरी द्वारा कुमारपाल बनने का लाभ लिया गया। इस अवसर पर जिनालय में भव्य अंगरचना एवं फूलों की झांकी सजाई गई जिसमें श्री सुमति जिन श्राविका संघ एवं श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल द्वारा अभूतपूर्व सहयोग देकर कार्य सम्पन्न किया गया।

कार्तिक सुदी 14 के प्रवचन के अवसर पर चार माह तक क्रमिक रूप में अट्ठम एवं [illegible] तीर्थ के निमित्त प्रतिमाह आयम्बिल की तपस्या करने वालों का स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

कार्तिक पूर्णिमा की आराधना सम्पन्न करने के पश्चात् चातुर्मास परिवर्तन कराने के लाभार्थी श्री बाबूभाई मणिलाल शाह के निवास स्थान पर मुनिवर्य चतुर्विध संघ के साथ पधारे जहाँ पर धर्म सभा हुई। आपकी पावन निश्रा में चातुर्मास काल में तप-जप-ज्ञान-ध्यान आदि आध्यात्मिक कार्यकलापों के साथ सानन्द चातुर्मास सम्पन्न होने पर आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई तथा शीघ्र ही सम्पन्न होने वाली बरखेडा तीर्थ की प्रतिष्ठा में अपनी निश्रा प्रदान करने की कृपा करने हेतु विनती की गई जिसे आपने कृपा पूर्वक स्वीकार कर लिया।

महत्तरा सा. जी म.सा. का शुभागमन

अजमेर में चातुर्मास पूर्ण करते ही महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा., सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.सा., सा. श्री कुसुमप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा दि. 10 दिसम्बर 99 को जयपुर पधार गये। आपने जयपुर पहुंचने के साथ ही बरखेडा तीर्थ की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा की तैयारियों में मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया। साध्वी श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.सा. का तो समग्र रूप से भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ जिसके लिए संघ आपका अत्यन्त आभारी है।

आपकी ही पावन निश्रा में दि 15 दिसम्बर 99 को जाजम के मुहूर्त का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ था। प्रतिष्ठा तक आप जयपुर में ही विराजी तथा जयपुर के प्रवास काल में समग्र महिलाओं एवं बालिकाओं में आध्यात्मिक जागृति

पदा करने हेतु 10 रविवारीय शिविरो का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

आप ही की प्रेरणा एव निश्रा मे पोष बदी 10 दि 1 जनवरी 2000 को श्री सुमतीनाथ स्वामी जिनालय मे श्री पार्श्वनाथ पच कल्याणक पूजा श्री आत्मानद जेन सेवक मडल के तत्वाधान मे पढाई गई तथा जिनालय मे भव्य अग रचना श्री राजकुमार जी ललित कुमार जी दुगड के सोजन्य से की गई। दिन मे खीर के एकासणा कराने का लाभ भी श्री दुगड परिवार द्वारा लिया गया।

वर्तमान चातुर्मास

विगत चातुर्मास पूर्ण होने पर आगामी चातुर्मास हेतु प्रयास प्रारम्भ हो गए थे। गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न-स्रीश्वरजी म सा के सादडी आगमन पर दि 13 4 2000 को आयोजित सक्राति महोत्सव के अवसर पर सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी, उपाश्रय मत्री श्री अभयकुमारजी चौरडिया एव श्री राकेश कुमारजी मोहनोत, सयुक्त सघ मत्री उपस्थित हुए तथा बरखेडा की प्रतिष्ठा का कार्य आपके ही परम आशीर्वाद से सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष मे कामली बोहरा कर आभार व्यक्त किया गया। साथ ही आपसे विनती की गई कि चातुर्मास हेतु किन्हीं मुनिवर्य को जयपुर पहुचने की आज्ञा प्रदान करावे तथा आपने भी जयपुर श्रीसघ पर किए जा रहे उपकारो की कड़ी मे एक कडी और जोडते हुए परम पूज्य प्रवचनकार मुनिवर्य श्री विचक्षण विजयजी महाराज साहब आदि ठाणा-3 को जयपुर मे चातुर्मास करने का आज्ञा पत्र प्रदान कर दिया।

इस पत्र को लेकर उपरोक्त तीनो ही पदाधिकारी पुन दि 24 अप्रेल, 2000 को बडोदा के पास उमरकोई ग्राम मे उपस्थित हुए एव आपने भी कृपा पूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

लगभग एक हजार किलोमीटर का मासम की प्रतिकूलता एव भीषण गर्मी मे उग्र विहार करते हुए जयपुर पधारे। मार्ग मे आबूरोड एव अजमेर मे भी आपकी सेवा मे सघ के प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

आषाढ सुदी 1 रविवार, दि 2 जुलाई, 2000 को चेम्बर भवन मे समय्या करके भव्य जुलूस के साथ आपका नगर प्रवेश हुआ। आत्मानन्द सभा भवन पहुचने पर धर्म सभा हुई जिसमे सघ की ओर से कामली बोहराकर आपका अभिनन्दन किया गया। श्री सुमति जिन श्राविका सघ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। मुनिवर्य ने भी सभा को उद्बोधन देकर कृतार्थ किया। सभा का सचालन सघ मत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने किया तथा उपाश्रयमत्री श्री अभयकुमार जी चौरड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर सघ पूजा का लाभ श्री हीराभाई मगलचद जी चौधरी परिवार द्वारा लिया गया। सामूहिक आयबिल कराने का लाभ श्री मोतीलाल जी भडकतिया परिवार द्वारा लिया गया तथा दिन मे श्री पार्श्वनाथ पच कल्याणक पूजा पढाने का लाभ श्री भवरलाल जी मूथा परिवार द्वारा लिया गया।

चौमासी चौदस से आपके पवचन प्रारभ हुए और इसी दिन सूत्र जी बोहराने का चढावा

बुलाया गया जिसमें उत्तराध्ययन सूत्र बोहराने का लाभ श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी परिवार द्वारा एवं श्री विक्रमादित्य चरित्र बोहराने का लाभ श्री राजकुमार जी अभय कुमार जी चौरडिया परिवार द्वारा लिया गया। श्रावण बदी 2 मंगलवार को सूत्र बोहराने के साथ ही आपके ओजस्वी प्रवचन यहां पर हो रहे हैं। पूर्ववत प्रतिदिन संघ पूजा करने तथा क्रमिक रूप में अट्ठम की तपस्या करने वालों ने अपने नाम अंकित करा लिये हैं।

तदन्तर रविवार 23 जुलाई को दीपक एकासणा श्री हीराभाई मंगल चंद जी चौधरी परिवार द्वारा, दि. 30.7 को सामूहिक आयंबिल कराने का लाभ श्री राजकुमारजी अभय कुमार जी चौरडिया परिवार द्वारा, 6 अगस्त को खीर एकासणा कराने का लाभ श्री पूनम चंद भाई नवीन चंद जी शाह परिवार द्वारा, दि. 14 अगस्त को नीवी कराने का लाभ श्री कुमारपाल जी देसाई परिवार द्वारा तथा 20 अगस्त को सामूहिक आयंबिल कराने का लाभ श्रीमति लाडकंवर बाई रतनचंदजी सिंघी परिवार द्वारा लिया गया है। दि. 30 जुलाई को अखण्ड नवकार मंत्र के जाप का आयोजन भी सम्पन्न हुआ जिसमें बडी संख्या में आराधकों ने भाग लिया।

अब शनिवार दि. 26 अगस्त 2000 से आपकी पावन निश्रा में पर्युषण पर्वाधिराज की भव्यातिभव्य आराधनाएं सम्पन्न होने जा रही हैं।

बरखेडा में चातुर्मासिक प्रवेश

बरखेडा तीर्थ पर सम्पन्न हुई अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पश्चात यह प्रथम चातुर्मास है और सौभाग्य से बरखेडा तीर्थ उद्धारिका महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-7 यहाँ पर चातुर्मास कर रही हैं। आपका चातुर्मासिक प्रवेश दि. 13 जुलाई 2000 को बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमे बैंड-बाजे, बड़ी संख्या में जयपुर से पधारे हुए भाई-बहनों के साथ-साथ ग्रामवासी, स्कूल के छात्र-छात्राएं, महिलाएं आदि सम्मिलित हुए। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में महत्तरा सा जी म.सा को कामली बोहराकर श्री संघ की ओर से अभिनन्दन किया गया। श्री सुमति जिन श्राविका संघ एवं शंखेश्वर महिला मंडल की ओर से स्वागत गीत प्रस्तुत किये गये। बरखेड़ा ग्राम के ही छात्र-छात्राओं ने भी स्वागत गीत प्रस्तुत किए तथा श्री गौरीशंकर शर्मा ने ग्रामवासियों की ओर से स्वागत भाषण देकर सभी का मन मोह लिया। आज के आयोजन में नाश्ता एवं नवकारसी का लाभ श्री मोतीचंद जी माणक चंद जी नवरतन मल जी बैद परिवार द्वारा लिया गया जिनका भी माल्यार्पण कर बहुमान किया गया। साथ ही श्री शीतलप्रसाद जी चाकसू वालों का भी माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। सा. श्री कुसुमप्रभा श्री जी म.सा. एवं महत्तरा सा. जी म.सा. ने भी सभा को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर सामूहिक आयंबिल कराने का लाभ श्री मोतीलाल जी भडकतिया परिवार द्वारा एवं श्री पार्श्व पंचकल्याणक पूजा पढ़ाने का लाभ एक सद्गृहस्थ हस्ते श्री उमरावमलजी पालेचा द्वारा लिया गया। यात्रियों को बरखेडा ले जाने के लिए दो बसों की व्यवस्था श्री संघ की तरफ से की गयी।

आचार्य श्री दर्शनरत्नसूरीश्वरजी म सा का शुभागमन

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय रामचन्द्र सूरीश्वर जी म सा के समुदायवर्ती आ श्रीमद् विजय दर्शनरत्नसूरीश्वर जी म सा आदि ठाणा-4 का दिल्ली मे चातुर्मास करने हेतु पधारते हुए जयपुर मे शुभागमन हुआ। आपके साथ ही साध्वी श्री विश्वप्रज्ञा श्री जी म सा आदि ठाणा-4 का भी शुभागमन हुआ।

दि 16 मई को आराधना भवन सोडाला, 17 5 को रत्नापुरी जैन मदिर मे तथा 18 5 को आप स्टेशन मदिर तथा हीराभाई चौधरी के निवास स्थान पर पधारे। दि 19 मई 2000 को भव्य समैया एव जुलूस के साथ आपका श्री आत्मानन्द जन सभा भवन म शुभागमन हुआ। इस अवसर पर धर्म सभा का आयोजन किया गया जिसम सभी गुरु भगवता का अभिनदन किया गया।

दि 22 5 को आप श्री महावीर भवन आदर्श नगर 23 5 को श्री राजमल जी सिघी के सेठी कॉलोनी स्थित निवास स्थान पर पधारे जहा पर आपके प्रवचन हुए एव सघभक्ति की गई। दि 24 5 को श्री कुशलराज जी सिघवी के निवास स्थान पर पगलिया-नवकारसी करने के पश्चात आप श्री महावीर साधना केन्द्र, जवाहर नगर पधारे तथा 25 5 को श्री शखेश्वरम पार्श्वनाथ मदिर, मालवीय नगर पधारे और दोनो ही स्थानो पर आपके प्रवचन हुए। दि 26 5 को श्री पुष्पकुमारजी बुरड के निवास स्थान वसुन्धरा कॉलोनी, मनवाजी का बाग मे मोतीलाल जी भडकतिया एव श्री दिनेशकुमार जी राकेश कुमार जी मोहनोत आदि के यहा पर पगलिया करत हुए वापस श्री आत्मानद जन सभा भवन पधारे। दि 27 से 29 तक मुनि श्री भावशरत्न विजय जी म सा ने अट्ठम की तपस्या की तथा दि 30 5 को आपने जयपुर से विहार किया इससे पुव धर्मसभा म आपको भावभीनी विदाई दी गई।

बरखेडा तीर्थ की प्रतिष्ठा

इस श्रीसघ के लिए यह अत्यन्त सतोष, गौरव और गरिमा का विषय रहा कि इस सघ क अन्तगत सचालित बरखेड़ा तीर्थ का जीर्णोद्धार कराकर आमूलचूल रूप से पुननिर्माण कर विशाल शिखरबद्ध जिनालय बनाने का जो बीडा उठाया गया था वह लगभग पूर्णता की ओर अग्रसर ह।

आत्म-वल्लभ-समुद्र सूरीश्वर जी म सा की यशस्वी पाट परम्परा पर विराजित गच्छाधिपति आ श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म सा के शुभाशीर्वाद, आ श्रीमद्विजय नित्यानद सूरीश्वर जी म सा के मार्गदर्शन एव महत्तरा सा सुमगला श्री जी म सा की प्रेरणा एव निश्रा मे दि 29 11 95 को भूमि पूजन एव दि 1 12 95 को शिला स्थापनाओ से प्रारम्भ हुआ निर्माण कार्य तीव्र गति से चलते हुए लगभग चार वर्ष के समय मे ही पूर्णता की ओर अग्रसर हो गया।

शिखर एव गर्भ गृह के निर्माणोपरात आचार्यश्रीमद् विजय नित्यानदसूरीश्वरजी म सा की शुभ निश्रा मे दि 16 2 99 को मडोवर पर पदम शिलाओ की स्थापना एव दि 29 4 99 को मूल नायक भगवान का गर्भगृह मे प्रवेश हो गया।

आगामी मुहूर्त पर अंजनशलाका-प्रतिष्ठा का कार्य भी आपकी ही पावन निश्रा में सम्पन्न कराने हेतु चातुर्मास हेतु खोड ग्राम में विराजित शांतिदूत आचार्य भगवन्त की सेवा में दि. 19 9.99 को बस लेकर गये एवं तदनन्तर दि. 20.11.99 को भी वहीं पर पुनः उपस्थित होकर मुहूर्त प्रदान करने की विनती की गई। आपने भी कृपा पूर्वक जाजम का मुहूर्त दि. 15.12.99 एवं प्रतिष्ठा का मुहूर्त दि. 24 फरवरी 2000 प्रदान किया और आपके निर्देशानुसार अंजनशलाका, प्रतिष्ठा की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई। महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. एवं सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.सा. एवं सा. श्री हर्षप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दि. 15.12.99 को श्री आत्मानंद जैन सभा भवन में जाजम बिछाकर चढावों का शुभारंभ किया गया।

दि. 26.12.99 को समाज के गणमान्य सदस्यों की बैठक बुलाकर प्रतिष्ठा की व्यवस्थाओं हेतु विचार विमर्श किया गया तदनन्तर अलग-अलग समितियों का गठन कर दायित्व सौंपे गये।

जनवरी में मेडता तीर्थ पर नवनिर्मित जिनालय की प्रतिष्ठा सम्पन्न कराकर एवं मार्ग में अन्य स्थानों पर भी प्रतिष्ठा आदि के कार्य सम्पन्न कराते हुए शांतिदूत आचार्यभगवन्त आदि ठाणा जयपुर पधारे। माह सुदी 13 संवत 2056 गुरुवार दि. 17.2.2000 को शांतिदूत आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीश्वर जी म.सा., ज्ञान [illegible] प्रवर्त्तक श्री जयानंदविजय जी म.सा., मुनिराज श्री जयकीर्ति विजय जी म.सा, मुनिराज श्री दिव्यानंदविजय जी म सा. आदि ठाणा-4 एवं आचार्यभगवंत श्रीमद् विजय अरिहंत सिद्धसूरीश्वर जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिवर्य श्री मणिप्रभ विजय जी म.सा. का मंगल प्रवेश बरखेड़ा ग्राम में हुआ।

साथ ही महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा., सा. श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री पूर्णप्रज्ञा श्री जी म.सा., सा श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म.सा. आदि ठाणा जिनकी जिनालय निर्माण में सक्रिय भागीदारी एव मार्गदर्शन रहा था, के साथ सा श्री सुमंगलाश्री जी म.सा. की 19 शिष्या-प्रशिष्याओं सहित बरखेड़ा ग्राम में प्रवेश हुआ। साथ ही विगत चातुर्मास काल में विराजित सा. श्री हर्षप्रभा श्री जी, सा. मृदुरसा श्री जी म सा आदि ठाणा-8 का भी बरखेडा ग्राम में प्रवेश हुआ।

आप सभी के शुभागमन के साथ ही अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्यक्रमों का शुभारंभ हो गया। भारतभर में प्रसिद्ध [illegible] क्रियाकारक पूना निवासी श्री भीखूभाई कटारिया के मार्गदर्शन में अंजनशलाका प्रतिष्ठा के अनुष्ठान प्रारंभ हुए। श्रीमान धनरूपमल जी नागोरी एवं श्री ज्ञानचंद जी भंडारी ने भी अनुष्ठान सम्पन्न कराने में भरपूर सहयोग प्रदान कर अपनी भागीदारी निभाई।

दि. 17, 18 व 19 को [illegible] पढाई गई तथा 9 दिवसीय आयोजना में [illegible] नाश्ता, सुबह एवं शाम की नवकारसी [illegible] लाभ विविध भक्तिकर्ताओं द्वारा [illegible] जिनका विवरण संलग्न परिशिष्ट में [illegible]

आचार्य भगवन्त की पावन निश्रा मे दि 17 फरवरी को ही 'श्री विजय वल्लभ भोजनशाला' का उद्घाटन श्री विशनमल जी, विमलचन्दजी, राकेश कुमार, अनूपचन्द, सिद्धार्थकुमार, रिषभकुमार बच्छावत परिवार, नागोर-हाल दिल्ली के कर कमलो से एव नवनिर्मित 'माणिभद्र भवन' का भी उद्घाटन श्री हीराभाई चौधरी के करकमलो से सम्पन्न हुआ। दि 20 फरवरी 2000 को पचकल्याणक की उज्वणि का शुभारभ हुआ।

इस महामहोत्सव हेतु विशाल रगमण्डप का निर्माण कर सजाया गया था। जिसका नाम कम्पिल नगरी दिया गया। कम्पिल नगरी के उद्घाटन का लाभ श्री बाबूलाल जी तरसेम कुमार जी पारख परिवार द्वारा लिया गया। पचकल्याणक मे विविध पात्रो की भूमिका यथा पभूजी क मुनिम वहुमानकर्ता, माता-पिता, इन्द्र-इद्राणी बनने का लाभ चढावे से तथा राज परिवार एव भगवान के परिवार के सदस्य बनने का लाभ नकरे से सघ के गणमान्य परिवारो द्वारा लिया गया जिनका विवरण सलग्न परिशिष्ट मे दिया गया है। पत्रिका मे जय जिनेन्द्र लिखाने का सौभाग्य श्री मोतीचदजी माणक चदजी वेद परिवार द्वारा एव फले चूदडी का लाभ श्री बोहरीलालजी पवनबाई खिवसरा परिवार द्वारा लिया गया।

दि 23 फरवरी 2000 को भगवान के दीक्षाकल्याणक का भव्य वरघोडा निकाला गया जिसमे हाथी-घोडे, बड-बाजे, भगवान एव उनके परिजनो के पात्रो के रथ, चतुर्विद सघ सहित बड़ी सख्या मे ग्रामवासी भी सम्मिलित हुए। वरघोडा के पश्चात् दूसरे दिन सम्पन्न हाने वाली प्रतिष्ठा मे तीर्थाधिपति, प्राचीन-नवीन सभी जिनबिम्बो, ध्वजा, स्वर्णकलश, रग-मडप पर कलश आदि के चढावे बुलाये गये। मूलनायक भगवान को विराजमान कराने का लाभ श्रीमती उमरावकवर ध प श्री सरदारमल जी एव पुत्र श्री कुशलकुमार जी लूणावत परिवार द्वारा, ध्वजा चढाने का लाभ श्री नरेश कुमार जी दिनश कुमारजी राकेश कुमार जी मोहणोत परिवार द्वारा लिया गया। इस सम्बन्ध मे महासमिति द्वारा यह भी निर्णय लिया गया है कि प्रतिवर्ष सम्पन्न होने वाले वार्षिकोत्सव म ध्वजा चढाने का लाभ इसी परिवार को प्राप्त होता रहेगा। वार्षिकोत्सव क अवसर पर यदि साधर्मिक वात्सल्य का लाभ भी मोहणोत परिवार लेना चाहेगे तो उन्हे प्राथमिकता दी जावेगी। स्वर्ण कलश चढाने का लाभ श्री मोतीलाल जी अनिल कुमारजी सुनिल कुमारजी सजय कुमार जी भड़कतिया परिवार द्वारा एव रगमडप पर कलश चढाने का लाभ श्री सम्पत राज जी चद्रप्रकाश जी सुरेश कुमार जी पगारिया परिवार जोधपुर द्वारा लिया गया। इसी रात्रि को शुभ मुहूर्त मे अजनशलाका का विधान शातिदूत आचार्य भगवत द्वारा सम्पन्न हुआ।

दि 24 फरवरी 2000 को शुभ मुहूर्त मे तीर्थाधिपति सहित समस्त प्रतिमाओ का बहुत ही हर्षेल्लासपूर्ण वातावरण मे गादीनशीन किया गया। इस अवसर पर हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा करने एव प्रतिष्ठा के उपरात वृहद् शाति स्तोत्र पूजा पढाई गई जिसका लाभ भी श्री हीराभाई

मंगलचंद जी चौधरी परिवार द्वारा लिया गया।

तदनन्तर अभिनंदन एवं स्वागत समारोह का आयोजन हुआ। अपनी पावन निश्रा में अंजनशलाका-प्रतिष्ठा का भव्यातिभव्य एव चिरस्मरणीय आयोजन को सम्पन्न कराने के उपलक्ष में शांतिदूत आचार्यभगवन्त सहित सभी साधु-साध्वीवृंद को श्री संघ की ओर से कामलियाँ बोहराकर अभिनंदन किया गया एवं इसी प्रकार महत्तरा सा. जी म.सा. को भी श्रीसंघ की ओर से कामली बोहराकर अभिनंदन एवं आभार व्यक्त किया गया। श्रीसंघ की ओर से कामली वोहराने का लाभ चढावे से श्री बाबूलाल जी तररोम कुमार जी पारख परिवार द्वारा लिया गया। दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर, अजमेर, गंगानगर, पीलीबंगा, टोंक, किशनगढ, मेडता, कुचेरा, नागौर, जोधपुर आदि स्थानों के विविध संघों के अध्यक्षों, बाहर से पधारे हुए विशिष्ट अतिथियों जिनमें मुख्य रूप से श्री श्रेणिक भाई-अध्यक्ष श्री आनंदजी कल्याण जी ट्रस्ट, श्री पारसमलजी भंसाली अध्यक्ष श्री नाकोडा तीर्थ, श्री हेमंत भाई सदस्य श्री शंखेश्वर तीर्थ, [illegible] तीर्थ एवं आनंद जी कल्याणजी ट्रस्ट, श्री [illegible]चन्दजी भामू अध्यक्ष श्री उत्तरी भारत आत्मानंद जैन महासभा, श्री वीरचंदजी जैन [illegible] रूप नगर, दिल्ली, श्री राजकुमारजी जैन [illegible] हस्तिनापुर तीर्थ आदि उपस्थित सभी [illegible] अतिथियों को साफा पहनाकर एवं स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत किया गया।

[illegible] जी सा. जैन अध्यक्ष श्री [illegible] मंदिर [illegible] एवं श्री माणकचन्द जी नाहर, अध्यक्ष मेडता तीर्थ ट्रस्ट भी पधारने वाले थे लेकिन अस्वस्थता के कारण उपस्थित नही हो सके आपके शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। इसी अवसर पर पधारी हुई श्रीमती हंसाबेन अध्यक्षा महिलामंडल, अहमदाबाद को भी चूंदडी ओढाकर एवं स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत किया गया।

इसी प्रकार इस अवसर पर अंजनशलाका प्रतिष्ठा में विविध चढावे लेने वाले, लाभार्थियों, श्री आत्मानंद जैन सेवक मंडल एव श्री सुमतिजिन श्राविका संघ की अध्यक्षा, विभिन्न समितियों के संयोजकों तथा सक्रिय सहयोग प्रदानकर्ताओं का भी साफा, चूंदडी, स्मृति चिह्न एवं वरखेडा तीर्थ की प्रतिष्ठा के स्मृतिस्वरूप बनाये गये चांदी के सिक्के आदि भेंट कर अभिनदंन किया गया। दि. 5 मार्च 2000 को भी इसी उपलक्ष में श्री आत्मानंद जैन सभा भवन जयपुर में सामूहिक भोज का आयोजन किया गया जिसमें शेष रहे महानुभावों का अभिनंदन किया गया।

इसी अवसर पर [illegible] भगवन्त के निर्देश एवं शांतिदूत आ. भगवन्त की घोषणानुसार महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म.सा. को 'वरखेडा तीर्थ [illegible]' की [illegible] से विभूषित किया गया।

इसी प्रकार [illegible] अंजनशलाका प्रतिष्ठा [illegible] चुनौतीपूर्ण कार्यों [illegible] [illegible]

श्री नित्यानद सूरीश्वर जी म सा के चातुर्मासिक प्रवेश,

आदि अवसरो पर सघ के प्रतिनिधिमडल उपस्थित हुए।

साधारण सभा की वैठक

सघ के विधान की धारा-9 की अनुपालना मे दि 21 नवम्बर 99 रविवार को साधारण सभा की वेठक बुलाई गई। इस बैठक मे सघ के अकेक्षित आय-व्यय विवरण 1998-99 का अनुमादन, सघ की चल रही विविध गतिविधियो का अनुमोदन, प्रतिष्ठा महोत्सव पर विचार आदि विषयो पर विचार कर सभी का अनुमोदन करते हुए हार्दिक प्रसन्नता और सतोष व्यक्त किया गया।

मेडता तीर्थ ट्रस्ट मे प्रतिनिधि

श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मेडता रोड के ट्रस्टी मडल मे श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणावत एव श्री मोतीचद जी वेद के नाम प्रस्तावित किये गये जिन्हे ट्रस्टीमडल मे सम्मिलित किया गया है।

शोकाभिव्यक्ति

सभी प्रकार के सुखद अवसरो के साथ सताप एव वियोग के अवसर भी उपस्थित हुए-

1 साध्वी श्री शुभोदया श्री जी म सा आदि ठाणा के जयपुर से आगरा विहार करते हुए मार्ग मे दि 4 जनवरी 2000 को प्रात ट्रक से हुई दुर्घटना के कारण साध्वी श्री विनययशा श्री जी म सा का देवलोक गमन हुआ।

2 सघ के स्तभ एव अनेक वर्षो तक सघ मत्री एव उपाध्यक्ष पद पर रहे हुए श्रीमान् हीराचद जी सा वेद का दि 8 मार्च 2000 को रुग्णता के पश्चात् देहावसान हो गया। इस दुखद अवसर पर समाचार पत्रो मे शोकाभिव्यक्ति देकर एव सघ की साधारण सभा बुलाकर शोक प्रस्ताव पारित कर आपको श्रद्धाजलियॉ अर्पित की गई। पारित शोक प्रस्ताव को पृथक से प्रकाशित किया जा रहा हे।

3 उपरोक्त के अतिरिक्त दि 13 11 99 को श्रीमती शातावाई सिघवी।

4 दि 3 12 99 को श्री उम्मेदमल जी शाह।

5 दि 14 1 2000 को श्री पारसमल जी कटारिया।

6 दि 19 2 2000 को श्रीमती रतन देवी ध प श्री हीराचदजी वैद।

7 दि 22 2 2000 को श्रीमती इन्दरकुमारी जी डागा ध प स्व श्री पदमचदजी डागा।

8 दि 27 4 2000 को धनराज जी भसाली।

9 श्रीमती निर्मला देवी ध प श्री दीपचन्द जी चौरडिया एव

10 दि 7 8 2000 श्री प्रकाशमल जी भसाली।

का देहावसान हुआ। आप सभी के देहावसान से सघ को अपार क्षति हुई है। जिनेश्वर देव सभी की आत्मा को शाति प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

स्थायी गतिविधियाँ

इस प्रकार वर्षभर मे हुई कतिपय

उल्लेखनीय घटनाओं में से कुछ एक का उल्लेख ही ऊपर किया जा सका है। अब मैं संघ की स्थायी गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय

इस जिनालय की गतिविधियाँ पूर्व मंदिर मंत्री श्री खेमराज जी पालरेचा की देखरेख में सुचारू रूप से संचालित होती रही है। गर्भगृह में छत पर चित्रकारी का कार्य पूर्ण हो गया लेकिन शेष रहा कार्य इस वर्ष पूर्ण कराने का प्रयास किया जावेगा।

इस वर्ष ज्येष्ठ सुदी 10 रविवार दि. 11 जून 2000 को जिनालय का वार्षिकोत्सव उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। ध्वजा चढाने का लाभ श्री मोतीचंदजी बैद परिवार द्वारा लिया गया।

जिनालय में 8,56,600/-रु. की आय तथा रु. 1,82,808/- का व्यय हुआ है। अष्टप्रकारी पूजा की सामग्री भेंट करने वालों को भी विगत पर्यूषण में पर्ची निकालकर लाभ दिया गया था जिनकी नामावली पृथक से दी गयी है।

पूर्ववत विगत वर्ष भी भादवा सुदी 11 को आचार्य श्री हीरसूरीश्वर जी म.सा. की जयन्ती के उपलक्ष में तथा इस वर्ष ज्येष्ठ सुदी 8 को आचार्य श्री विजयानंद सूरीश्वर जी म.सा. की जयन्ती के उपलक्ष में श्री बद्री प्रसाद जी आशीष कुमार जी जैन परिवार की ओर से पूजाएं पढाई गई।

18 वर्ष पूर्व आचार्य श्रीमद् विजय [illegible]सूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा से वाद्य यंत्र [illegible] अष्टप्रकारी पूजा सामग्री के साथ सामूहिक [illegible] से पढाई जा रही दैनिक स्नात्र पूजा निरन्तर जारी रही है। इस व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने में श्री चिमनलाल मेहता एवं श्रीमती रंजना बेन मेहता का सहयोग उल्लेखनीय रहा है।

नवनिर्वाचन के पश्चात् श्री नरेन्द्र कुमार जी कोचर द्वारा मंदिर मंत्री का दायित्व ग्रहण किया गया है।

श्री सीमधंर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी

इस जिनालय की व्यवस्था भी पूर्व संयोजक श्री मोतीचंद जी बैद के संयोजकत्व में वर्षभर सुचारू रूप से संचालित होती रही है। जिनालय का वार्षिकोत्सव मिगसर बदी 12 दि. 4 दिसम्बर 99 शनिवार को धूमधाम से मनाया गया। ध्वजा चढाने का लाभ पूर्ववत् डा. भागचंदजी छाजेड परिवार ने प्राप्त किया। साधर्मिक वात्सल्य चिट्ठे से सम्पन्न हुआ।

इस जिनालय के अन्तर्गत 28,632 45 की आय तथा 47,724/-रु का व्यय हुआ है। नवनिर्वाचित महासमिति में श्री कुशलराज जी सिंघवी ने इस जिनालय के संयोजक का दायित्व ग्रहण किया है और उनके द्वारा [illegible] प्रस्तावानुसार जीर्णोद्धार आदि के कार्य इस वर्ष करवाये जावेंगे।

श्री ऋषभदेव स्वामी का तीर्थ [illegible]

इस तीर्थ के जीर्णोद्धार-निर्माण का कार्य फरवरी 2000 में सम्पन्न हुई अञ्जनशलाका-प्रतिष्ठा के बारे में पूर्व में [illegible] पृथक से विस्तारपूर्वक [illegible] गया है। जिनालय के निर्माण का कार्य अभी भी [illegible] है और आशा है कि [illegible] शीघ्र ही [illegible]

पूर्ण हो जायेगा।

पूर्व मे दो मजिले आवासगृह का निर्माण कराया गया था जिसका नामकरण 'श्री हीरसूरी भवन' किया गया है। एक आर आवास गृह जिसमे एक वडा हाल एव दो कमरे बनाये गये ह, का नामकरण 'श्री माणिभद्र भवन' रखा गया ह। हाल का निर्माण श्री हीराभाई मगलचद जी चोधरी परिवार एक कमरा श्रीमती रतनदेवी मूथा एव श्रीमती लाड वाई ढढ्ढा के सोजन्य से तथा एक कमरा श्री रतनचद जी सिघी परिवार के सौजन्य से कराया गया हे। इस हाल के बनने से सभा, प्रवचन विश्रामगृह आदि विविध कार्या के लिए वहुउपयोगी सुविधा उपलव्ध हो गयी ह। भोजनशाला भी नियमित रूप से चल रही ह जिसमे यात्रियो के लिए भोजन, नाश्ता आदि की समुचित व्यवस्था हे। श्री पूनमचद भाई नवीनचद शाह द्वारा वाटर कूलर सहित जलगृह का निर्माण कराने से न केवल यात्रियो अपितु स्कूल के छात्रो एव ग्रामवासियो को भी पीने का शुद्ध ठडा पानी उपलव्ध हो रहा हे। तीर्थ की पेडी का उद्घाटन श्री वावूलाल जी सुभाष चदजी पारख के करकमलो से प्रतिष्ठा के अवसर पर सम्पन्न हो गया था।

इस वर्ष बरखेडा तीर्थ उद्धारिका महत्तरा सा श्री सुमगला श्री जी, सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म सा आदि ठाणा-7 से चातुर्मास कर रही हे दि 13 जुलाई 2000 को आपका वहुत ही धूमधाम से चातुमार्सिक प्रवेश हुआ था जिसका विवरण ऊपर दिया जा चुका हे। आपके इस चातुर्मास काल मे तीर्थ की यात्रार्थ एव पूज्य साध्वीमडल के दर्शनार्थ आने वाले सभी भाइ वहनो के आवास, नाश्ता, भोजन आदि की नि शुल्क व्यवस्था रखी गयी हे जिसके खर्चे की पूर्ति बरखेडा साधारण (चातुर्मास) नाम से सीगा स्थापित कर चिट्ठा कराया जा रहा ह।

चारो ओर वाउड्री वाल को एगल आयरन लगाकर सुरक्षित कर दिया गया हे। श्री गुलावचदजी सिघी के सोजन्य से वोरिग वन जान से जल की निरन्तर उपलव्धता ह। श्री शाकत अली भाई मकराना द्वारा जनरेटर सेट भेट किया गया है तथा टेलीफोन की सुविधा भी उपलव्ध हा गयी हे।

प्रतिदिन की अष्टप्रकारी पूजा हतु चढावा बुलाया जाता ह। अष्टप्रकारी पूजा म पत्यक सामग्री मे यदि पाच मन से कम का चढावा होता हे तो कम से कम पाच मन के चढावे का लाभ निम्नाकित महानुभावा को अप्रल 2000 से एक वर्ष के लिए दिया गया है

1 पक्षाल-श्री कुशलराजजी सिघवी
2 वरास-श्री वावूलालजी तरसेमकुमारजी पारख
3 केसर-श्री उमरावमलजी पालेचा
4 पुष्प-श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमारजी लुनावत
5 मुकुट-श्री हीराभाई मगलचद जी चोधरी
6 आरती (प्रात)-श्री नवीनचद जी शाह
7 मगलदीवा (प्रात) श्री सुरेन्द्रकुमारजी ओसवाल
8 आरती (साय)-श्री दानसिह जी कर्नावट
9 मगलदीवा(साय)- श्रीमोतीचदजी वद

वर्ष भर की अखड जोत का लाभ श्री महावीर चद जी मेहता (जालोर वालो) द्वारा लिया गया। भोजनशाला को आर्थिक रूप से सुदृढ करने हेतु

महत्तरा सा. जी म.सा. की प्रेरणा एवं मार्ग निर्देशानुसार एक मिति (एक समय) का नकरा 2100/- रु. निर्धारित किया गया है। यह समस्त राशि स्थायी कोष में जमा रहेगी जिसके व्याज का उपयोग भोजनशाला की व्यवस्था के लिए किया जायेगा। अभी तक 95 मितियों की राशि प्राप्त हो चुकी है जिसकी धनराशि सावधि जमा (FD) में जमा करा दी गयी है।

जीर्णोद्धारान्तर्गत 55,32,061/- की आय तथा 82,85,475/- का व्यय हुआ है। प्राप्त योगदान में आनंदजी कल्याण जी पेढी से 5,00,000/-रु., श्री शंखेश्वर जी तीर्थ पेढी से 5,00,000/-रु. का योगदान तथा आनंदजी कल्याण जी ट्रस्ट से 7,50,000/- रु. का एक वर्ष के लिए प्राप्त ऋण विशेष उल्लेखनीय है। शेष राशि इस श्री संघ की आय एवं सावधि जमा में से प्राप्त कर समायोजन किया गया है।

इस तीर्थक्षेत्र में एक और आठ कमरों का आवासगृह भूमि सहित अपनी मातुश्री इन्दर कुमारी डागा की स्मृति में बनाकर देने का आश्वासन श्रीमान महेन्द्रसिंह जी श्री श्रीचंद जी सा. डागा परिवार द्वारा दिया गया है। भूमि की उपलब्धता होते ही यह कार्य भी शीघ्र ही प्रारंभ कर दिया जायेगा।

हर माह के अंतिम रविवार अथवा पूर्णमासी को एक बस से यात्रियों को वरखेडा तीर्थ ले जाकर वहां पर सामूहिक सेवा, पूजा, स्नात्र पूजा आदि करने के पश्चात यात्रियों की [illegible] भक्ति एवं साधर्मिक वात्सल्य कराने की [illegible] व्यवस्था पिछले वर्ष प्रारंभ की गयी थी वह निरन्तर जारी है। प्रतिमाह बस ले जाने वाले लाभार्थियों का विवरण पृथक से दिया गया है।

वरखेडा तीर्थ की व्यवस्था का संचालित करने हेतु महासमिति द्वारा निम्नांकित सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया है :

1. श्री हीराभाई चौधरी
2. श्री नवीन चंद शाह
3 श्री मोतीलाल भडकतिया
4. श्री राकेश कुमार मोहणोत
5. श्री दानसिंह कर्णावट
6. श्री नरेन्द्र कुमार कोचर
7. श्री राजेन्द्र कुमार लुणावत
8. श्री महेन्द्र कुमार दोसी
9. श्री तरसेम कुमार जैन
10. श्री चिमनलाल मेहता
11. श्री ज्ञानचंद टुंकलिया, स्थानीय संयोजक
12. श्री उमरावमल पालेचा, संयोजक वरखेडा तीर्थ।

श्री शांतिनाथ स्वामी जिनालय, चंदलाई

इस संघ के अन्तर्गत संचालित इस जिनालय की व्यवस्था भी [illegible] श्री राजेन्द्रकुमार जी लूणावत एवं [illegible] संयोजकत्व में संचालित हो रही है। जिनालय का वार्षिक उत्सव [illegible] 28 11.99 रविवार को [illegible] गया। इस बार की ध्वजा [illegible] भंवरलालजी [illegible] लिया गया। [illegible]

अन्तर्गत 1650 25 रु की आय तथा 9232 रु का व्यय हुआ है ।

नये सयोजक श्री महेन्द्र कुमार दोसी द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावानुसार शीघ्र ही टूट-फूट, रगरोगन, निर्माण आदि कार्य कराये जायेगे ।

विजयानद विहार

जैसा कि पूर्व विवरण मे विजयानद विहार के निर्माण के बारे म जानकारी प्रस्तुत की गयी थी, भवन निर्माण का कार्य प्रारभ कर प्रवचन हाल, मेजाइन तथा उसके ऊपर दो मजिल म हॉल, कमरे आदि का निर्माण कार्य भी पूरा होकर अब मार्बल जडाई, फिनिशिग, सेनेट्री एव लाईट फिटिग आदि का कार्य चल रहा ह । प्रस्तावित नक्शे के अनुसार पाच मजिल का निर्माण होना था लेकिन राजकीय बाधाआ के कारण अभी चार मजिले ही चढाई जा सकी हे शेष कार्य के लिए भी प्रयत्नशील ह ।

श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणावत पूर्व मे भी निर्माण सयोजक थे ओर इस बार भी उन्होने ही यह दायित्व ग्रहण किया है ।

विगत वर्ष मे इसके अन्तर्गत रुपये 19,42,767 रु की आय तथा 17,88,929 का व्यय हुआ है । वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात भी काफी धनराशि लगाई जा चुकी है । आगे का निर्माणकार्य भी अबाध गति से जारी है ।

श्री जेन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय

सघ के दोनो ही उपाश्रय (एक) श्री आत्मानद जैन सभा भवन एव (दो) श्री ऋषभदेव स्वामी जिनालय, मारूजी का चौक परिसर मे स्थित उपाश्रय की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सचालित होती रही हे ।

श्री अभय कुमार जी चोरडिया उपाश्रय मत्री पूर्व मे थे आर अब भी इसी पद पर आसीन हे ।

श्री वर्द्धमान आयविल शाला

इस श्री सघ के अन्तर्गत सचालित आयबिल शाला की व्यवस्था भी वर्षभर पूर्व आयबिलशाला मत्री श्री सुभाषचद जी छजलानी की देखरेख मे सुचारू रुप से सचालित होती रही हे । इस सीगे मे 85,198 रु की आय तथा 47,622 रु का व्यय हुआ हे । आसोजी ओली कराने का लाभ एक सद्गृहस्थ द्वारा एव चत्र मास की ओली कराने का लाभ श्री हीराभाई मगलचद जी चोधरी परिवार द्वारा लिया गया ।

श्री जेन श्वेताम्बर भोजनशाला

इस भोजनशाला की व्यवस्था भी वर्षभर सुचारू रूप से सचालित होती रही ह । बाहर से आने वाले यात्रियो, स्थानीय महानुभावो को एक वार मे 10/-रु तथा टिफिन 15/- रु जसी अल्पराशि मे उपलब्ध कराने के उपरात भी यह सीगा टूट से मुक्त रहा है । बाहर से पधारे हुए अतिथियो की भक्ति की भी यहा नियमित रूप से व्यवस्था है ।

इस वर्ष 2,28,912 रु की आय तथा 2,27,264 रु का व्यय हुआ है ।

आयबिलशाला एव भोजनशाला की व्यवस्था पूर्व मे श्री सुभाषचद छजलानी की देखरख मे सचालित होती रही थी अब महासमिति के नवनिर्वाचन के पश्चात् श्री राजेन्द्र कुमार जी लुणावत को यह दायित्व सांपा गया है ।

श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मिक सेवा कोष

गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. की सद्प्रेरणा से सन 1991 में स्थापित इस कोष के अन्तर्गत रु. 23,623 रु. की आय तथा 35,414 रु. का व्यय हुआ है जिससे जरूरतमंदों को मासिक सहयोग छात्र-छात्राओं को स्कूल की फीस-पुस्तकें आदि तथा रुग्णों को दवाईयाँ आदि उपलब्ध कराई गयी हैं ।

महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर

महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्वी बनाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर आयोजित होने वाला महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन इस वर्ष भी 21 मई से 23 जून 2000 तक किया गया जिसमें विविध विषयों में प्रशिक्षण दिया गया । शिविर का समापन समारोह श्री हीराभाई चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि आर.सी. शाह कर सलाहकार थे। इस अवसर पर शिविर में प्रशिक्षण देने वाली बहनों तथा प्रशिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कार और पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया । शिविर संचालन पर कुल रुपया 19,480 का व्यय तथा रुपया 14,710 की फार्मों की बिक्री से आय हुई। शेष टूट रही राशि का समायोजन साधारण सीगे मे किया गया है । शिविर संचालिका सुश्री [illegible] बोथरा, व्याख्याता, श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर को उनकी निःस्वार्थ [illegible] के लिए साडी ओढाकर तथा स्मृति चिह्न भेंट कर बहुमान किया गया ।

साधारण खाता

सबसे अधिक व्यय साध्य इस सीगे के अन्तर्गत 5,10,530 रु. की आय तथा 4,96,391 रु. का व्यय हुआ है । व्यय के अन्तर्गत वेतन 83,032 रु., विद्युत 35,522 अन्य खर्च 1,30,272.50, वयावच्च पर रुपया 52,776/- माणिभद्र स्मारिका व प्रकाशन पर 48,143/- रु. का व्यय विशेष उल्लेखनीय रहा है। इस प्रकार यह सीगा भी टूट से मुक्त रहा है।

विगत मे श्री अभयकुमार जी [illegible] उपाश्रय मंत्री के अन्तर्गत यह सीगा संचालित था और आगे भी इन्ही पर यह दायित्व है ।

श्री ज्ञान खाता

इस सीगे के अन्तर्गत रु. 79,900 की आय तथा रु. 16,050 का व्यय हुआ है। [illegible] हुई साध्वी जी म.सा. की पढाई की व्यवस्था की गई तथा रु. 8,190 को पुस्तक प्रकाशन [illegible] दिये गये ।

श्री गुणवंतमल जी [illegible] के अन्तर्गत यह सीगा पूर्व में संचालित था और आगे भी इन्ही पर यह दायित्व है ।

सिलाई शाला एवं पुस्तकालय

धार्मिक पाठशाला में शिक्षा [illegible] वाले बच्चों का अभाव तथा सिलाई [illegible] प्रशिक्षित प्रशिक्षिका [illegible] गतिविधि [illegible] है ।

पुस्तकालय [illegible] है ।

परिशिष्ट

बरखेड़ा तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के मांगलिक अवसर पर उपस्थित साधु-साध्वीवृंद

(1) आचार्य श्री नित्यानद सूरीश्वर जी म सा
(2) प्रवर्तकप्रवर श्री जयानद विजय जी म सा
(3) मुनि श्री जयकीर्ति विजय जी म सा
(4) मुनिराज श्री दिव्यानद विजय जी म सा
(5) मुनिवर्य श्री मणिप्रभ विजय जी म सा

(1) महत्तरा सा श्री सुमगला श्री जी म सा
(2) सा श्री प्रफुल्लप्रभा श्री जी म
(3) सा श्री कुसुमप्रभा श्री जी म
(4) सा श्री स्वर्णप्रभा श्री जी म
(5) सा श्री चन्द्रयशा श्री जी म
(6) सा श्री अमृतप्रभा श्री जी म
(7) सा श्री पूर्णप्रज्ञा श्री जी म
(8) सा श्री रत्नशीला श्री जी म
(9) सा श्री पीयूषपूर्णा श्री जी म
(10) सा श्री सौम्यप्रभा श्री जी म
(11) सा श्री सयमरत्ना श्री जी म
(12) सा श्री सोम्यदर्शना श्री जी म
(13) सा श्री पुनीतयशा श्री जी म
(14) सा श्री पूर्णनदिता श्री जी म
(15) सा श्री सिद्धीदर्शिता श्री जी म
(16) सा श्री सिद्धप्रज्ञा श्री जी म
(17) सा श्री श्रुतदर्शिता श्री जी म
(18) सा श्री सवेगपूर्णा श्री जी म
(19) सा श्री प्रशातपूर्णा श्री जी म

(1) सा श्री हर्षप्रभा श्री जी म
(2) सा श्री मृदुरसा श्री जी म
(3) सा श्री त्रिलोक्यरसा श्री जी म
(4) सा श्री साहित्यरसा श्री जी म
(5) सा श्री क्षायिकरसा श्री जी म
(6) सा शुद्धात्मरसा श्री जी म
(7) सा श्री कर्त्तव्यरसा श्री जी म
(8) सा श्री चिन्मयरसा श्री जी म

बरखेडा तीर्थ की प्रतिष्ठा हेतु गठित समितियॉ

(1)	अर्थसग्रह समिति	श्री हीराभाई चौधरी
(2)	भोजन व्यवस्था	श्री दान सिह कर्नावट
(3)	आवास व्यवस्था	श्री प्रकाश मुणोत
(4)	यातायात व्यवस्था	श्री विजय कुमार सेठिया
(5)	पूजन सामग्री सग्रह	श्री राजेन्द्र कुमार लुणावत
(6)	मगल ग्रह	श्री खिमराज पालरेचा
(7)	पडाल सज्जा	श्री मोतीचद बैद
(8)	वैय्यावच्च	श्री नरेन्द्र कुमार लुणावत
(9)	पत्रिका मुद्रण एव प्रचार-प्रसार	श्री मोतीलाल भडकतिया
(10)	पूछताछ एव स्वागत कार्यालय	श्री सुरेन्द्र कुमार शाह
(11)	वरघोडा बैच बैनर स्मृति चिह्न सिक्के	श्री राकेश कुमार मोहणोत
(12)	सामग्री सग्रह एव अभिनदन समारोह	श्री हीराभाई चौधरी

वरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार कार्यक्रम के विशेष लाभार्थी

भूमि पूजन दि. 29.11.95

श्री उमरावमल जी हीराचंद जी मिलापचंद जी पालेचा, जयपुर

शिलास्थापना दि. 1.12.95

नंदा-श्री पूनमचंदभाई नगीनदास शाह

भद्रा-श्रीमती कमलाबेन भोगीलालजी शाह

जया-श्री शांतिभाई बच्चू भाई

रिक्ता-श्रीमती प्रभा बेन नवीनचंद शाह

अजिता-श्रीमती राजकुमारीजी पालावत

अपराजिता-श्री हीराभाई मंगलचंदजी चौधरी

शुक्ला-श्री लक्ष्मीचंद जी सुनीतकुमारजी भंसाली

सौभागिनी-श्री घीसूलाल जी माणकचंदजी मेहता

धरणशीला-श्रीबाबूलाल जी तरसेम कुमार पारख

श्री पदमशिला स्थापना दि. 16.2.97

पूर्व दिशा-श्री जतनमलजी राजेन्द्र कुमार लुनावत

पश्चिम दिशा-श्री सुमितजी सुनीता जैन

उत्तर दिशा-श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी

दक्षिण दिशा-श्री माणकचंदजी सतीश कुमार जैन

मुख्य पदमशिला-श्री खेतमलजी जैन

मंडोवर पर शिलास्थापना दि. 29.2.99

श्री हीराभाई मंगलचंद चौधरी

गर्भगृह में तीर्थंकरों का प्रवेश दि. 29.4.99

[illegible]

आवासगृहों का निर्माण

श्री हीरसूरी भवन

एक बडा एवं एक छोटा हाल-

श्री पतनमल जी नरेन्द्र कुमार जी लुणावत

एक हाल-

श्री मोहरीलालजी खिंवसरा,

एक कमरा-

श्री कपिल भाई शाह (जमीन भी पूर्व में इन्हीं द्वारा उपलब्ध कराई गयी थी)

एक कमरा-

श्री नेमिचंदजी खजांची, बीकानेर

श्री माणिभद्र भवन

हाल-

श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी

एक कमरा-

श्रीमती रतनदेवी मूथा एवं

श्रीमती लाडबाई ढढ्ढा

एक कमरा-

श्रीमती लाडबाई रतनचंदजी सिंघी

बोरिंग

श्री गुलाबमल जी नरेन्द्र महेन्द्र अरुण सिंघी

जलगृह

जलगृह वाटर कूलर के साथ-श्री पूनमचंद न. नगीनदास शाह

विजयवल्लभ भोजनशाला

भवननिर्माण सहयोगी-[illegible]

नूतन जिन बिम्व भरवाने वाले एव सभी जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाने वाले भाग्यशाली

तीर्थाधिपति भगवान श्री ऋषभदेव स्वामी

प्रतिष्ठा	श्रीमती उमराव कवर एव उनके पुत्र श्री कुशलकुमारजी लुणावत

श्री पुण्डरिक स्वामी

गोखला एव प्रतिमा भराई	श्री कल्याणमलजी कस्तूरमल जी शाह
प्रतिष्ठा	श्री पतनमलजी नरेन्द्र कुमार जी लुणावत

श्री सीमधर स्वामी

गोखला	श्री पतनमलजी नरेन्द्र कुमार जी लुणावत
प्रतिमा भराई	श्री भवरलाल जी चन्द्रप्रकाश जी बलाई, साजत सिटी, हाल पाली
प्रतिष्ठा	श्री पतनमलजी नरेन्द्र कुमार जी लुणावत

श्री शातिनाथ स्वामी

गोखला, प्रतिमा भराई एव प्रतिष्ठा	श्री दानसिह जी किशनसिह जी गणपत सिह जी राजेन्द्र सिह जी कर्नावट

श्री पार्श्वनाथ स्वामी

गोखला	श्री महेन्द्र जी श्रीपालजी महिपाल जी चौधरी सुपुत्र श्री हीराभाई चाधरी
प्रतिमा भराई	श्रीमती जीवन कुमारी ध प श्री हीराभाई चौधरी
प्रतिष्ठा	श्री हीराभाई मगलचद जी चोधरी (मगलचद ग्रुप)

श्री महावीर स्वामी

गोखला, प्रतिमा एव प्रतिष्ठा	श्री मेहता घीसूलाल जी पारसमल जी सुपुत्र माणक चद जी हुकम चद जी सुरेन्द्र कुमार जी पुत्र पौत्र श्री मूलचद जी मोती लाल जी मेहता पाली वाले

श्री पद्मप्रभु स्वामी

गोखला प्रतिमा भराई एव प्रतिष्ठा	श्री चुन्नीलालजी भूरमल जी मोहनलालजी रमेश कुमार जी किरण कुमार जी मितेश हिरल पुत्र पोत्र पपात्र श्री सरदारमल जी चत्तरभाण जी लाव चौहान, कोसेलाव

श्री विमलनाथ स्वामी

गोखला — तीन प्रतिमाओं के बडे गोखले में

प्रतिमा भराई (चढावे से) एवं प्रतिष्ठा — श्री नवीनचंद शाह

श्री नेमिनाथ स्वामी (प्राचीन प्रतिमा)

प्रतिष्ठा — श्री खेतमलजी पुनमिया

श्री चन्द्रप्रभू स्वामी (प्राचीन)

प्रतिष्ठा — श्री वोहरीलाल जी खिंवसरा

श्री सुविधिनाथ स्वामी (प्राचीन)

प्रतिष्ठा — श्री मोतीलालजी अनिलकुमार जी सुनिल कुमार जी संजय कुमार जी भडकतिय

श्री गुरुगौतम स्वामी

गोखला एवं प्रतिमा भराई — श्री बंसीलालजी देवीसिंह जी, शशिपालजी बीकानेर हाल अमृतसर

प्रतिष्ठा — श्री बाबूलाल जी अशोक कुमार जी पारख

श्री पद्मावती देवी

गोखला, प्रतिमा भराई एवं प्रतिष्ठा — श्रीमती पद्मावेन तरसेम कुमारजी पारख

श्री चक्रेश्वरी देवी (प्राचीन)

गोखला — श्रीमती सुनीला रानी जैन

प्रतिष्ठा — श्री हीराभाई मंगलचंदजी चौधरी

श्री माणिभद्र जी (प्राचीन)

गोखला एवं प्रतिष्ठा — श्री नरेश कुमार जी दिनेश कुमार जी राकेश कुमार जी मोहनोत

श्री भोमिया जी (प्रचीन)

गोखला — श्री भंवरलाल जी विजय राज जी मेहता

प्रतिष्ठा — श्री राजेन्द्र कुमार जी ... निर्मल-संगीता, दिनेश-पूर्णिमा लूणावत

श्री विजय वल्लभ गुरुदेव

गोखला, प्रतिमा एवं प्रतिष्ठा — श्री बाबूलाल तरसेम कुमार जी पारख

चरण पादुका–आचार्य श्री शातिसूरी जी (प्राचीन)

गोखला	श्री सजयकुमार-तृप्ति, सम्यक, सार्थक डागा सुपुत्र एव सुपौत्र श्री तेजकरणजी पुष्पादेवी डागा एव सुपोत्र प्रपोत्र श्री रूपचदजी मानकवर डागा, जयपुर
प्रतिष्ठा	श्री सुरेन्द्र कुमार जी लुणावत

श्री गुरुदेव के चरण

गोखला	श्री सजयकुमार-तृप्ति, सम्यक, सार्थक डागा सुपुत्र एव सुपोत्र श्री तेजकरणजी पुष्पादेवी डागा एव सुपोत्र प्रपोत्र श्री रूपचदजी मानकवर डागा, जयपुर
प्रतिष्ठा	श्री हीराभाई मगलचद जी चोधरी

मगल मूर्तियाँ

प्रासाद देवी, भराई	श्री शातिलालजी नरेश कुमार जी लिगा	
प्रतिष्ठा	श्री हीराभाई मगलचद जी चौधरी	
मगल मूर्ति (1)	भराई एव प्रतिष्ठा	श्री पारसमलजी मोहनलालजी सोहनलाल जी वोहरा, जोधपुर
मगल मूर्ति (2)	भराई एव प्रतिष्ठा	श्री मोहनलाल जी पन्नालाल जी चोपडा, साडेराव
मगल मूर्ति (3)	भराई एव प्रतिष्ठा	श्री ज्ञानचदजी टुकलिया, वरखेडा

ध्वजदड की स्थापना

श्री नरेश कुमार जी दिनेश कुमार जी राकेश कुमार जी मोहणोत

स्वर्ण कलश की स्थापना

श्री मोतीलाल जी अनिल कुमार जी सुनिल कुमार जी सजय कुमार जी भडकतिया

रग मडप पर कलश की स्थापना

श्री सम्पतराज जी चन्द्रप्रकाश जी सुरेशकुमार जी पगारिया, जोधपुर

प्राण प्रतिष्ठा मदिर मे

श्री वावूलालजी सुभापचद जी पारख

गुरुदेव को अजन हेतु वस्त्र वोहराना

श्री वावूलालजी सुभाषचद जी पारख

गुरुदेव को श्रीसघ की ओर से चढावे से कामली वोहराना

श्री वावूलालजी तरसेम कुमार जी पारख

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में विशिष्ट चढ़ावों का लाभ लेने वाले भाग्यशाली

प्रभुजी के मुनिम

श्री अभयमलजी, इन्दरमल, जीतमल, सौभागमल, सुरेन्द्र कुमार, अजय कुमार कुलदीप, अक्षित, रोनक शाह परिवार पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र-शाह कल्याणमलजी किस्तूरमलजी

बहुमानकर्त्ता

चौधरी हीराभाई भास्कर सुपुत्र जीतेन्द्र महेन्द्र भरत श्रीपाल रमेश कैलाश शैलेष महीपाल रणजीत चेतन सुपौत्र श्रेणिक श्रेयांस उदीत अंकीत रोहन अभिनव मोहित यश वीनीत ध्रुव पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री मंगलचन्दजी चौधरी (मंगलचंद ग्रुप)

प्रभुजी के माता-पिता

श्री पूनमचन्द भाई-रुकमणी वेन, प्रभावेन-नवीनचन्द, दर्शनावेन-जितेश कुमार वीनल समीर सीमा भावेश दीप्ति एकता शेरल श्रेय, ग्राम धानेरा हाल जयपुर

इन्द्र-इन्द्राणी

चौधरी हीराभाई भास्कर जीतेन्द्र महेन्द्र भरत श्रीपाल रमेश कैलाश शैलेष महीपाल रणजीत चेतन श्रेणीक श्रेयांस उदीत अंकित रोहन अभिनंव मोहित यश विनीत ध्रुव पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री मंगलचन्दजी चौधरी।

भुवा-भुरोसा

श्रीमती कमलावेन, श्री सुभाष भाई-प्रमिला, अंकित, अतिका शाह पुत्र-पौत्र श्री भोगीलाल जी शाह

मामा-मामी

श्री माणकचन्दजी-सरोजदेवी, संजय कुमार-अंजना, मनीष अनुष्का आकर्ष पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री बुधसिंहजी वेद

सास-ससुर

मुथा विजयराजजी लल्लूजी परिवार श्री समरथमलजी, मन्नालाल भंवरलाल पुत्रवधु कमलादेवी [illegible] पुत्री नगमदेवी शांतीदेवी पौत्र लखमीचंदमल दिनेशकुमार पृथ्वीराज अशोक कुमार अरविन्द कुमार [illegible] कुमार पौत्र वधु सूरजदेवी निर्मला देवी पुष्पादेवी अंजना देवी अरुणा देवी सुपौत्री लीलादेवी [illegible] [illegible] दीपक कुमार अर्पितकुमार प्रपौत्री अक्षिता अंजली देवी

नगर सेठ

[illegible]

[illegible]

सेनापति

श्री महावीर चन्द जी मुकेश कुमार मनोज कुमार रोहितकुमार मेहता पुत्र-पौत्र-प्रपोत्र श्री भीमराज जी मेहता खैरवा निवासी (जिला पाली)

राज ज्योतिपी

श्री चन्द्रकात भाई-सरोजबेन, चिमनभाई-रजनबेन, चम्पकलाल, सजय उमेश राजीव मीनाक्षी किरण कुसुम पिकी पुत्र-पोत्र-प्रपोत्र श्री जेठालालजी मेहता मोरवी - हाल जयपुर

राज मत्री

श्री हीराचन्दजी कमलादेवी, विजय-रूबी, कोमल अरिहत पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री इन्दरमलजी कोठारी जयपुर

कुल महत्तरा

श्रीमती राजकुमारी पालावत । श्री ज्ञानचन्द-चन्द्रकला, तिलकचन्द-पुष्पा, अरुण कुमार-शशि, सजीव-किटी, राजीव-वदना, राहुल-शिल्पा, सिद्धार्थ-रुचि, राजा इन्द्र सचेत यश कुणाल रक्षित पनप पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री शिखरचन्दजी पालावत, जयपुर

बहिन

श्री पूनमचन्द भाई-रुकमणीबेन, प्रभाबेन-नवीनचन्द, दर्शनाबेन-जितेश कुमार वीनल समीर सीमा भावेश दीप्ति एकता शेरल श्रेय, ग्राम धानेरा हाल जयपुर

प्रियवदा दासी

श्री पूनमचन्द भाई-रुकमणीबेन, प्रभाबेन-नवीनचन्द, दर्शनाबेन-जितेश कुमार वीनल समीर सीमा भावेश दीप्ति एकता शेरल श्रेय, ग्राम धानेरा हाल जयपुर

अजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव मे पूजाए पढवाने वाले भाग्यशाली

दि. 17.2.99

जल यात्रा विधान-कुभ स्थापना अखण्ड दीपक स्थापना

श्री मोतीचन्द जी-मधुकुमारी, पारसचन्द-मीनाक्षी, इन्दर-जूली, पलक दर्पण महक पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि-श्री बुधसिहजी बैद, जयपुर

जवारारोपण माणक स्थम्भारोपण-तोरण-वेदिका पूजन

श्री सरदारमलजी भागचन्द-कमलाबाई, प्रेमचन्द सुमेरचन्द रतनचन्द सुभाषचन्द विमलकुमार अजय कुमार, अनिल सजय विजय अजय मनीष राहुल अभय अकित कर्ण नमन अक्षय छाजेड, जयपुर

श्री पच कल्याणक पूजा

श्री बोहरीलाल जी मानमल खींवसरा, रानी वाले भीकीबाई, धीसीबाई-मेघराजजी, शातिदेवी, कान्ता-

भाषजी, जयवन्ती-रूपराजजी, मंजू-विमलचंदजी संतोष-संजयजी, शर्मिला-राकेशजी-पुत्र-पौत्री-त्री-दामाद। श्रेयार्थ मातुश्री स्व. श्रीमती फुलीबाई।

श्री माणीभद्रजी का हवन पूजन

। नरेश कुमार-सुरबाला, दिनेशकुमार-वरुणा, राकेश कुमार-विनीता, गौरव नेहा सुभांशु तुषार-ाल्पी अंकित रानूश्री पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि-श्री प्रकाशनारायणजी मोहनोत।

दि. 18.2.2000

क्षेत्रपाल, दसदिक्पाल, भैरव पूजन

ी भँवरलाल जी नवीन कुमार बसंत सोनू गांधी, जयपुर

सोलह विद्यादेवी पूजन, नवग्रह पूजन, अष्टमंगल पूजन

श्री मोहनलालजी सोहनलाल मदनलाल, सुरेश महेश देवेन्द्र राकेश अनिल सुनील संजय नरेश विपुल ुदेव अभिनव ऋषभ मिलेश विकास विशाल-पुत्रपौत्र श्री पारसमलजी बोहरा जालौर, हाल जोधपुर

श्री लघु सिद्धचक्र पूजन

श्री उम्मेदमलजी जयंतीलाल कान्तीलाल मोहनलाल प्रकाशचन्द प्रमोद कुमार भैरूलाल प्रफुल्ल कुमारपाल गौतम परेश मनीष-पुत्र-पौत्र श्री नरसालाल जी गुलाबचन्दजी तुलेचाबोहरा, शिवान्दी

श्री लघु वीसस्थानक पूजन

श्री धीसूलालजी पारसमल सुपुत्र माणकचन्द हुकम चन्द सुरेन्द्र कुमार मेहता पुत्र-पौत्र श्री मूलचन्द जी मोतीलाल जी मेहता पाली वाले

दि. 19.2.2000

श्री लघुनन्दावर्त पूजन

श्री मोतीलालजी-मनोहर देवी, गणेशमल-रजना, अनिल-शशी, सुनील-प्रमिला, संजय-मधु, अजय-अर्चना, कुणाल राहुल खुशबू वैभव मनीष सौरभ पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि-श्री किस्तूरमलजी भडकतिया, जयपुर

श्री देवीपट्ट पूजन

श्री सुनील कुमार राज, निर्मला देवी, सरिता, प्रिया भंसाली पुत्र-पौत्र श्री लक्ष्मीचन्दजी भंसाली, जयपुर

दि. 20.2.2000

कम्पिल नगरी का उद्घाटन

[illegible]
[illegible]

पंचकल्याणक की उजवणी का शुभारंभ

दि.20.2 2000

च्यवन कल्याणक

माता-पिता, इन्द्र-इन्द्राणि स्थापना विधि, धर्मगुरु पूजन, च्यवन कल्याणक विधि, स्वप्न दर्शन, स्वप्न फल कथन, शकस्तव पाठ, ज्योतिषी

दि. 21.2.2000

जन्म कल्याणक

जन्म कल्याणक विधान, छप्पन दिक्ककुमारियाँ का दिशाओ-विदिशाओ से आगमन, सोधर्मन्द्र का सिहासन कम्पायमान, हरिणगमैषी देव का आगमन, सुघोषा का घण्ट वादन, चौसठ इन्द्रो द्वारा पभुजी के अढीसो अभिषेक

दि. 22.2.2000

जन्मोत्सव

प्रियवदा दासी द्वारा जन्म बधाई, नामकरण, पाठशाला गमन, मामेरा, लग्न महोत्सव, राज्याभिषेक, राजतिलक, नवलोकान्तिक देवो द्वारा दीक्षा की विनती, कुल महत्तरा द्वारा उपदेश, मेहदी वितरण

जिनालय मे नूतन विम्व, कलश, दण्ड आदि के अट्ठारह अभिषेक, प्रासाद अभिषेक

श्री सम्पतलालजी-छोटी बाई, चन्द्रप्रकाश-इन्दुबाला, सुरेश कुमार-सतोष रक्षित चित्रल दीक्षित गोतम अकिता लता पुत्र-पोत्रादि श्री बोरीदासजी पगारिया, बिलावास-हाल जोधपुर

दि 23.2.2000

दीक्षा कल्याणक एव वरघोडा, प्रतिष्ठा के चढावे

रात्रि शुभ मुहूर्त मे

अधिवासना-अजनविधान, केवलज्ञान कल्याणक एव निर्वाण कल्याणक विधान, नूतन जिनबिबो, देव-देवी विम्बो पर 108 बार अभिषेक

दि. 24 2.2000

तोरण, प्रतिष्ठा, ध्वज दण्ड, ध्वजा रोहण, कलशादि स्थापना

धर्मसभा एव अभिनदन समारोह

विजय मुहूर्त मे बृहत् अष्टोत्तरी शाति स्नात्र

चौधरी हीराभाई भास्कर सुपुत्र जीतेन्द्र जीतेन्द्र महेन्द्र भरत श्रीपाल रमेश कैलाश शेलेष महीपाल रणजीत चेतन सुपौत्र श्रेणीक श्रेयास उदीत अकीत रोहन अभिनव मोहित यश वीनीत ध्रुव पुत्र-पौत्र-पपौत्र श्री मगलचन्दजी चौधरी (मगलचद ग्रुप)

दि.25.2.2000

द्वारोद्घाटन

भाग्यशाली कूपन विजेता श्रीमती लाडबाई शाह के करकमलों से

सत्तरभेदी पूजा

श्री पुष्पकुमार जी विनय कुमार अनिल कुमार अशोक कुमार, राकेश कुमार सुनील कुमार सुशील कुमार पुनिक लोकेश तरुण मंजू अंशुल प्राणिक सिद्धार्थ पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री पूनमचंदजी कन्हैयालाल जी बुरड़, जैसलमेर निवासी हाल जयपुर-दिल्ली

वरघोडा एवं प्रतिष्ठा के अवसर पर चढावे

चौवीसी लेकर रथ में बैठना-	श्री खेमराजजी देवीचद जी पालरेचा
सारथी-	श्री हीराभाई मंगलचंदजी चौधरी
वर्षीदान-	श्री मोतीचंदजी माणकचदजी पारस इन्द्र वेद
पोंखना-	श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी लोढा
लक्ष्मीजी को लेकर जाना-	श्री मोतीचंदजी माणकचंदजी पारस इन्द्र वेद
घोडे पर बैठना-	(1) श्री हीराभाई मंगलचंदजी चौधरी
	(2) श्री राजेन्द्रकुमार जी, निर्मल, दिनेश लुणावत
पालना-	श्री सुभाष भाई शाह
पालना झुलाना-	श्री नवीनचंद शाह
पोंखना-	श्री शिखरचंद जी अनिल कुमार कोचर
कुमकुम के छापे-	श्री राजकुमार जी अभयकुमार जी चौंरडिया
साथिया करना-	श्री उम्मेदमल जी विपिन्द्र कुमार जी बोहरा, पाली
माणक लड्डू चढाना-	श्री मोतीचदजी माणकचंदजी वेद
घी में दर्शन-	श्री उमरावमलजी पालेचा
शुकनारा स्थापित करना-	श्रीमती हंसाबेन वसंतभाई शाह
आरती-	श्री नवीनचंद शाह
मंगलदीपा-	श्रीमती कमला बेन सुभाषभाई शाह
अंजन घोटना-	श्री भेरूलालजी कुशलचंदजी प्रकाशचंदजी मुणोत
अंजन आंजना-	श्री नवीनचंद शाह
तोरण बाँधना-	श्री [illegible] कुमार जी पारख
प्रतिष्ठा की थाली बजाना-	श्री [illegible] जी जैन, [illegible]
[illegible] से पुष्प वर्षा-	श्री [illegible] हीराभाई चौधरी

[illegible]

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव मध्ये नाश्ता, सुबह एवं शाम की नवकारसी कराने वाले लाभार्थियों की शुभ नामावलि

दि. 17 2.2000

सुबह का नाश्ता- श्री नरेश कुमार-सुरबाला, दिनश कुमार-वरुणा, राकेश कुमार-विनीता, गोरव नेहा सुभापु तुषार-शिल्पी अकित रानूश्री पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि-श्री प्रकाशनारायणजी मोहनोत।

सुबह की नवकारसी- श्री सतोषकुमारजी मुकेश कुमार सदीप कुमार जिग्नेश कुमार पुत्र-पात्र-प्रपौत्रादि श्री धरमचन्दजी रिखबचन्दजी कोठारी, पालडी जोड-हाल मुबई

शाम की नवकारसी- श्री नरेश कुमार-सुरबाला, दिनश कुमार-वरुणा, राकेश कुमार-विनीता, गौरव नेहा सुभापु तुषार-शिल्पी अकित रानूश्री पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि-श्री प्रकाशनारायणजी मोहनोत।

दि. 18.2.2000

सुबह का नाश्ता- श्री घीसूलाल जी पारसमल सुपुत्र माणकचन्द हुकुमचन्द सुरेन्द्र कुमार मेहता पुत्र-पौत्र श्री मूलचन्दजी मोतीलाल जी पाली वाले

सुबह की नवकारसी- श्रीमती मदनबाई मातुश्री, श्री जगवन्तमलजी-सुशीला, राजीव-मीता, सजीव-रितु, रुची, राहुल, बिराज साड पुत्र-पौत्र-प्रपोत्र श्री जसवतमलजी साड, जयपुर

शाम की नवकारसी- श्रीमती पचमदेवी टूकलिया-मातुश्री। श्री ज्ञानचन्द-प्रेमलता, सत्येन्द्र-सुधा, रामचन्द्र-अजुला, मुकश पारस चचलकुमारी, राजकुमारी, अकित, निपी, मोहित, श्रेय पुत्र-पौत्र स्व श्री राजमलजी टूकलिया, बरखेडा

दि. 19.2.2000

सुबह का नाश्ता- श्रीमती शान्तादेवी सुशीला देवी प्रतिभा चचल उर्मिला झाडचूर, जयपुर

सुबह की नवकारसी- श्री कुशलराजजी-चादकवर, विमलकुमार-मीना, निर्मलकुमार-सरला, कमलकुमार-सुनीता सुनीलकुमार-रश्मी अमित अकित गौरव मृदुल सिघवी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि श्री मिश्रीमलजी सिघवी, जयपुर

शाम की नवकारसी- श्री कपिलभाई केशवलाल शाह परिवार, जयपुर

दि. 20.2.2000

सुबह का नाश्ता- मातुश्री बदामीबाई। बाबुलाल जी विमलकुमार फूटरमल, इन्दरचन्द, भरतकुमार, सजीवकुमार आनन्दकुमार राजेश चेतन पुत्र-पौत्र-प्रपात्रादि शाह वस्तीमलजी पुनमिया रानी वाले - हाल जयपुर

सुवह की नवकारसी- श्री मोतीलालजी-मनोहर देवी, गणेशमल-सजना, अनिल-शशी, सुनील-प्रमिला, संजय-मधु, अजय-अर्चना, कुणाल राहुल खुशवू वंभव मनीप सौरभ पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि-श्री किस्तूरमलजी भडकतिया, जयपुर ।

शाम की नवकारसी- श्रीमती गुणसुन्दरी वाई । श्री तेजवहादुर सिंहजी, चेतनआनन्द-मंजू, सुरेन्द्र कुमार-राजकुमार, श्री नरेन्द्र कुमार-ववित्ता, तरुण अंकित पुत्र-पौत्र-प्रपौत्रादि श्री कल्याणमलजी राजवहादुरसिंहजी भंडारी, जयपुर

दि. 21.2.2000

सुवह का नाश्ता- श्री खिमराजजी-सुन्दरवाई, विमल-मंजू, सुभाप-सुनीता, श्रीपाल-आशा, रुकमिनी, नेहा श्रेया नमन स्मित आदित । पुत्र-पौत्रादि श्री देवीचन्दजी पालरेचा शिवगंजवाले, जयपुर

सुवह की नवकारसी- श्री ज्ञानचन्दजी, सुभापचन्द-सुशीला देवी, संजय-शशी, अजय-आशा, शरद-सुनीता, आकाश श्रद्धा सावन अमन शिवानी छजलानी, जयपुर

शाम की नवकारसी- श्री तरसेम कुमारजी-पद्मा वहिन, राकेश कुमार-स्वीटी, कुमारपाल-राखी दिव्यांग शवांग संभवकुमार पारख-पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र-श्री वावूलालजी पारख

दि. 22.2.2000

सुवह का नाश्ता- श्री जयंतीलाल जी धनराजजी, सुरेश विक्रम कीर्ति विजय सुनील प्रतीक पुत्र-पौत्र श्री आगडमलजी हंराजी इन्दोनी ओस्तवाल, गढसिवाना, हाल-वैंगलोर

सुवह की नवकारसी- श्री मंगलचन्दजी, माणकचन्द, उत्तमचन्द, नरेश कुमार, गौतमचन्द, दिलीप कुमार, पंकज कुमार विकास विशाल संभव आशीष अंकित सौरभ गौरव पुत्र-पौत्र श्री लालचन्दजी आच्छा, गिलावारा-हाल वेंगलोर

शाम की नवकारसी- श्री विरदीचन्द प्रकाश चन्द दिलीप कुमार महेश कुमार अभिषेक रोनक पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री. गणेशमलजी आच्छा परिवार, गीलावारा-हाल वेंगलोर

दि. 23.2.2000

सुवह का नाश्ता- श्री सतीश कुमारजी रीटारानी ओसवाल, दिल्ली

सुवह की नवकारसी- [illegible] पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री [illegible]

शाम की नवकारसी- श्री [illegible]-मोहिनी [illegible] [illegible]

[illegible]

दि. 24.2.2000

फले चुदरी

श्री बोहरीलाल जी मानमलजी खिवसरा एव श्रीमती पवनवाई बोहरीलाल जी खिवसरा रानी निवासी श्री जुगराज जी, मीठालाल मागीलाल रिखबचद खिवसरा। श्रीमती भीकीवाई-मोहनराज बाफना, श्रीमती घीसीवाई-मेगराज कोठारी, श्रीमती ज्ञानीवाई-फतेहचद कोठारी, श्रीमती कान्ता-सुभाप खीमावत, श्रीमती मजू-विमल ओसवाल, श्रीमती जयवन्ती-रूपेश गिरीया, श्रीमती सतोप-सजय कटारिया, श्रीमती शर्मिला-राकेश गादिया एव मुकेश कोठारी।

दि. 25 2.2000

सुवह का नाश्ता- श्री उमरावमल जी-कमला देवी, हीराचन्द-किरण देवी, मिलाप चन्द-विमला देवी, अनिल कुमार-मीनू, सुनील, सजय-शीलू, अजय-पीनू, प्रकाश-किरण, एकता स्वेता अभिपेक हर्प बोनी डोली पालेचा पुत्र-पोत्र-प्रपोत्र श्री केसरी सिह जी पालेचा, जयपुर

सुवह शाम की नवकारसी-श्री पुष्प कुमारजी विनय कुमार अनिल कुमार अशोक कुमार, राकेश कुमार सुनील कुमार सुशील कुमार पूर्विक लोकेश तरुण मजू अशूल प्रभिक सिद्धार्थ पुत्र-पौत्र-प्रपोत्र श्री पूनमचन्दजी कन्हैयालाल जी बुरड़, जेसलमेर निवासी हाल-जयपुर-दिल्ली

पत्रिका मे श्री सघ की आज्ञा से जय जिनेन्द्र

श्री मोतीचन्द-मधुकुमारी, माणकचन्द-सरोजदेवी, पारसचन्द-मीनाक्षी, सजयकुमार-अजना, इन्दर-जूली, मनीष पलक अनुष्का दर्पण आकर्ष महक पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र श्री बुद्धसिहजी वैद, जयपुर।

प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख आकर्षण

विधिकारक- श्री भीखूभाई कटारिया, पूना, श्री धनरूपमलजी नागौरी, जयपुर श्री ज्ञानचन्दजी भडारी जयपुर

सगीतकारक- श्री शक्ति सोलकी, जालौर

सोमपुरा- श्री बाबुलाल एच बिरामी वाले

जिनालय निर्माण- श्री डायमण्ड मार्बल पैलेस, मकराना

लाइट एव स्टेज- श्री हेमराज सुथार, जालोर

भोजन- श्री डोवेश्वर केटर्स, बालाराई

टेन्ट डेकोरेशन- श्री पिंकीसिटी टेन्ट हाउस, जयपुर

सक्रिय सहयोगी- श्री आत्मानद जैन सेवक मण्डल, जयपुर श्री सुमति जिन श्राविका सघ, जयपुर श्री ज्ञानचदजी टुकलिया, बरखेडा

बैड- श्री विजयवल्लभ बेड, साडेराव

Auditor's Report

1 (FORM No. 10B)

(See rule 17 b)

AUDIT REPORT UNDER SECTION 12A(b) OF THE INCOME TAX ACT. 1961 IN THE CASE OF CHARITABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OF INSTITUTES.

We have examined the Balance Sheet of SHRI JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH. Ghee Walon Ka Rasta, Jaipur as at 31st March. 2000 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust or institutions.

We have obtained all the informations and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit. In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh, subject to the comments that immovable properties, Jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet and Income Expenditure are accounted for on receipt basis as usual.

In our oponion and to the best of our information and according to the information given to us, the said accounts subject to above give a true and fair view :

(1) In the case of the Balance Sheet of the State of Affairs of the above named trust/institution as at 31st March, 2000.

(2) In the case of the Income & Expenditure Account of the profit or loss of its accounting year ending on 31st March, 2000.

Place : Jaipur
Date : 18.8.2000

FOR CHATTER & CHATTER
CHARTERED ACCOUNTANTS
R.K. Chatter (8544)
Sd/-(R.K. CHATTER)
PARTNER

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

आय–व्यय खाता 1999–2000

गत वर्ष की रकम	व्यय		इस वर्ष की रकम
1 49 652 50	श्री मदिर जी खाते खर्च		1 82 808 25
	आवश्यक खर्च		
32 86 757 00	श्री बरखेडा मदिर खर्च		82 85 475 47
	मदिर खर्च	20 125 00	
	जीर्णोद्वार खर्च	66 69 868 47	
	मणीभद्र भवन निर्माण खर्च	6 03 868 00	
	साधारण खर्च	2 52 792 50	
	भाजन शाला खर्च	20 900 00	
	भाता	710 00	
	प्रतिष्ठा महात्सव	7 17 211 50	
45 460 50	श्री जनता कॉलोनी मदिर खर्च		47 724 00
	आवश्यक खर्च		
19 522 00	श्री चन्दलाई मदिर खर्च		9 232 00
	आवश्यक खर्च		

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

कर निर्धारण वर्ष 2000–2001

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
9,67,358.65	श्री मंदिर जी खाते		7,88,024.79
	भंडार भेट व गोलख	7,78,804.20	
	पूजन खाता	2,844.00	
	जोत खाता	1,330.00	
	ब्याज खाता	2,946.59	
	किराया खाता	2,100.00	
23,37,412.65	श्री बरखेड़ा मंदिर खाता		55,32,061.85
	भंडार भेट व गोलख खाता	4,97,810.85	
	पूजन खाता	2,093.50	
	जीर्णोद्धार खाता	31,87,823.00	
	साधारण खाता	3,78,505.50	
	मणीभद्र भवन खाता	5,01,000.00	
	भोजनशाला खाता	2,93,174.00	
	प्रतिष्ठा महोत्सव खाता	6,71,655.00	
1,16,050.80	श्री मणिभद्र भण्डार खाता		87,375.65
71,[illegible]7.15	श्री जनता कालोनी मंदिर खाता		28,632.45
	भंडार भेट व गोलख खाता		
24,[illegible]	श्री [illegible] मंदिर खाता		[illegible]
	[illegible]		

गत वर्ष की रकम	व्यय		इस वर्ष की रकम
3 86 545 50	श्री साधारण खर्च		3 89 781 75
	आवश्यक खर्च	3 09 438 75	
	साधार्मिक वात्सल्य	32 200 00	
	मणीभद्र प्रकाशन	48 143 00	
79 495 50	श्री वेय्यावच्च खाते खर्च		52 833 30
12 586 00	श्री साधर्मी सेवा कोष खाते खर्च		35 414 00
19 696 00	श्री जीवदया खाते खर्च		53 776 00
1 84 548 50	श्री भोजनशाला खाते खर्च		2 27 264 00
68 890 00	श्री आयम्बिल शाला खर्च		47 622 00
	आवश्यक खर्च		
35 822 00	श्री ज्ञान खाते खर्च		16 050 00
	आवश्यक खर्च	12 050 00	
	साधु साध्वी पढाई खर्च	4 000 00	
49 150 00	श्री विजयानन्द बिहार निर्माण खाते खर्च		17 88 929 00
4 46 190 15	शुद्ध बचत सामान्य कोष मे हस्तारित		—
47 84 315 65	योग		1 11 36 909 77

ह
(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष

ह
(मोतीलाल भडकतिया)
सघ मत्री

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
4,95,764.05	श्री साधारण खाते आमद		4,17,375.67
	भेट खाता	2,00,675.75	
	ब्याज खाता	82,985.66	
	किराया खाता	12,043.00	
	साधार्मिक वात्सल्य खाता	27,040 00	
	मणीभद्र प्रकाशन खाता	52,802.00	
	उपाश्रम निर्माण खाता	153.78	
	बहुमान खाता	41,000.00	
	सदस्यता आवेदन शुल्क	10.00	
	सदस्यता शुल्क	10 00	
	पारना ब्याज खाता	655 48	
5,232 50	श्री वैय्यावच्च खाता		2,063.50
22,051 00	श्री साधर्मी सेवा कोष खाता		23,623.00
41,057.30	श्री जीवदया खाता		91,090.75
1,79,929.50	श्री भोजनशाला खाता		2,28,911.75
1,04,117.90	श्री आयम्बिल शाला खाता		85,198.07
	भेंट खाता	10,531.25	
	फोटो खाता	3,333.00	
	ब्याज खाता	71,333 82	
1,21,603 20	श्री ज्ञान खाता		79,899 85
	भेंट खाता	50,498.30	
	ब्याज खाता	29,401.55	
3,31,000.00	श्री विजयानन्द विहार निर्माण खाता		19,42,767 00
8,052 30	श्री गुरूदेव खाता		6,628.45
8,603 10	श्री शासन देवी खाता		–
756.70	श्री सात क्षेत्र खाता		101.00
–	शुद्ध हानि सामान्य कोष में हस्तांतरित की गई		18,21,505 74
47,84,315 65	योग		1,11,36,909 77

वास्ते [illegible] (चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स)

ह.

(दान सिंह कारनावट)

[illegible]

ह. आर.के. [illegible]

पार्टनर

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

चिट्ठा

गत वर्ष की रकम	दायित्व		इस वर्ष की रकम
32 16 550 32	श्री सामान्य कोष		13 95 044 58
	गत वर्ष की रकम	32 16 550 32	
	घटाया इस वर्ष की हानी	18 21 505 74	
19 231 00	श्री ज्ञान स्थाई खाता		19 231 00
1 73 405 00	श्री आयम्बिल शाला स्थाई मिति		1 81 229 00
	गत वर्ष की रकम	1 73 405 00	
	इस वर्ष की रकम	7 824 00	
22 171 05	श्री श्राविका सघ खाता		22 171 05
41 581 00	श्री भोजनशाला स्थाई मिति		41 581 00
2 74 233 00	श्री साधर्मी सेवा कोष स्थाई खाता		2 74 233 00
1 860 00	श्री सम्वतसरी पारना खाता		1 860 00
3 840 00	श्री नवपद पारना खाता		3 840 00
51 000 00	श्री आयम्बिल शाला जीर्णोद्धार		51 000 00
—	श्री विभिन्न देन दारिया		7 57 730 00
	श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढी	7 50 000 00	
	श्री मिर्जा कादिर	1 000 00	
	मूतफरिक	6 730 00	
9 572 00	टी डी एस		—
38 13 443 37	योग		27 47 919 63

ह
(हीराभाई चौधरी)
अध्यक्ष

ह
(मोतीलाल भडकतिया)
सघ मत्री

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

31—3—2000 तक

गत वर्ष की रकम	स्वामित्व		इस वर्ष की रकम
6,75,216 45	श्री स्थाई सम्पत्ति खाता		6,75,216.45
29,50,451.42	श्री बैंको मे जमा		14,42,624 83
	(क) मियादी जमा		
	एस बी.बी जे	7,82,249.80	
	देना बैंक	5,61,546.00	
	(ख) चालू खाता		
	एस बी.बी.जे.	1,435.04	
	(ग) बचत खाता		
	दी बैंक ऑफ राजस्थान	3,834 77	
	बैंक ऑफ बडौदा	295.17	
	एस.बी.बी.जे.	93,264 05	
1,38,176 25	श्री विभिन्न लेनदारियां		5,73,159.00
	राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल	727 00	
	अग्रिम खाता	5,72,432.00	
49,599.25	श्री रोकड बाकी		56,919 35
	नोट्स ऑन अकाउन्ट्स सिड्यूल "ए"		
38,13,443,37	योग		27,47,919 63

ह.

(दान सिंह कन्नावट)

ह. आर.के. [illegible]

जयपुर में चातुर्मास वर्ष 2000 संवत् 2057 में अभी तक के ज्ञातव्य मासक्षमण की तपस्या की विशिष्ट तपस्विनियाँ

श्री महावीर साधना केन्द्र, जवाहर नगर मे विराजित महासती साध्वी श्री समताजी सुशिष्या साध्वी श्री मेना सुन्दरी जी म सा ।

श्रीमती सुशीला देवी नाहर
धप श्री सुरेशचद जी नाहर

श्रीमती सगीतादेवी भसाली
धप श्री राकेश कुमार जी भसाली

श्रीमती विद्यादेवी मुथा
धप श्री देवराजजी मुथा

श्रीमती उषादेवी सुराना
धप श्री गौतम चद जी सुराना

श्रीमती पवन कुमारी सुकलेचा
धप श्री विमलचद जी सुकलेचा

आप सभी को शत -शत वन्दन एवं अभिनन्दन

—सम्पादक मण्डल

विज्ञापन दाताओं के प्रति हार्दिक आभार

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (रजि.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

फोन : 563260/569494

"साधर्मिक भाई को भरपेट भोजन करा देना ही साधर्मिक वात्सल्य नहीं है, उसे अपने पैरों पर खड़ा करना, उसके सभी प्रकार के कष्टों को दूर करना ही सच्चा साधर्मिक वात्सल्य है।"

—आचार्य विजय वल्लभ सूरीश्वर

Shanti Lal Jain
Rohit Oswal
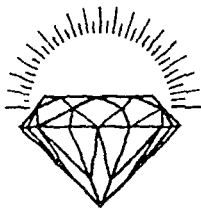
Resu Exports

**Importers, Exporters,
Commission Agent of Precious &
Semi-Precious Stones**

569-570, Thakur Pachawar Lane
Haldiyon Ka Rasta
Johari Bazar, Jaipur - 302 003
(INDIA)

Ph (O) 562440, 568073
(R) 563645

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

अध्यात्मयोगी पूज्यपाद आचार्य भगवन्त
श्रीमद् विजयकलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. की निश्रा में
श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर द्वारा
श्री सीमन्धर स्वामि जिन बिम्ब के निर्माण कर्त्ता
पं. बाबूलाल शर्मा मूर्तिकार (दौसा वाले)

जैन प्रतिमाये, पट्ट, परिकर, वेदी, सिंहासन, वस्ट, स्टेच्यू
एवं मूर्तियो के निर्माता एवं विक्रेता

बुद्धि मूर्ति कला

प्रो. राजेन्द्र कुमार बुद्धिप्रकाश शर्मा

13/147, स्वर्ण पथ, [illegible] मार्ग, मानसरोवर
जयपुर-302020 (राज.)
फोन : 391426 (नि.)
392606 पी.पी. (दु.)

पुराना पता :
[illegible]
[illegible]

With best compliments from :

Sunil Jain

ASSANAND LAXMI CHAND JAIN

All Kinds of

***Real & Imitation Stones, Pearls, Glass Beads &
Packing Jewellery Boxes etc.***

Manufacturers of

Fire Polishing Chatons, Tanjore Panting Stone,
Exclusive Marble Panting & Stone

163, Gopalji Ka Rasta, Johari Bazar
Jaipur-302 002 (Raj.)
Ph. : (S) 565929, (R) 565922
Mobile : 98290-15929